प्रेमबानी

(तृतीय भाग)

परम गुरु हुज़ूर महाराज

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186656
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H29A:554 H98P Accession No. H2934

Author हुजूर महाराज -

Title प्रेमबानी · तृ· भाग· 1960

This book should be returned on or before the date last marked below.

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

(तृतीय भाग)

परम गुरु हुज़ूर महाराज

— प्रकाशक —

राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़ (आगरा)

राधास्वामी संवत् १४३
सन् १९६० ई०

(*All Rights Reserved*)

B. Ga

First Edition 1938 1000
Second Edition 1960 1000

PRINTED BY BABU RAM JADOUN, M.A.
AT THE DAYALBAGH PRESS, DAYALBAGH, AGRA

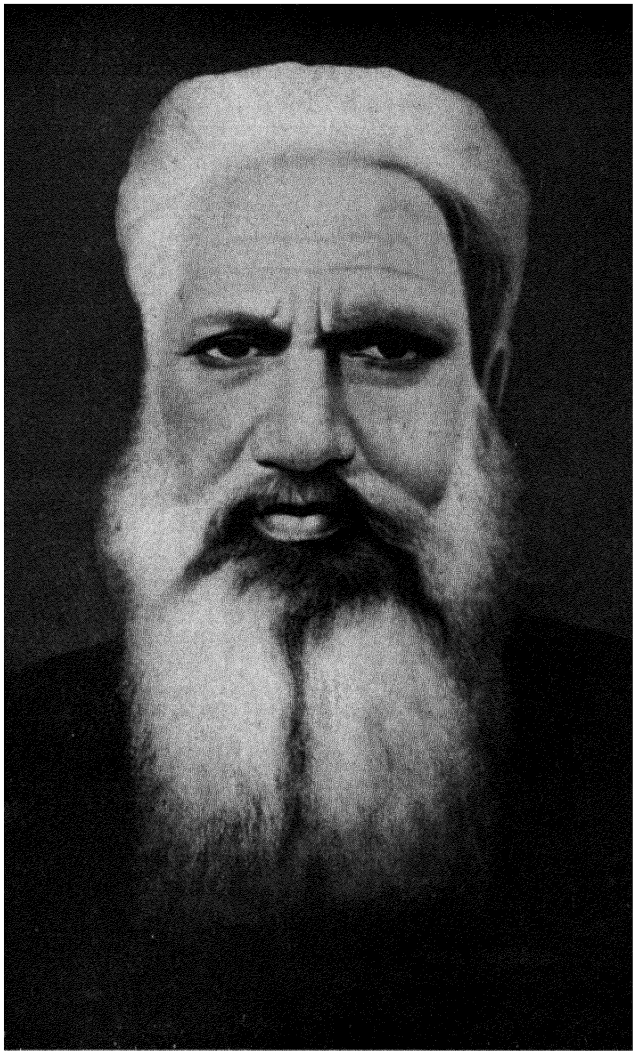

परम गुरु हुज़ूर महाराज

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

निवेदन

राधास्वामी मत के दूसरे पूज्य आचार्य परम गुरु हुज़ूर महाराज ने परम पुरुष पूरन धनी स्वामीजी महाराज के गुप्त होने पर सन् १८७८ ई० में सतसंग का कार्यभार सँभाला और ६ दिसम्बर सन् १८९८ ई० को गुप्त होने की मौज फ़रमाई। आपने प्रथम आचार्य परम पुरुष पूरन धनी स्वामीजी महाराज की जो अनन्य भक्ति की और उनके चरण कमलों का अपार प्रेम जो आपके हृदय में लहराया उसे आपने निहायत रसीले और मनोहर शब्दों में प्रकट किया था। यह अनमोल शब्द प्रेमबानी के रूप में प्रकाशित किए गए थे।

सतसंगी भाइयों के हृदय में इन शब्दों के लिए विशेष प्रेम व आदर है। इस कारण राधास्वामी सतसंग सभा ने सन् १९४९ में प्रेमबानी के प्रकाशित करने का प्रबंध किया और प्रेमबानी के चारों भाग प्रकाशित किए गए। प्रेमबानी के तीसरे भाग का दूसरा संस्करण अब प्रकाशित किया जाता है। आशा है प्रेमीजन इससे लाभ उठाएँगे।

दयालबाग़ (आगरा)
अगस्त २५, १९६० ई०

प्रकाशक—

राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

(तृतीय भाग)

सूचीपत्र

शब्द	पृष्ठ
अ	
अतोला तेरी कर न सके कोइ तोल	२
अमी की बरखा हुई भारी	३३६
अरी हे पड़ोसिन प्यारी कोई	१५८
अरी हे सहेली प्यारी क्या सोवे	१७५
अरी हे सहेली प्यारी क्यों न सुने	१७४
अरी हे सहेली प्यारी गुरु का	१६५
अरी हे सहेली प्यारी गुरु की	१६६
अरी हे सहेली प्यारी गुरु की सरन	१७०
अरी हे सहेली प्यारी गुरु बिन	१६२
अरी हे सहेली प्यारी गुरु सँग	१५५
अरी हे सहेली प्यारी घट में	१६३
अरी हे सहेली प्यारी चेत करो	१६४
अरी हे सहेली प्यारी जग है	१६७
अरी हे सहेली प्यारी जुड़ मिल	१५४
अरी हे सहेली प्यारी दूत	१६६
अरी हे सहैली प्यारी प्रीतम	१४७
अरी हे सहेली प्यारी प्रेम की	१६८
अरी हे सहेली प्यारी मन से क्यों	१७३
अरी हे सहेली प्यारी यह जग	१७१
अरी हे सहेली प्यारी हँगता	१७२
अरी हे सहेली प्यारी हिल मिल	१५६
अरी हे सुहागिन हेली तू	१६०
अरी हे सुहावन आली प्रीतम	१४८
अरे मन क्यों नहिं धारे गुरु ज्ञान	३७०
अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर	३७५
अहो मेरे प्यारे सतगुरु अचरज	१५१
अहो मेरे प्यारे सतगुरु अमृत	१५२
अहो मेरे प्यारे सतगुरु प्रेम दान	१५०
अहो हे दयाला सतगुरु मेरी	१४६
आ	
आओ रे जीव आओ आज	२२६
आज आई बहार बसंत	२८१
आज आया बसंत नवीन	२८७
आज गुरु आये जीव उबारन	२१६
आज गुरु खेलन आये होरी	३१२
आज मेरे आनँद बजत बधाई	२६०
आज मैं गुरु सँग खेलूँगी होरी	३०४
आज मैं पाई सरन गुरु पूरे	१६६
आज मैं पाया दरस गुरु प्यारे	२००
आज सँग सतगुरु खेलूँगी होरी	२६२
आज सखी गुरु सँग खेलो री	३१८
आज हुआ मन मगन मोर	२२१
आया मास असाढ़ बिरह के	३३०
उ	
उमँग मन गुरु चरनन में लाग	८
उमँग मन फूल रहा गुरु दरशन	२०६
उमर सारी बीत गई जग में	३५०
उलट पलट कर खेली होली	३०१
ऋ	
ऋतु बसंत आये सतगुरु जग में	२८३
ऋतु बसंत फूली जग माहीं मन	२८५
ऋतु बसंत फूली जग माहीं मिल	२८४

शब्द	पृष्ठ
ऐ	
ऐसी गहरी पिरेमन नार	३३७
ऐसी चौपड़ खेलो जग में	३६५
क	
कठोरा मनुआँ सुनै न बैन	२१२
करो री सुरत गुरु चरन अधारा	१६३
करो सतसंग सतगुरु का	४००
कस प्रीतम से जाय मिलूँ मैं	१७८
कामना जग की तज मन यार	५
काहे को डरपे मन नादान	३६१
काहे री चरन गुरु भूली री	१६३
कैसे उतरूँ पार भौसागर का	२०१
कैसे गहूँ री सरन गुरु बिन	१६२
कैसे गाऊँ गुरु महिमा अति अगम	१६०
कैसे चलूँ री अधर चढ़ सुन	१६१
कैसे मिलूँ री पिया से चढ़ गगन	१६१
क्या भूल रही जग माहिं	३३६
क्या सोय रही उठ जाग सखी	३०६
ख	
खेल ले सतगुरु सँग तू फाग	३११
खोजी जन सरस मन सुन सुन	२२६
खोजो री शब्द घर सुरत पियारी	१६४
ग	
गगन में बाजत आज बधाई	२७०
गुरु चरनन प्यार लाओ मन मेरे	२०२
गुरु दरशन बिन चैन न आवे मैं	२०६
गुरु धरा सीस पर हाथ मन क्यों	२७२
गुरु नैन रसीले निरखे	३५६
गुरु प्यारे करें आज जगत उद्धार	४५
गुरु प्यारे करें तेरी आज सहाय	५२
गुरु प्यारे करो अब मेहर बनाय	५१
गुरु प्यारे का कर दीदारा घट	८३
गुरु प्यारे का दरस निहारत	६४
गुरु प्यारे का देश अति ऊँचा	७३
गुरु प्यारे का धार भरोसा करें	८१

शब्द	पृष्ठ
गुरु प्यारे का पंथ निराला	७६
गुरु प्यारे का प्यारी सुन उपदेश	२५
गुरु प्यारे का महल सुहावन कस	७४
गुरु प्यारे का मारग झीना कोइ	७५
गुरु प्यारे का मुखड़ा झाँक रहूँ	२१
गुरु प्यारे का रँग अति निरमल	७२
गुरु प्यारे का रँग चटकीला	७१
गुरु प्यारे का ले तू नाम सम्हार	३५
गुरु प्यारे का शब्द सुनो धर प्यार	३५
गुरु प्यारे का संग अमोला सुख	६६
गुरु प्यारे का सँग कर जग से	३७
गुरु प्यारे का सँग करो हे मन	५६
गुरु प्यारे का सँग बड़भागी पाय	६५
गुरु प्यारे का सतसँग अमल	६४
गुरु प्यारे का सतसँग करो दिन	२७
गुरु प्यारे का सतसँग करो बनाय	६३
गुरु प्यारे का सुन्दर रूप निरखत	८७
गुरु प्यारे की अस्तुत गाओ री	३७
गुरु प्यारे की आरत करो बनाय	६२
गुरु प्यारे की कर परतीती होय	८०
गुरु प्यारे की चाल अनोखी जग से	६८
गुरु प्यारे की छबि पर बल बल	२०
गुरु प्यारे की छबि मनमोहन	७८
गुरु प्यारे की जुगत कमाओ	८२
गुरु प्यारे की दम दम शुकरगुज़ार	६०
गुरु प्यारे की निंदा मत कर यार	३०
गुरु प्यारे की प्यारी कर परतीत	२८
गुरु प्यारे की प्यारी मानो बात	२६
गुरु प्यारे की प्रीति प्यारी हिरदे	२६
गुरु प्यारे की बतियाँ सुनत रहूँ	२३
गुरु प्यारे की महिमा क्या कहूँ	२३
गुरु प्यारे की मानो बात सही	३६
गुरु प्यारे की मेहर कहूँ कस गाय	५६
गुरु प्यारे की मौज रहो तुम धार	६१
गुरु प्यारे की लीला देख नई	४२
गुरु प्यारे की लीला सार	८८

शब्द	पृष्ठ
गुरु प्यारे की सरन सम्हारो धर	६३
गुरु प्यारे की सरनी आवो धाय	२५
गुरु प्यारे की सरनी जो जन आय	२४
गुरु प्यारे की सेवा धारो तज मन	८६
गुरु प्यारे की सेबा लाग रहूँ	५५
गुरु प्यारे के चरनन मचल रही	६३
गुरु प्यारे के चरनों की होजा धूर	२६
गुरु प्यारे के दर्शन करत रहूँ	२२
गुरु प्यारे के नैन रँगीले मेरा मन	६७
गुरु प्यारे के नैना ताक रहूँ	२१
गुरु प्यारे के बचन अमृत की धार	३४
गुरु प्यारे के बचन अमोला	६२
गुरु प्यारे के बैन रसीले अमृत की	६६
गुरु प्यारे के सँग आनँद भारी	६६
गुरु प्यारे के सँग करूँ आज	४०
गुरु प्यारे के सँग चलो घर की	२७
गुरु प्यारे के सँग चलो महल	५३
गुरु प्यारे के सँग चलो हे मन यार	४६
गुरु प्यारे के सँग तू निज घर	५८
गुरु प्यारे के सँग प्यारी खेलो	५०
गुरु प्यारे के सँग प्यारी चलो	४३
गुरु प्यारे के सँग प्यारी सुरत	४४
गुरु प्यारे के सँग मन माँजो	४७
गुरु प्यारे के सतसँग में तू जाग	३६
गुरु प्यारे को प्यारी ले पहिचान	४६
गुरु प्यारे चरन का लाऊँ ध्यान	१७
गुरु प्यारे चरन पकड़े मज़बूत	१६
गुरु प्यारे चरन पर जाऊँ बलिहार	१३
गुरु प्यारे चरन पर सीस नवाय	५४
गुरु प्यारे चरन मनभावन	७७
गुरु प्यारे चरन में भाव लाओ	८५
गुरु प्यारे चरन मेरे प्रान अधार	१३
गुरु प्यारे चरन मोहिं लगे प्यारे	१४
गुरु प्यारे चरन रचना की जान	१७
गुरु प्यारे चरन से लिपट रहूँ	१२
गुरु प्यारे चरन हिये बस गए री	१४

शब्द	पृष्ठ
गुरु प्यारे दया करो आज नई	१५
गुरु प्यारे नज़र करो मेहर भरी	११
गुरु प्यारे ने दी मेरी सुरत जगाय	५०
गुरु प्यारे बचन सुन हो गई दीन	१८
गुरु प्यारे लगावें तुझको पार	५५
गुरु प्यारे सिखावें भक्ती रीत	४८
गुरु प्यारे सुनो इक अरज़ मेरी	१६
गुरु प्यारे सुनो फ़रियाद मेरी	१६
गुरु प्यारे से करना प्रीति ज़रूर	४५
गुरु प्यारे से खेलो फाग रचाय	५६
गुरु प्यारे से खेलो होली आय	५७
गुरु प्यारे से दिन दिन प्रीति	४०
गुरु प्यारे से प्यार बढ़ाना सुन घट	६१
गुरु प्यारे से प्यारी नाता जोड़	३१
गुरु प्यारे से प्यारी मत कर मान	३८
गुरु प्यारे से प्यारी मत कर रोष	३२
गुरु प्यारे से प्यारी लगन लगाय	३३
गुरु प्यारे से प्रीति बढ़ाओ तज	६०
गुरु प्यारे से प्रीति लगाना मन	८४
गुरु प्यारे से मत कर तू अभिमान	३३
गुरु प्यारे से माँगो भक्ती दान	३२
गुरु प्यारे से मिल घट कपट	५६
गुरु प्यारे से मिल तू मन मत त्याग	६०
गुरु प्यारे से मिलना उमँग उमंग	३०
गुरु प्यारे से मिल हुई आज	४३
गुरु प्यारे से रलियाँ कर लो आज	५२
गुरु प्यारे से ले घट पाट खुलाय	४१
गुरु बचन सम्हारो क्यों मन सँग	२५७
गुरु ले पहिचान काज करें तेरा	२०२
गुरु सँग प्रीति न कोई करे	३७३
गुरु सतसँम करो तन मन से	१७६
गुरू बिन घट का भेद न पाय	१०
गुरू सँग खेलन फाग चली	३१०

च

चंचल चित चपल मन नित जग	२२८
चरन गुरु ध्याओ री तज जग	२०८

शब्द	पृष्ठ
चरनन में चित्त लगाओ जग	२५३
चरन में बिनती करूँ बनाम	२७७
चरन में राधास्वामी करूँ पुकार	२७८
चल खेलिये सतगुरु से रँग होली	२५०
चल देखिये गुरु द्वारे जहाँ प्रेम	२४८
चल देखिये सतसँग में जहाँ	२४३
चल री सुत गुरु के देस धर	२३७
चलो आज गुरु दरबारा	२४५
चलो घट में दौरा करो री सखी	२४१
चलो घर गुरु सँग धर मन धीर	४
चलो घर प्यारे क्यों जग में नित्त	२५६
चलो प्रेम सभा से मिलो री सखी	२४०
चलो री सखी सुनो अगम सँदेसा	३४१
चलो सतगुरु घाट सखी री	२४७
चहुँ दिस धूम मची सतगुरु अब	१८४
चेतो चेतो सखी ऋतु आई बसंत	२८२
ज	
जगत बिच भूल पड़ी जीव कैसे	२०३
जग भाव तजो प्यारी मन से	२५१
जब से मैं देखा राधास्वामी का	१६७
जागी है उमँग मेरे हिये में	२१४
जीव उबारन जग में आए	२६५
जो जन राधास्वामी सरना पड़े	३६७
ठ	
ठुमक चढ़त सुरत अधर सुन सुन	२२०
त	
तड़पत रही बेहाल दरस बिन मन	३२६
तुम सोचो अपने मन में या जग	२५४
त्याग दे प्यारी जग ब्योहार	८
द	
दया के सिंध सतगुरु जीवन के	२६१
दया गुरु क्या करूँ बरनन	१
दरस देव प्यारे अब क्यों देर	२५५
दरस पाय मन बिगस रहा गुरु	२०८
दास हुआ चरनन में लौलीन	३५७
दिवाला पूजें जीव अजान	३२४
देख जग का ब्योहार असार	३४५
ध	
धुर धाम नियार लखे कोइ	२०१
न	
निज घट में खोज पिया को	२४२
निज रूप पूरे सतगुरू का प्रेम	३७७
निरखो निरखो सखी ऋतु आई	२८६
नौ द्वारन में सब कोइ बरते	२१६
प	
परम गुरु राधास्वामी प्यारे जगत	२१८
परम पुरुष प्यारे राधास्वामी धर	१८३
पूरन भक्ति देव गुरु दाता	३६२
प्यारी क्यों सोच करे प्यारे	२३६
प्यारी ज़रा कर बिचार यहाँ	२३४
प्यारे ग़फ़लत छोड़ो सर बसर	३६६
प्यारे लागें री मेरे दातार	१८५
प्रेम घटा घट छाय रही	३५२
प्रेम भक्ति गुरु धार हिये में आया	२६४
प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस	३००
प्रेम रंग ले खेलो री गुरु से	३२१
प्रेमी जन बिकल मन गुरु दरशन	२२५
प्रेमी सुत उमँग उमँग गुरु सनमुख	२२४
फ	
फागुन की ऋतु आई सखी आज	३०५
फागुन की ऋतु आई सखी मिल	२६३
ब	
बिकल जिया तरस रहा	२०४
बिनती करूँ चरन में आज	२७४
बिन सतगुरु की भक्ति जनम	३२७
बिमल चित जोड़ रही घट शब्द	२०३
बिरहन सुत तजत भोग गुरु	२२३
भ	
भक्ति कर लीजिये जग जीवन	२६८
भाग चलो जग से तुम अब के	१७६
भाव धर गुरु सन्मुख आई	७

शब्द	पृष्ठ
भूल भरम में जग अटकाना	३४४
भोग बासना मन में धरी	२६०
म	
मगन मन केल करत घट धुन	२०७
मगन हुआ मन गुरु भक्ती धार	७
मन इन्द्री आज घट में रोक	२३०
मन इन्द्री को घट में घेर गुरु	२३१
मन रे क्यों न धरे गुरु ध्याना	३६६
मन रे क्यों माने नाहिं जग सँग	२३५
मन रे चल गुरु के पास घर का	२३६
मन रे सतसँग गुरु का करो	३६७
मन हुआ मेरा गुरु चरनन में	१६८
मनुआँ क्यों सोचे नाहिं जग में	२३३
मनुआँ सिपाही चरनन लागा	३५४
मनुआँ हठीला कहन न माने	३३८
मूरख मनुआँ भोग न छोड़े	२१२
मेरा जिया न माने सजनी	३५३
मेरे धूम भई अति भारी दरस	१७७
मेरे लगी प्रेम की चोट बिकल	३५६
मेरे हिये में बजत बधाई संत	१७६
मैं गुरु प्यारे के चरनों की दासी	१६५
मैं तो आय पड़ी परदेस गैल	२०५
मैं तो होली खेलन को ठाड़ी	३०५
मैं पड़ी अपने गुरु प्यारे की	१६६
मैं सतगुर पै डालूँगी तन मन	४०२
मैं हुई सखी अपने प्यारे की	१६७
मोहि दरस देव गुरु प्यारे क्यों	२५१
य	
यह देश मुझे नहिं भावे	२५८
यह सतसंग और राधास्वामी	६८०
र	
रागी जन माया के पाले पड़े	३६८
राधास्वामी चरनन आओ रे मना	३६४
राधास्वामी छबि निरखत	१७७
राधास्वामी छबि मेरे हिये बस	१६८
राधास्वामी दयाल सुनो मेरी	२६६
राधास्वामी दाता दीनदयाला	२६२
राधास्वामी दीनदयाला मेरे	१८०
राधास्वामी दीनदयाला मोहि	२७६
राधास्वामी संग लगाई मोहि	१८१
राधास्वामी सतगुरु पूरे मैं आया	३५६
राधास्वामी सेव करत धर प्यारा	६७३
ल	
लागो रे चरन गुरु जीव अनाड़ी	१६४
स	
सखी चल फाग की देख बहार	३१०
सखी री ऐसी होली खेल	२६४
सखी री मैं निस दिन रहूँ	३२०
सतगुरु के मुख सेहरा चमकीला	२४३
सतगुरु प्यारे ने खिलाई अब के	१२६
सतगुरु प्यारे ने खिलाई घट	१२३
सतगुरु प्यारे ने खिलाया निज	१०५
सतगुरु प्यारे ने खुलाया घट प्रेम	१४२
सतगुरु प्यारे ने गिराया काल	११६
सतगुरु प्यारे ने चिताये जीव	१३६
सतगुरु प्यारे ने चुकाया काल	१३५
सतगुरु प्यारे ने छुड़ाई	११३
सतगुरु प्यारे ने छुड़ाया जग	१३७
सतगुरु प्यारे ने जगाया अचरज	१११
सतगुरु प्यारे ने जगाया सोता	१०२
सतगुरु प्यारे ने जनाया घट भेद	६८
सतगुरु प्यारे ने जिताई काल से	१०७
सतगुरु प्यारे ने दया कर मोहि	१०३
सतगुरु प्यारे ने दिखाई गगन	११७
सतगुरु प्यारे ने दिखाई घट	६६
सतगुरु प्यारे ने दिलाया शब्द में	११८
सतगुरु प्यारे ने दृढ़ाया निज	१०६
सतगुरु प्यारे ने नचाया मनुआँ	१२०
सतगुरु प्यारे ने निकारे मन के	१३२
सतगुरु प्यारे ने निभाई खेप	१२८
सतगुरु प्यारे ने पढ़ाई घट की	१४५
सतगुरु प्यारे ने पिलाया प्रेम	१०१

शब्द	पृष्ठ
सतगुरु प्यारे ने बजाई प्रेम	१३८
सतगुरु प्यारे बसाई उजड़ी	१२१
सतगुरु प्यारे ने बसाई हिये	१३१
सतगुरु प्यारे मचाई जग बिच	१२७
सतगुरु प्यारे ने मिटाया काल	११४
सतगुरु प्यारे ने मिलाया प्रीतम	१००
सतगुरु प्यारे ने मेहर से दिया	१३४
सतगुरु प्यारे ने मेहर से मेरा	१०४
सतगुरु प्यारे ने लखाया निज	१०८
सतगुरु प्यारे ने लखाया पिया	६६
सतगुरु प्यारे ने लगाई बिरह	११०
सतगुरु प्यारे ने लजाये माया	१२६
सतगुरु प्यारे ने सँवारी मेरी	१२४
सतगुरु प्यारे ने सिंगारी सुरत	१४३
सतगुरु प्यारे ने सिंचाई प्रेम	१२२
सतगुरु प्यारे ने सिखाई भक्ती	११२
सतगुरु प्यारे ने सुधारा मनुआँ	१२५
सतगुरु प्यारे ने सुनाई अचरज	११५
सतगुरु प्यारे ने सुनाई घट	६७
सतगुरु प्यारे ने सुनाई जुगत	१४०
सतगुरु प्यारे ने सुनाई प्रेमा बानी	१४६
सतगुरु ने हटाये बिघन अनेका	१३३
संत बचन हिरदे में धरना	३८१
सतसँग की क़दर न जानी	२५३
सरन गुरु धार री धर दृढ़ परतीत	२०६
सरन गुरु मोहि मिला भेवा	३४०
सावन मास मेघ घिर आये	३२२
सिंध से आई सूरत नार	३४८
सुन री सखी मेरे प्यारे	३१६
सुन सुन महिमा गुरु प्यारे की	१७८
सुनी मैं महिमा सतसँग सार	२१६
सुनो बीनती स्वामी महाराज	२७५
सुरत आज खेलत फाग नई	३०७
सुरत प्यारी खेलन आई फाग	३०८
सुरत रँगीली खेलत होरी	३०२
सुरत लगी गुरु चरनन चित जोड़	६
सुरत लाई आरत सरधा धार	५
सुरत सिरोमन फाग रचाया जग	३१६
सुरत सिरोमन फाग रचाया सब	३१४
सुरतिया सोग (बिरह) भरी	३
सोइ तो पिया की प्यारी	३१५
स्वामी प्यारे क्यों नहिं दरशन	२६८

ह

हंसनी क्यों न सुने गुरु बानी	३६६
हठीला मनुआँ माने न बात	२११
हमें घर जाने दे, मन क्यों तू	२५६
हे गुरु मैं तेरे दीदार	३७४
हे प्यारे मनुआँ नेक लगा दे	२१३
हे मेरे प्यारे सतगुरु तुम दाता	२७१
हे मेरे प्यारे सतगुरु मोहि	२७०
होली के दिन आये सखी उठ	२६६
होली खेलत सतगुरु नाल पिरेमी	३०३
होली खेलत सतगुरु संग पिरेमन	३०६
होली खेलत सुरत रँगीली गुरु	३१७
होली खेलन आये सतगुरु जग में	२६६
होली खेलन ऋतु आई सखी री	२६४
होली खेल न जाने बावरिया	२६८
होली खेलूँगी सतगुरु साथ	२८६
होली खेले सयानी गुरू के रंग	३१३

ज्ञ

ज्ञान तज भक्ती पंथ सम्हार	६

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी

तृतीय भाग

बचन बारहवाँ

प्रेम प्रकाश—भाग पहला

॥ शब्द १ ॥

दया गुरु क्या करूँ बरनन।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १ ॥
लगाया मोहि निज चरनन।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ २ ॥
दिखाया घट में एक गुलशन[1]।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
सुनी जहाँ शब्द धुन घन घन।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
वहाँ से आगे पग[2] धारन।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ५ ॥

१—फुलवारी। २—क़दम।

करत रही सुर्त गुरू दर्शन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ६ ॥
चरन पर वार रही[1] तन मन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ७ ॥
खेलती सुन में सँग हंसन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ८ ॥
भँवर होय सत्तपुर धावन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ९ ॥
परस[2] राधास्वामी हुई पावन[3] ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥१०॥

॥ शब्द २ ॥

अतोला[4] तेरी कर न सके कोइ तोल[5] ।टेक।
जिस पर मेहर मिले सतगुरू से ।
सतसँग में उन बनिया डौल[6] ॥ १ ॥
उमँग सहित लागे अब घट में ।
सुनत रहे नित अनहद बोल[7] ॥ २ ॥
सुन सुन धुन सुत चढ़त अधर में ।
कालकरम का छूटा हौल[8] ॥ ३ ॥

१—वार रही—निछावर कर रही । २—स्पर्श करके । ३—पवित्र । ४—जिसकी महिमा अंदाज़ न हो सके । ५—अंदाज़ । ६—बनिया डौल—काम बना । ७—शब्द । ८—डर ।

चढ़ चढ़ पहुँची सत्तलोक में।
दूर हुए सब माया ख़ोल[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दरस मेहर से मिलिया।
पाय गई पद अगम अडोल[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुरतिया सोग (बिरह) भरी।
रहे निस दिन चित्त उदास ॥ टेक ॥
प्रीतम प्यारे का बियोग[3] सतावे।
नहिं भावे[4] कुछ भोग बिलास ॥ १ ॥
बेकल तड़प उठत मन माहीं।
बढ़त अधिक दर्शन की प्यास ॥ २ ॥
गुरू प्यारे मेरे बसें अधर में।
मैं तो किया मृतलोक निवास ॥ ३ ॥
कैसे चढ़ूँ दरस कस[5] पाऊँ।
यहि मेरे मन में सोच और आस ॥ ४ ॥
बिन दर्शन मोहि कल न पड़त है।
रटत रहूँ पिया पिया हर स्वाँस ॥ ५ ॥
कैसि करूँ कौन जुगत कमाऊँ।
किस बिधि लखूँ[6] प्रीतम परकाश ॥ ६ ॥

१—गिलाफ़। २—अडिग। ३—जुदाई। ४—अच्छा लगे। ५—कैसे। ६—देखूँ।

कासे पूछूँ राह रकाना[१] ।
प्रीतम का कोइ मिले निज दास ॥ ७ ॥
मैं तो अजान भेद नहिं जानूँ ।
चहत रहूँ पिया चरनन बास ॥ ८ ॥
प्रीतम आपहि मरम जनावें ।
घट में दिखावें शब्द उजास[२] ॥ ९ ॥
मेहर करें सुत गगन चढ़ावें ।
पहुँचूँ शब्द गुरू के पास ॥१०॥
आगे सत्तलोक जाय परसूँ ।
सतगुरु चरन निज सुख की रास[३] ॥११॥
आगे चल पहुँचूँ धुर धामा ।
खेलूँ नित पिया राधास्वामी पास ॥१२॥

॥ शब्द ४ ॥

चलो घर गुरु सँग धर मन धीर ॥टेक॥
यह तो देश बिगाना जानो ।
सुद्ध करो निज घर की बीर[४] ॥ १ ॥
सतगुरु घट का भेद लखावें ।
मिल उनसे तू खोज शरीर ॥ २ ॥
मथ मथ शब्द लखो परकाशा ।
छान करो[५] तुम नीर और क्षीर[६] ॥ ३ ॥

१—राह रकाना—रास्ता । २—प्रकाश । ३—भंडार । ४—भाई ।
५—छान करो—छाँटो । ६— दूध ।

निरमल होय चढ़े सुत ऊँचे ।
निरखे सत पद गहिर[1] गँभीर ॥ ४ ॥
दया हुई सुत अधर सिधारी[2] ।
पहुँची राधास्वामी चरनन तीर[3] ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

कामना[4] जग की तज मन यार ॥टेक॥
जगत गुनावन[5] बिष कर जानो ।
ता में बहत सुरत की धार ॥ १ ॥
ज़हर हलाहल नित ही खावत ।
अमृत रस नहिं चाखत सार[6] ॥ २ ॥
गुरु सतसँग कर शब्द भेद ले ।
सुरत चढ़ाओ धुन की लार[7] ॥ ३ ॥
गगन जाय गुरु रूप निहारे ।
सुन में निरखे बिमल बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन बसाय हिये में ।
पहुँची सत्तपुरुष दरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सुरत लाई आरत सरधा धार ॥ टेक ॥
उमँग उमँग गुरु चरनन लागी ।
सतसँगियन में बाढ़ा प्यार ॥ १ ॥

१—गहरा । २—गई । ३-पास । ४-इच्छा । ५-ख्याल । ६-असली । ७-साथ ।

आरत सामाँ सजे बनाई ।
अनेक पदारथ धरे सम्हार ॥ २ ॥
प्रेमी जन मिल आरत गावें ।
घंटा संख धूम अति डार ॥ ३ ॥
गगन मँडल में बजी बधाई ।
हुए परसन्न अब गुरू दयार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया बिचारी ।
दिया मोहि निज चरन अधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सुरत लगी गुरु चरनन चित जोड़ ।टेक।
बचन सुनत जागा अनुरागा[1] ।
मन को लीना जग से मोड़ ॥ १ ॥
दर्शन कर हिये बढ़त उमंगा ।
रूप सुहावन हुआ चितचोर[2] ॥ २ ॥
गुरु चरनन में बासा चाहत ।
जग जीवन से नाता तोड़ ॥ ३ ॥
गुरु सेवा लागी अति प्यारी ।
प्रेम रंग भींजत सरबोर[3] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा ।
काल करम सिर दीना फोड़ ॥ ५ ॥

१—प्रेम । २—चित्त को आकर्षित करने वाला । ३—तर बतर, भरपूर ।

॥ शब्द ८ ॥

भाव धर गुरू सन्मुख आई ॥ टेक ॥
सुरत पियारी बँध रही तन में ।
बचन सुनत हिये उमँगाई ॥ १ ॥
जगत भाव और तन मन प्रीती ।
तोड़ फोड़ गुरू सरनाई[1] ॥ २ ॥
दर्शन पाय हरष रही मन में ।
गुरू छबि निरखत बल[2] जाई ॥ ३ ॥
उमँगा प्रेम हिये में भारी ।
गुरू चरनन में रही लिपटाई ॥ ४ ॥
मेहर करी गुरू लिया अपनाई ।
राधास्वामी गुन निस[3] दिन गाई ॥५॥

॥ शब्द ९ ॥

मगन हुआ मन गुरू भक्ती धार ॥टेक॥
जगत भोग से कर बैरागा ।
गुरू परशादी मिला अधार ॥ १ ॥
आसा मनसा जग की छोड़ी ।
गुरू चरनन में लागा प्यार ॥ २ ॥
गुरू बिश्वास धार अब चित में ।
करम धरम सब दिये निकार ॥ ३ ॥

१—सरन में आई । २—निछावर । ३—रात ।

चरन सरन गुरु दई मेहर से।
अपना कर लिया मोहि सुधार॥४॥
राधास्वामी चरन अब बसे हिये में।
नित्त रहूँ मैं चरन सम्हार॥५॥

॥ शब्द १० ॥

उमँग मन गुरु चरनन में लाग॥टेक॥
भोग रोग तज[1] चेत जगत से।
सतसँग में अब जाग॥१॥
सुरत समेट[2] लगो घट धुन में।
सुन ले अनहद राग॥२॥
प्रीति प्रतीति धरो गुरु चरनन।
सेवा करत बढ़ाओ भाग॥३॥
सुरत चढ़ाय चलो गगनापुर।
धोवो कल मल[3] दाग़[4]॥४॥
वहाँ से आगे चलो उमँग से।
राधास्वामी चरनन पाग[5]॥५॥

॥ शब्द ११ ॥

त्याग दे प्यारी जग ब्योहार॥टेक॥
बिरध[6] अवस्था आकर छाई।
अब ग़फ़लत तज हो हुशियार॥१॥

१—छोड़ कर। २—एकाग्र करके। ३—कल मल—काल के मैल के। ४—धब्बे। ५—लीन हो। ६—बुढ़ापे की।

सतसँग कर गुरु बचन सम्हारो ।
भेद लेव तुम सत करतार[1] ॥ २ ॥
घर चलने की जुगत कमाओ ।
गुरु चरनन में लाओ प्यार ॥ ३ ॥
बिरह अंग ले चालो घट में ।
मन के निकारो सबहि बिकार[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने ।
सहजहि उतरो भौजल पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

ज्ञान तज भक्ती पंथ[3] सम्हार ॥ टेक ॥
बाचक ज्ञान कुछ काम न आवे ।
मन में बढ़े थोथा अहंकार ॥ १ ॥
अंतर में कुछ असर न होवे ।
बाहर बातें करें लबार[4] ॥ २ ॥
नास्तिक[5] मत इनका तुम जानो ।
ख़बर न पाई कुल करतार ॥ ३ ॥
ब्रह्म मान अपने को बैठे ।
सच्चा मालिक दिया बिसार ॥ ४ ॥
मन इंद्री की गति नहिं जानी ।
भरम रहे वे माया लार[6] ॥ ५ ॥

१—कर्त्तार, कर्त्ता । २—दोष । ३—मार्ग । ४—झूठे । ५—ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास न करने वाले । ६—साथ ।

यह मत जाल बिछाया काला ।
विद्यावान घेर लिये झाड़[1] ॥ ६ ॥
इनका संग करो मत कोई ।
जो तुम चाहो अपना उद्धार ॥ ७ ॥
गुरू भक्ती हित चित से धारो ।
राधास्वामी सरन सम्हार ॥ ८ ॥
सुरत शब्द की जुगत कमाओ ।
तब होवे सच्चा निरवार[2] ॥ ९ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
सहज उतारें भौजल पार ॥ १० ॥

॥ शब्द १३ ॥

गुरू बिन घट का भेद न पाय ॥टेक॥
षट शास्तर[3] और वेद पुराना ।
पढ़ पढ़ बिरथा बैस[4] बिताय ॥ १ ॥
काल जाल से कभी न छूटे ।
माया हद्द के पार न जाय ॥ २ ॥
खटपट में नित रहे भरमाई ।
करम धरम सँग रहे फँसाय ॥ ३ ॥
निज घट का है भेद नियारा ।
बिन सतगुरु वह कौन सुनाय ॥ ४ ॥

१—सभी । २—छुटकारा । ३—शास्त्र । ४—उम्र ।

याते संत संग अब कीजे।
उनके चरन में प्रीति बढ़ाय ॥ ५ ॥
भेद लेव मारग का उनसे।
प्रेम सहित उन जुगत कमाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारो।
मेहर से दें वे काज बनाय ॥ ७ ॥

प्रेम प्रकाश-भाग दूसरा

॥ शब्द १ ॥

गुरू प्यारे नज़र करो मेहर भरी ॥टेक॥
मैं भई दासी तुम्हरे चरन की।
सब तज तुम्हरे द्वारे पड़ी ॥ १ ॥
तुम्हरे चरन की ओट[1] गही[2] अब।
काल करम से नाहिं डरी ॥ २ ॥
जब से तुम्हरी सरना लीनी।
माया ममता सकल जरी[3] ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़त गुरू चरनन।
जग से छिन छिन सहज तरी[4] ॥ ४ ॥

१—शरण। २—ली। ३—नाश हो गई। ४—पार गई।

शब्द भेद ले सुरत लगाऊँ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ ५ ॥
दरश दिखाय किया गुरु प्यारा।
तन मन तज हुई आज छड़ी[1] ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला।
अब मोपै पूरन दया करी ॥ ७ ॥

शब्द २ ॥

गुरु प्यारे चरन से लिपट रहूँ ॥टेक॥
दर्शन कर मन उमँगा भारी।
छिन छिन तन मन वार धरूँ ॥ १ ॥
रूप अनूपम[2] बसा हिये में।
मस्त हुई जग लाज तजूँ ॥ २ ॥
प्रीति लगी चरनों में भारी।
सब तज उनकी सरन पड़ूँ ॥ ३ ॥
क्या ले अब मैं गुरू रिझाऊँ[3]।
निस दिन यही मैं सोच करूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे रक्षक मेरे।
अब जम से मैं नाहिं डरूँ ॥ ५ ॥

१—न्यारी। २—अत्यंत सुन्दर। ३—प्रसन्न करूँ।

॥ शब्द ३ ॥

गुरू प्यारे चरन पर जाऊँ बलिहार।टेक।
दया करी मोहि खैंच बुलाया।
सतसँग बचन सुनाये सार ॥ १ ॥
अपने चरन की प्रीति घनेरी[1]।
(मेरे) हिये बसाई कर के प्यार॥ २ ॥
दया करी घट भेद सुनाया।
दिन दिन दई परतीत सम्हार ॥ ३ ॥
छबि अनूप लख[2] जब धरा ध्याना।
घट में निरखी बिमल बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल दया की न्यारी।
शब्द सुनाय उतारा पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

गुरू प्यारे चरन मेरे प्रान अधार॥टेक॥
क्या महिमा चरनन की गाऊँ।
जीव पकड़ उन उतरें पार ॥ १ ॥
मैं तो बसाय रही उन उर में।
प्रीति सहित करूँ ध्यान सम्हार ॥ २ ॥
ध्यान धरत हुआ घट परकाशा।
सुनत रही अनहद झनकार ॥ ३ ॥

१—बहुत। २—देख कर।

चरन सरन गुरु हियरे धारी ।
नित्त रहूँ गुरु दया निहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया चली अब घट में ।
सुन सुन धुन स्रुत हो गई सार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरु प्यारे चरन मोहि लगे प्यारे ॥टेक॥
जब से राधास्वामी सरना लीनी ।
छुट गये करम भरम सारे ॥ १ ॥
मन और सुरत प्रेम रस पागे[1] ।
जगत भोग तज हुए न्यारे ॥ २ ॥
आसा मनसा जग की त्यागी ।
सतगुरु चरन सीस धारे ॥ ३ ॥
सरन धार स्रुत अधर सिधारी[2] ।
तीन लोक के गई पारे ॥ ४ ॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ ।
कोटिन जीव लिये तारे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

गुरु प्यारे चरन हिये बस गए री ॥टेक॥
भाग जगे सतसँग में आई ।
बचन सार गुरु रस लिये री ॥ १ ॥

१—लीन । २—गई ।

मन और सुरत उमँग कर आए ।
धर प्रतीत गुरु चरन लए री ॥ २ ॥
प्रेम अंग ले चाली घट में ।
काल करम दोउ थक रहे री ॥ ३ ॥
माया ममता त्याग दई अब ।
मन इन्द्री के बिकार दहे[1] री ॥ ४ ॥
धुन रस पाय सुरत मगनानी ।
दृढ़ कर राधास्वामी चरन गहे[2] री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

गुरु प्यारे दया करो आज नई ॥टेक॥
मन और सुरत चढ़ाओ घट में ।
निज सरूप का दरस दई ॥ १ ॥
शब्द रूप तुम्हरा अगम अपारा ।
तिस से मिल आनंद लई ॥ २ ॥
नौ द्वारन में चैन न पाऊँ ।
अनेक प्रकार के कष्ट सही ॥ ३ ॥
जब सुत चढ़े अधर दस द्वारे ।
शब्द अमी रस चाख चखी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करो अब पूरी ।
मैं ग़रीब तुम सरन पई[3] ॥ ५ ॥

१—जला दिए । २—पकड़े । ३—पड़ी ।

॥ शब्द ८ ॥

गुरु प्यारे सुनो फ़रियाद मेरी ॥टेक॥
इस मन से मैं हार गई अब ।
बचन सुने नहिं चित धरी ॥ १ ॥
फिर फिर मोहि जग में भरमावत ।
भोग बासना नाहिं जरी ॥ २ ॥
मन को मारो इन्द्री जारो ।
आसा मनसा सकल हरी ॥ ३ ॥
करम काट निज घर पहुँचाओ ।
सुफल होय मेरी देह नरी[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी बिन कोइ नाहिं सहाई ।
उनके चरन लग आज तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

गुरु प्यारे चरन पकड़े मज़बूत ॥टेक॥
चरनन में नित प्रीति बढ़ाती ।
छोड़ दई जग की करतूत[2] ॥ १ ॥
शब्द जुगत ले जूझूँ घट में ।
सहज करूँ बस मन का भूत[3] ॥ २ ॥
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊँ ।
धुन से लागे मेरा सूत[4] ॥ ३ ॥

१—मनुष्य की । २—काररवाई । ३—शैतान । ४—संबंध ।

नभ को फोड़ गगन में धाऊँ[1] ।
सैर करूँ आलम लाहूत[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चाली ।
सतगुरु दरस मिला जाय हूत[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

गुरु प्यारे चरन रचना की जान ।टेक।
आदि धार चेतन जो निकसी ।
उसने रची सब रचना आन ॥ १ ॥
वही धार गुरु चरन पहिचानो ।
वही पिंड ब्रह्मंड समान[4] ॥ २ ॥
उसी धार का सकल[5] पसारा[6] ।
वोही धुन और नाम कहान ॥ ३ ॥
जुगती ले गुरु से सुत अपनी ।
उसी धार को पकड़ चढ़ान ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करें जब अपनी ।
निज सरूप घट में दरसान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

गुरु प्यारे चरन का लाऊँ ध्यान ।।टेक।।
मन और सुरत जमा हर द्वारे ।
धुन घंटा सुन अधर चढ़ान ॥ १ ॥

१—दौड़ कर जाऊँ। २—आलम लाहूत—त्रिकुटी। ३—सत्तलोक। ४—समाई हुई है। ५—सारा। ६—सृष्टि विस्तार।

त्रिकुटी धुन सुन गगन सिधारूँ ।
लाल रंग जहँ सूर दिखान ॥ २ ॥
सुन की धुन सुन चढ़ी सुत आगे ।
मानसरोवर किये अश्नान ॥ ३ ॥
गुरू सँग गई महासुन पारा ।
मुरली धुन सुनी गुफा ठिकान ॥ ४ ॥
सत्त शब्द धुन डोर पकड़ के ।
सतगुरु रूप करी पहिचान ॥ ५ ॥
अलख अगम धुन सुनती चाली ।
धाम अनामी निरखा[1] आन ॥ ६ ॥
शब्द धार चढ़ निज घर आई ।
राधास्वामी चरन समान ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु प्यारे बचन सुन हो गई दीन ॥टेक॥
जग ब्योहार असार[2] पहिचाना ।
मन इंद्री को ठगिया[3] चीन्ह ॥ १ ॥
गुरु सतसँग की महिमा जानी ।
चरनन में हुई दीन अधीन ॥ २ ॥
शब्द उपदेश निवारनहारा[4] ।
गुरु से लिया मन धार यक़ीन ॥ ३ ॥

१—देखा । २—निरर्थक । ३—धोखा देने वाले । ४—मोक्ष दिलाने वाला ।

नित अभ्यास करूँ मैं उमँग से ।
सुन सुन धुन अब मन हुआ लीन ॥४॥
राधास्वामी चरन पकड़ घर चाली ।
मेहर दया उन गहिरी कीन ॥५॥

॥ शब्द १३ ॥

गुरू प्यारे सुनो इक अरज़ मेरी ॥टेक॥
जब से दर्शन पायो तुम्हारा ।
चरनन में रहे सुरत अड़ी[1] ॥ १ ॥
मन भी मोह रहा दर्शन में ।
नैनन में छबि[2] रहे भरी ॥ २ ॥
पर बिन दर्शन शब्द सरूपा ।
मन और स्रुत नहिं शांति धरी ॥ ३ ॥
मेहर से देव अंतर दीदारा[3] ।
चिंता बिपता सकल हरी ॥ ४ ॥
तुम्हरी दया का वार न पारा[4] ।
अब क्यों एती[5] देर करी ॥ ५ ॥
हे दयाल मेरी अरज़ी मानो ।
मैं हठ कर अब चरन पड़ी ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्यारे परम उदारा[6] ।
गाऊँ तुम गुन घड़ी घड़ी ॥ ७ ॥

१—रहे अड़ी—टिकी रहे । २—शोभा । ३—दर्शन । ४—वार पारा—ओर छोर । ५—इतनी । ६—दयाल ।

॥ शब्द १४ ॥

गुरू प्यारे की छबि पर बल बल जाउँ ॥टेक॥
रूप अनूप[1] देख हरखानी ।
सोभा वा[2] की कस[3] कह गाउँ ॥ १ ॥
प्रीति धसी अब हिये अन्तर में ।
निस दिन रूपहि रूप धियाउँ ॥ २ ॥
तन मन से हुई गुरु की दासी ।
गुरू गुरू मैं गुरू मनाउँ ॥ ३ ॥
कौन सके गुरु महिमा गाई ।
कहत कहत मैं कहत लजाउँ ॥ ४ ॥
अचरज दरस दिखाया प्यारे ।
दया मेहर अब किसे जनाउँ ॥ ५ ॥
वाह वाह मेरे गुरू दयाला ।
चरनन में नई प्रीति जगाउँ ॥ ६ ॥
मैं तो निबल निकाम अजाना ।
यही हवस[4] मन माहि समाउँ ॥ ७ ॥
क्या सेवा कर गुरू रिझाऊँ[5] ।
भक्ति भाव क्या क्या दिखलाउँ ॥ ८ ॥
दया करो राधास्वामी गुरु प्यारे ।
मैं अब राधास्वामी राधास्वामी गाउँ ९

१—अनुपम । २—उस । ३—कैसे । ४—तेज इच्छा । ५—प्रसन्न करूँ ।

॥ शब्द १५ ॥

गुरु प्यारे के नैना ताक रहूँ ॥टेक॥
दृष्टि जोड़ गुरु नैन कँवल में।
सीतल होय धुन शब्द सुनूँ ॥ १ ॥
सुरत लगाय धसूँ[1] तिल द्वारे।
घट में दौरा करत रहूँ ॥ २ ॥
घंटा संख सुनूँ नभपुर में।
जोत रूप लख[2] गगन चढ़ूँ ॥ ३ ॥
गुरु सरूप का दर्शन करके।
सुन में हंसन संग मिलूँ ॥ ४ ॥
भँवरगुफा लख सतपुर धाऊँ।
अलख अगम के पार बसूँ ॥ ५ ॥
राधास्वामी प्यारे मेरा भाग जगाया।
सरन धार उन चरन पड़ूँ ॥ ६ ॥

॥शब्द १६ ॥

गुरु प्यारे का मुखड़ा झाँक रहूँ ॥टेक॥
अद्भुत छबि निरखत हुई मोहित।
हरख हरख दृष्टि तान रहूँ[3] ॥ १ ॥
लगन[4] लगी गाढ़ी[5] गुरु चरनन।
दर्शन रस ले मगन रहूँ ॥ २ ॥

१—प्रवेश करूँ। २—देख कर। ३—तान रहूँ—लगाए रहूँ। ४-प्रेम। ५-गहरी।

बचन सार गुरु सुने सतसँग में ।
अब तन मन की ब्याध[1] हरूँ[2] ॥ ३ ॥
शब्द संग नित सुरत लगाऊँ ।
घट में धुन झनकार सुनूँ ॥ ४ ॥
रूप सुहावन राधास्वामी प्यारे ।
ध्यान धरत घट माहि लखूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

गुरु प्यारे के दर्शन करत रहूँ ॥टेक॥
दर्शन कहो चाहे जीव अधारा ।
बिन दर्शन अति बिकल रहूँ ॥ १ ॥
दर्शन कर मोहि मिलत अनन्दा ।
बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ ॥ २ ॥
दर्शन कर दुख होवत दूरा ।
बिन दर्शन मैं दुखित रहूँ ॥ ३ ॥
दर्शन कर सुत मन घिर आवें[3] ।
बिन दर्शन मैं बिपत सहूँ ॥ ४ ॥
नित प्रति दर्शन देव राधास्वामी ।
बार बार तुम चरन पड़ूँ ॥ ५ ॥

१—तकलीफ़ । २—दूर करूँ । ३—घिर आवें—एकाग्र हो जावें ।

॥ शब्द १८ ॥

गुरू प्यारे की बतियाँ सुनत रहूँ ॥टेक॥
सुन सुन बतियाँ हुई मतवाली ।
चरन पकड़ अब लिपट रहूँ ॥ १ ॥
जग का भय और भाव बिसारा[1] ।
उमँग उमँग गुरु सेव करूँ ॥ २ ॥
गुरू सतसंगत लागी प्यारी ।
प्रेमी जन सँग मेल करूँ ॥ ३ ॥
शब्द जुगत गुरु दीन बताई ।
प्रीति लाय धुन गगन सुनूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब न्यारी ।
उनके चरन में सुरत भरूँ[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

गुरू प्यारे की महिमा क्या कहूँ गाय टेक
नित नई लीला बिमल बिलासा ।
देख देख मन अति हरखाय ॥ १ ॥
जग कारज की सुध[3] बिसरानी ।
रैन दिवस आनँद बरखाय ॥ २ ॥
दर्शन शोभा कस कहूँ गाई ।
मन और सूरत रहे लुभाय ॥ ३ ॥

१—भुल दिया । २—लगाऊँ । ३—याद ।

जान और प्रान वार देउँ[1] गुरु पर ।
जस मोपै मेहर उन करी बनाय ॥ ४ ॥
कुमत[2] हटाय सुमत अब दीन्ही ।
मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ५ ॥
माया के सब बिघन निकारे ।
काल करम भी दूर पराय[3] ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन अधार जिऊँ मैं ।
राधास्वामी रूप रहूँ नित ध्याय । ७ ।

॥ शब्द २० ॥

गुरु प्यारे की सरनी जो जन[4] आय ॥ टेक ॥
सतसँग में गुरु लेंहि लगाई ।
अमृत रूपी बचन सुनाय ॥ १ ॥
करम भरम की टेक छुड़ावें ।
सुरत शब्द मारग दरसाय ॥ २ ॥
उमँग जगाय करावें सेवा ।
मन और सूरत शब्द लगाय ॥ ३ ॥
जस[5] जस मेहर करें गुरु प्यारे ।
तस[6] तस सूरत अधर चढ़ाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करें फिर अपनी ।
इक दिन दें निज धाम लखाय ॥ ५ ॥

१—वार देउँ—निछावर कर दूँ । २—दुर्बुद्धि । ३— हो गये । ४—मनुष्य । ५—जैसे । ६—वैसे ही ।

॥ शब्द २१ ॥

गुरू प्यारे का प्यारी सुन उपदेश ।टेक।
निज घर का वे भेद सुनावें ।
तिरलोकी जानो परदेश ॥ १ ॥
शब्द संग तुम सुरत चढ़ाओ ।
छोड़ चलो यह माया देश ॥ २ ॥
तरुन[1] अवस्था मुफ़्त बिताई ।
सेत[2] हुए अब सारे केस[3] ॥ ३ ॥
अब चेतो गुरू बचन सम्हालो ।
सुफल होय तेरी सारी बैस[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन धर परतीती ।
हिये में धारो भक्ती भेस ॥ ५ ॥
तब कारज तेरा होवे पूरा ।
काल करम का छूटे लेश[5] ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम करे बिसरामा ।
जहाँ परम सुख नाहीं द्वेष ॥ ७ ॥

॥ शब्द २२ ॥

गुरू प्यारे की सरनी आवो धाय ॥टेक॥
तन मन सँग नित रहो बँधानी ।
फिर फिर जन्मो जग में आय ॥ १ ॥

१—तरुण, जवानी । २—सफ़ेद । ३—बाल । ४—उम्र । ५—संबंध ।

देह धार नित दुख सुख सहना ।
निकसन[1] की कोइ जुगत न पाय ॥२॥
याते प्यारी कहना मानो ।
सतगुरु से लो मेल मिलाय ॥ ३ ॥
सतसँग करो पड़ो उन चरनन ।
दिन दिन प्रीति प्रतीति बढ़ाय ॥ ४ ॥
सरन धार करो शब्द कमाई ।
राधास्वामी दें तेरा काज बनाय ॥५॥

॥ शब्द २३ ॥

गुरु प्यारे की प्यारी मानो बात ॥टेक॥
सतगुरु हैं हितकारी तेरे ।
और वोही हैं पित और मात ॥ १ ॥
दया मेहर से बचन सुनावें ।
उनका सतसँग कर दिन रात ॥ २ ॥
मन माया ने घेरा[2] डाला ।
जीव की करते बहु बिधि घात[3] ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु कोइ बचन न पावे ।
दृढ़ कर पकड़ो उनका हाथ ॥ ४ ॥
वे दयाल तोहि लेंहि सम्हारी ।
काल करम से टूटे नात[4] ॥ ५ ॥

१—निकलने, छूटने । २—चक्कर । ३—चोट । ४—संबंध ।

अपना बल दे भजन करावें ।
सुरत शब्द मारग दरसात ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम लखावें ।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ात ॥ ८ ॥

॥ शब्द २४ ॥

गुरु प्यारे के सँग चलो घर की ओर[1] ।टेक।
इस नगरी में सुख नहिं चैना ।
भाग चलो सब बंधन तोड़ ॥ १ ॥
जग जीवन की प्रीति है काची[2] ।
तू सतगुरु से नाता[3] जोड़ ॥ २ ॥
वोही हैं सच्चे हितकारी ।
वोही हैं तेरे बंदीछोड़[4] ॥ ३ ॥
घट में तुझ से करावें करनी ।
मन और सूरत धुन सँग मोड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से जाय भौ[5] पारा ।
काल करम का माथा[6] फोड़ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

गुरु प्यारे का सतसँग करो दिन रात ।टेक।
सुन सुन बचन मगन होय मन में ।
चरनन में नित प्रीति बढ़ात ॥ १ ॥

१—तरफ़। २—कच्ची, झूठी। ३—संबंध। ४—बंधन छुड़ाने वाले।
५—भौसागर। ६—सिर।

दरस अमी[1] रस पीवत प्यारी ।
तन मन की सब सुद्ध भुलात ॥ २ ॥
शब्द भेद ले चालत घट में ।
मधुर मधुर धुन शब्द सुनात ॥ ३ ॥
गुरु गुन गावत मन हुलसाना ।
जग भय भाव अब चित न समात ॥४॥
राधास्वामी मेहर से जागी सूरत ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ात ॥५॥

॥ शब्द १० ॥

गुरु प्यारे की प्यारी कर परतीत ।टेक।
भाव सहित सतसँग कर उनका ।
धार हिये में गहिरी प्रीत ॥ १ ॥
सुरत शब्द की जुगत बतावें ।
और सिखावें भक्ती रीत ॥ २ ॥
करम भरम से खूँट[2] छुड़ावें ।
और करें तेरा निरमल चीत[3] ॥ ३ ॥
जो तू गुरु के बचन सम्हारे ।
जावे निज घर भौजल जीत ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन पकड़ ले दृढ़ कर ।
वोही हैं तेरे सच्चे मीत[4] ॥ ५ ॥

१—अमृत । २—ताल्लुक़ । ३—चित्त । ४—मित्र ।

॥ शब्द २७ ॥

गुरु प्यारे की प्रीति प्यारी हिरदे धार।टेक
जगत मोह दुखदाई जानो।
मन से उसको तू तज डार ॥ १ ॥
कुटँब जगत की प्रीति न साँची।
स्वारथ सँग सब लगे लबार[1] ॥ २ ॥
निज घर की अब सुद्ध सम्हालो।
शब्द भेद ले गुरु से सार ॥ ३ ॥
प्रेम सहित उन जुगत कमाओ।
घट में सुन अनहद झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से पार लगावें।
उनके चरन का कर आधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

गुरु प्यारे के चरनों की हो जा धूर[2]।टेक।
दीन होय गुरु सन्मुख आवो।
जग परमारथ जानो कूड़[3] ॥ १ ॥
देवी देवा भाव बिसारो।
साखा[4] तज अब पकड़ो मूर[5] ॥ २ ॥
गुरु दयाल तोहि जुगत बतावें।
घट में सुनावें अनहद तूर[6] ॥ ३ ॥

१—झूठे। २—धूल। ३—व्यर्थ। ४—शाखा, डाल। ५—मूल, जड़। ६—शब्द।

प्रेम सहित जब जुगत कमावे ।
देखै नभ में अद्भुत नूर[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन गहो दृढ़ कर ।
मेहर करें तुझ पर भर पूर ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

गुरू प्यारे की निंदा मत कर यार ।टेक।
निंदा कर क्यों पाप बढ़ावे ।
बृथा उठावे करमन भार ॥ १ ॥
यह करतूत[2] न जावे ख़ाली ।
दुक्ख सहे तू बारम्बार ॥ २ ॥
जो कुल जीवन के हितकारी ।
तिन को औगुन धरे गँवार[3] ॥ ३ ॥
अंत समय तेरे वेही रक्षक ।
जस तस उन में लाओ प्यार ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर ले अब के ।
राधास्वामी लें फिर तोहि सम्हार ५

॥ शब्द ५ ॥

गुरू प्यारे से मिलना उमँग उमंग ।टेक।
चित दे सुनो गुरू के बचना ।
सीखो उनसे भक्ती ढंग ॥ १ ॥

१—प्रकाश । २—कारस्वाई । ३—मूर्ख ।

करम भरम सब दूर निकारो ।
छोड़ो सबही कुसंग ॥ २ ॥
सुरत लगाय सुनो घट धुन को ।
चढ़े प्रेम का रंग ॥ ३ ॥
गुरू बल ले चढ़ो गगन को ।
काल कर्म रहे दंग[1] ॥ ४ ॥
दीन हीन मोहि चीन्ह दया से ।
राधास्वामी मिलाया अपने अंग ।५

॥ शब्द ३१ ॥

गुरू प्यारे से प्यारी नाता[2] जोड़ ॥टेक॥
या जग में साँचा सुख नाहीं ।
काल करम का मच रहा[3] शोर ॥ १ ॥
मन इंद्री लागे भोगन में ।
काम क्रोध का भारी ज़ोर ॥ २ ॥
याते बेग[4] गिरो गुरू चरनन ।
सतसँग करो कपट को छोड़ ॥ ३ ॥
दीन होय ले शब्द उपदेशा ।
सुन ले घट में अनहद घोर[5] ॥ ४ ॥
दया होय तब चढ़े अधर में ।
राधास्वामी चरनन पावे ठौर[6] ॥ ५ ॥

१—परेशान । २—संबंध । ३—मच रहा—हो रहा । ४—जल्दी ।
५—शब्द । ६—जगह ।

॥ शब्द ३२ ॥

गुरू प्यारे से प्यारी मत कर रोस[1] ॥टेक॥
तू अनसमझ[2] चेत नहिं लावे ।
भोगन संग रहे बेहोश ॥ १ ॥
गुरू हर दम तेरी दया बिचारें ।
हँगता[3] ममता[4] लेवें खोस[5] ॥ २ ॥
मसलहत[6] उनकी तू नहिं समझे ।
उनको लगावे उलटा दोष ॥ ३ ॥
अबही चेत प्रीति करो उनसे ।
काम न आवे फिर अफ़सोस ॥ ४ ॥
धर परतीत सरन गहो दृढ़ कर ।
राधास्वामी करें तेरा सब बिधि पोष[7] ॥५॥

॥ शब्द ३३ ॥

गुरू प्यारे से माँगो भक्ती दान ।टेक।
दीन होय गिर गुरू चरनन में ।
करम भरम तज और अभिमान ॥१॥
सतसँग कर मानो गुरू बचना ।
घट में परखो शब्द निशान ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति धार हिये अंतर ।
सेवा करो उमँग से आन[8] ॥ ३ ॥

१—क्रोध । २—अजान । ३—अहंकार । ४—मोह । ५—लेवें खोस—दूर कर दें । ६—मौज । ७—रक्षा, सँभाल । ८—आकर ।

गुरु को परसन[1] करले प्यारी ।
तब घट धुन में सुरत लगान ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन प्रीति बढ़े छिन छिन ।
घट में बिमल बिलास[2] दिखान ॥५॥

॥ शब्द ३४ ॥

गुरु प्यारे से प्यारी लगन[3] लगाय ।टेक।
जग का मोह छुड़ावें दिन दिन ।
भोग बासना सहज हटाय ॥ १ ॥
बचन सुना तेरे भरम मिटावें ।
मन और सूरत देहैं जगाय ॥ २ ॥
घट में सहज करावें करनी ।
सुरत शब्द की जुगत[4] बताय ॥ ३ ॥
उमँग जगाय करावें सेवा ।
दिन दिन प्रीति प्रतीति बढ़ाय ॥ ४ ॥
इक दिन मेहर करें गुरु पूरी ।
राधास्वामी पद में दें पहुँचाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

गुरु प्यारे से मत कर तू अभिमान[5] ।टेक।
जो तू उनसे करे अहंकारा ।
मुफ़्त सहे भारी नुक़सान ॥ १ ॥

१—प्रसन्न । २—इष्ट अथवा प्रियतम के दर्शन तथा उसके साथ एक रस हो जाने पर होने वाला विशेष आनंद । ३—प्रेम । ४—विधि । ५—अहंकार ।

वे नित करते जीव उबारा ।
उनकी महिमा बेद न जान ॥ २ ॥
जो तू चाहे अपन उधारा ।
प्रीति करो उन चरनन आन[1] ॥३॥
बचन सुनो उपदेश सम्हारो ।
गुरु सरूप का लाओ ध्यान ॥४॥
शब्द शब्द धुन सुन सुन घट में ।
राधास्वामी की कर पहिचान ॥५॥

॥ शब्द ३६ ॥

गुरु प्यारे के बचन अमृत की धार ॥टेक॥
सुन सुन मैं तिरपत[2] हुई मन में ।
हियरे उमँगा अधिक पियार ॥ १ ॥
सतसँग करत भरम सब नासे[3] ।
और इष्ट सब दिये बिसार ॥ २ ॥
दिन दिन बढ़त प्रतीत चरन में ।
नित प्रति[4] दर्शन करूँ सम्हार ॥ ३ ॥
शब्द जुगत ले करूँ अभ्यासा ।
घट में सुनूँ अनहद झनकार[5] ॥४॥
ऐसा सतसँग मिला दया से ।
राधास्वामी गुन गाऊँ हर बार[6] ॥५॥

१—आकर । २ —तृप्त, संतुष्ट । ३—नष्ट हो गए । ४—नित प्रति—हर रोज़ । ५—धुन । ६—समय ।

॥ शब्द ३७ ॥

गुरू प्यारे का शब्द सुनो धर प्यार ।टेक।
जो जुगती गुरू देयँ बताई ।
उसका करो अभ्यास सम्हार ॥ १ ॥
शब्द गाज रहा[1] घट में हर दम ।
वाहि[2] सुनो हिये परतीत धार ॥२॥
इसी शब्द ने रची त्रिलोकी ।
यही शब्द करे जीव उबार ॥ ३ ॥
याते दृढ़ कर[3] पकड़ो धुन को ।
और जुगत सब देव बिसार[4] ॥ ४ ॥
शब्द शब्द को सुनो अधर चढ़ ।
मन माया से गहो किनार[5] ॥ ५ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में ।
पहुँचो इक दिन धुर दरबार ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

गुरू प्यारे का ले तू नाम सम्हार ॥टेक॥
राधास्वामी धाम का बाँध निशाना[6] ।
राधास्वामी नाम सुमिर हर बार ॥ १ ॥
यही नाम निज नाम पिछानो[7] ।
और नाम सब तज दो झाड़ ॥ २ ॥

१—गाज रहा—जोर से हो रहा है । २—उसको । ३—दृढ़ कर—मजबूती से । ४-भुला । ५—गहो किनार-अलग हो जाओ । ६—लक्ष्य । ७—पहचानो ।

इसी नाम का लेकर भेदा।
सुन सुन धुन घट में चढ़ यार[1] ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति धार अब मन में।
राधास्वामी नाम का कर आधार[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने।
सहज चलो भौसागर पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

गुरू प्यारे के सतसँग में तू जाग ॥टेक॥
दर्शन करो भाव[3]- से उनके।
बचन सुनो धर हिये अनुराग[4] ॥ १ ॥
जो तू गुरू के बचन सम्हारे।
जाग उठे तेरा सोता भाग ॥ २ ॥
मन इन्द्रिन का मुख अब मोड़ो।
बिषयन से तू कर बैराग[5] ॥ ३ ॥
तब सुर्त तेरी पकड़े धुन को।
घट में सुने तू अनहद राग[6] ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन पकड़ के।
जैसे बने तू जग से भाग ॥ ५ ॥

१—मित्र। २—अवलंब, सहारा। ३—श्रद्धा। ४—प्रेम। ५—कर बैराग—उदासीन हो जा। ६—शब्द।

॥ शब्द ४० ॥

गुरू प्यारे की अस्तुत[1] गाओ री ।टेक।
धर बिस्वास गुरू का प्यारी ।
चरन सरन में धाओ री ॥ १ ॥
जो कुछ दया करें गुरू प्यारे ।
चित से कभी न भुलाओ री ॥ २ ॥
भूल भरम को दूर निकारो ।
प्रेम चरन में लाओ री ॥ ३ ॥
नित्त भजन कर गुरू प्यारे का ।
धुन में सुरत लगाओ री ॥ ४ ॥
छिन छिन मेहर परख सतगुरू की ।
राधास्वामी चरन समाओ री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

गुरू प्यारे का सँग कर जग से भाग ॥टेक॥
जब लग मन अटका[2] रहे जग में ।
बढ़े न चित में बिमल[3] अनुराग ॥१॥
काम क्रोध मद[4] दूर बहावो ।
छोड़ देव संगत मन काग[5] ॥ २ ॥
निरमल चित होय कर सतसंगा ।
गुरू चरनन में लाओ राग[6] ॥ ३ ॥

१—स्तुति, महिमा । २—फँसा । ३—निर्मल । ४—अहंकार । ५—मन काग —कौए रूपी मन की । ६—प्रेम ।

शब्द संग तुम सुरत सँवारो[1] ।
उमँग उमँग घट धुन में लाग ॥ ४ ॥
प्रीति प्रतीति जगाय हिये[2] में ।
राधास्वामी सँग नित खेलो फाग ॥५॥

॥ शब्द ४२ ॥

गुरु प्यारे से प्यारी मत कर मान ।टेक।
सब को ख़्वार[3] करत अभिमाना ।
परमारथ की करता हान[4] ॥ १ ॥
जब लग साँचा दीन न होवे ।
दया मेहर नहिं लेवे आन ॥ २ ॥
दर्शन में कुछ रस नहिं पावे ।
बचन सुने नहिं देकर कान ॥ ३ ॥
याते प्यारी अब ही समझो ।
गुरु चरनन पड़ो तज अभिमान ॥४॥
तेरा काज उन्हीं से होगा ।
मत भटके तू अनेक ठिकान[5] ॥ ५ ॥
सेवा कर तन मन धन अरपो[6] ।
सरधा[7] लाय धरो उन ध्यान ॥ ६ ॥
संशय भरम बिसारो चित से ।
हित से[8] सूरत शब्द लगान ॥ ७ ॥

१—सुधारो । २—हृदय । ३—बरबाद । ४—नुक़सान । ५—जगहों में ।
६—अर्पण करो, भेंट कर दो । ७—श्रद्धा । ८—हित से—प्रेम के साथ ।

अपने जीव की दया बिचारो ।
नहिं भटको तुम चारो खान[1] ॥ ८ ॥
राधास्वामी तेरा काज बनावें ।
पहुँचावें तोहि अधर ठिकान ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

गुरू प्यारे की मानो बात सही ॥टेक॥
उनके बचन अनुभवी जानो ।
तू ग्रंथन में अटक रही ॥ १ ॥
बुधि चतुराई काम न आवे ।
दीन होय गुरू चरन गही ॥ २ ॥
करनी कर परखो उन कहनी ।
सार वस्तु तब हाथ लई ॥ ३ ॥
विद्यावान न पावें भेदा ।
करम भरम में भटक रही ॥ ४ ॥
प्रीति सहित करो शब्द कमाई ।
तब जागे परतीत नई ॥ ५ ॥
सेवा कर आरत[2] कर गुरू की ।
उमँग उमँग उन चरन पई ॥ ६ ॥

१—चारो खान—उत्पत्ति की चार क़िस्में अर्थात् अंडज, स्वेदज, जेरज, उद्भिज ।
२—थाल में जलता हुआ दीपक लेकर इष्टदेव के सन्मुख घुमाने की क्रिया को 'आरती' या 'आरत' कहते हैं । सतसंग में सतगुरु से दृष्टि जोड़ कर ध्यान करने के साधन के लिए और चित्त को सब ओर से हटा कर सतगुरु के चरणों में लगाने या उनसे प्रेम करने के लिए भी 'आरती' शब्द का प्रयोग करते हैं ।

राधास्वामी मेहर से लें अपनाई ।
निज चरनन की सरन दई ॥ २ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

गुरू प्यारे के सँग करूँ आज बिलास ।टेक।
नई नई सेवा धार उमँग से ।
घट में नित प्रति बढ़त हुलास ॥ १ ॥
उमँग उमँग कर आरत[1] धारूँ ।
देखूँ घट में अजब प्रकाश ॥ २ ॥
मेहर भरी दृष्टी गुरू डारी ।
पूरन हुई मेरे मन की आस ॥ ३ ॥
मन और सुरत सिमट[2] कर दोऊ ।
गगन ओर चढ़ते निस[3] बास[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल गुरू प्यारे के ।
चरन मिले निज सुख की रास[5] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

गुरू प्यारे से दिन दिन प्रीति बढ़ाय ।टेक।
लोक[6] लाज और जगत भाव में ।
और भोगन सँग रहा भुलाय ॥ १ ॥
साधारन[7] करे शब्द अभ्यासा ।
मन माया की परख न पाय ॥ २ ॥

१—देखिए नोट नं० २ पृष्ठ ३६ । २—एकाग्र होकर । ३—रात । ४—बासर, दिन । ५—भंडार । ६—संसार की । ७—मामूली तौर पर, रस्म के तौर पर ।

याते होय हुशियार जगत से।
गुरू चरनन में प्रीति जगाय ॥ ३ ॥
जस जस प्रीति बढ़े गुरू चरनन।
घट में पावे रस अधिकाय ॥ ४ ॥
मन माया का बंधन छूटे।
सुन सुन धुन स्रुत गगन चढ़ाय ॥ ५ ॥
जोत उजियार[1] लखे घट माहीं।
सूर चंद्र निरखत हरखाय ॥ ६ ॥
मुरली बीन सुनत हरखानी।
राधास्वामी के दर्शन पाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

गुरू प्यारे से ले घट पाट[2] खुलाय ॥टेक॥
सतसँग करो बचन उर[3] धारो।
दर्शन करो मन सुरत लगाय ॥ १ ॥
गुरू आज्ञा हित[4] चित से मानो।
जुगत कमाओ उमँग जगाय ॥ २ ॥
प्रीति लाओ गुरू चरनन पूरी।
सरन गहो परतीत पकाय[5] ॥ ३ ॥
घट में करो अभ्यास उमँग से।
शब्द संग नित सुरत लगाय ॥ ४ ॥

१—प्रकाश। २—परदा। ३—हृदय। ४—प्रेम। ५—पक्की करके।

राधास्वामी होय प्रसन्न मेहर से।
तिल पट[1] के दें पार चढ़ाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

गुरु प्यारे की लीला[2] देख नई ॥टेक॥
दीन होय जो सरनी आवे।
ताको गुरु अपनाय लई ॥ १ ॥
अगिनत जीव अस लिये हैं उबारी।
उन मेहर की महिमा कौन कही ॥२॥
मेहर दया जीवन पर भारी।
सहज सबन को तार दई[3] ॥ ३ ॥
कोई दिन सतसंग करा के।
शब्द का सहज उपदेश दई ॥ ४ ॥
जैसी बने तैसी करनी करावें।
काल करम से छुटाय लई ॥ ५ ॥
ऐसी दया कोई नहिं कीनी।
याते सब जिव कर्म बही ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल नई जुगत उपाई[4]।
सहज सुरत भी पार गई ॥ ७ ॥
मैं गुन उनके कैसे गाऊँ।
हार हार उन चरन पई[5] ॥ ८ ॥

१—परदे। २—कार्यशैली। ३—तार दई—पार कर दिया। ४—प्रकट की। ५—पड़ी।

॥ शब्द ४८ ॥

गुरु प्यारे से मिल हुई आज निहाल[1] ।टेक।
जब लग गुरु सतसँग नहिं पाया ।
फँसी रही माया के जाल ॥ १ ॥
मेहर हुई गुरु दर्शन पाया ।
छुटा काल करम जंजाल ॥ २ ॥
सुरत लगी घट में अब चढ़ने ।
निरखा अद्भुत जोत जमाल[2] ॥ ३ ॥
मस्त हुई सुत आगे चाली ।
त्रिकुटी में लखा[3] सूरज लाल ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया गई सतपुर में ।
दंग[4] रहे काल और महाकाल ॥ ५ ॥

॥शब्द ४९ ॥

गुरु प्यारे के सँग प्यारी चलो निज धाम[5] ।टेक
यह तो देश तुम्हारा नाहीं ।
नहिं पावे यहाँ तू आराम ॥ १ ॥
माया भारी जाल बिछाया ।
घेरे[6] जीव ख़ास और आम[7] ॥ २ ॥
बिन गुरु दया छुटे नहिं कोई ।
गुरु के चरन लो दृढ़ कर थाम[8] ॥ ३ ॥

१—सरशार, अत्यंत प्रसन्न । २—नूर । ३—देखा । ४—हैरान । ५—देश ।
७—फँसाए । ७—साधारण मनुष्य । ८—पकड़ ।

वे दयाल तोहि लेहैं उबारी ।
प्रीति सहित[1] जप गुरू का नाम ॥ ४ ॥
मन माया के बिघन हटा कर ।
तोहि लखावें शब्द मुक़ाम ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति जगा तेरे हिये में ।
धुन में सुरत लगावें ताम[2] ॥ ६ ॥
उनकी दया का करो भरोसा ।
राधास्वामी करें तेरा पूरन[3] काम ॥७॥

॥ शब्द ५० ॥

गुरू प्यारे के सँग प्यारी सुरत धुलाय ।टेक।
जनम जनम की भूली सूरत ।
भोगन सँग नित मैल भराय[4] ॥ १ ॥
काम क्रोध की कीचड़ सानी[5] ।
मन इन्द्री सँग रही लिपटाय ॥ २ ॥
बिन सतसंग मैल नहिं छूटे ।
याते सुनो बचन गुरू आय ॥ ३ ॥
शब्द संग माँजो[6] मन सूरत ।
और ध्यान गुरू रूप लगाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि से हेरें[7] ।
तब सुरत निरमल होय घर जाय ॥५॥

१—साथ । २—तमाम, पूरी तरह से । ३—पूरा । ४—मैल भराय—मैली होती है । ५—सनी हुई, लिपटी हुई । ६—साफ़ करो । ७—देखें ।

॥ शब्द ५१ ॥

गुरू प्यारे से करना प्रीति ज़रूर ॥टेक॥
बिन गुरु भक्ति कुमत नहिं छूटे।
बिन सतसंग न मन होय चूर[1] ॥ १ ॥
याते भक्तिहि भक्ति कमाओ।
गुरू चरनन की हो जा धूर ॥ २ ॥
दया करें गुरु दें उपदेशा।
घट में सुन फिर अनहद तूर[2] ॥ ३ ॥
काल करम को काढ़ निकारें।
गुरू बल मन होय घट में सूर[3] ॥ ४ ॥
मन और सुरत चढ़ें तब घट में।
राधास्वामी करें तेरा कारज पूर ॥५॥

॥ शब्द ५२ ॥

गुरू प्यारे करें आज जगत उद्धार ।टेक।
जीवन को अति दुखी देख कर।
उमँगी दया जाका वार न पार[4] ॥ १ ॥
नर सरूप धर जग में आये।
भेद सुनाया घर का सार[5] ॥ २ ॥
दीन होय जो चरनन लागे।
उन जीवन को लिया सम्हार ॥ ३ ॥

१—वश में। २—शब्द। ३—बहादुर। ४—वार पार—ओर छोर। ५—असली।

बाक़ी जीव जन्तु[1] पर जग में।
मेहर दृष्टि करी गुरू दयार ॥ ४ ॥
जस तस उनका काज बनाया।
अपनी दया से किरपा धार ॥ ५ ॥
कोई जीव ख़ाली नहिं छोड़ा।
सब पर मेहर की दृष्टी डार ॥ ६ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे।
जीव जन्तु सब लीन्हे तार[2] ॥ ७ ॥
कौन सके उन महिमा गाई।
शेष[3] महेष[4] रहे सब हार ॥ ८ ॥
दोउ कर[5] जोर करूँ मैं बिनती।
शुकर करूँ मैं बारम्बार ॥ ९ ॥
राधास्वामी सम समरथ नहिं कोई।
राधास्वामी करें अस दया अपार ॥१०॥
मैं बालक उन सरन अधीना।
चरन लगाया मोहि कर प्यार ॥११॥

॥ शब्द ५३ ॥

गुरू प्यारे को प्यारी ले पहिचान ॥टेक॥
वोही हैं तेरे साँचे मीता।
वही हैं चेतन पुरुष सुजान ॥ १ ॥

१—जीव जन्तु—पशु पक्षी, कीड़े मकोड़े। २—लीन्हे तार—उबार लिए।
३—शेष नाग जिनके हज़ार मुँह कहे जाते हैं। ४—शिव। ५—हाथ।

वही हैं बंद[1] छुड़ावनहारे[2] ।
वही सच्चे हितकारी जान ॥ २ ॥
बचन सुनो उन हिये धर प्यारा ।
आज्ञा उनकी चित से मान ॥ ३ ॥
अंतरमुख करो शब्द कमाई ।
गुरू सरूप का धारो ध्यान ॥ ४ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ाओ दिन दिन ।
गुरू प्रसन्नता लेवो आन ॥ ५ ॥
सहज सहज निरमल होय सूरत ।
शब्द शब्द सँग अधर चढ़ान ॥ ६ ॥
दया करें जब राधास्वामी ।
निज घर अपने जाय बसान ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

गुरू प्यारे के सँग मन माँजो[3] आय ॥टेक॥
माया संग भुलाना भारी ।
विषयन में रहा अधिक फँसाय ॥ १ ॥
करम धरम सँग हुआ बावरा[4] ।
देवी देवा रहा अटकाय ॥ २ ॥
जब लग सतसँग गुरू नहिं धारे ।
समझ बूझ निरमल नहिं पाय ॥ ३ ॥

१—बंधन । २—छुड़ाने वाले । ३—साफ़ करो । ४—पागल ।

याते चेत सुनो गुरू बचना ।
और अंतरमुख शब्द कमाय ॥ ४ ॥
तब मन निश्चल चित होय निरमल ।
भजन करत घट धुन रस पाय ॥ ५ ॥
गुरू बल चढ़े अधर में सूरत ।
मगन होय निज भाग सराय[१] ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा ।
सहज सहज सुत निज घर जाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

गुरू प्यारे सिखावें भक्ती रीत[२] ॥ टेक ॥
निरमल भक्ति रीत है झीनी[३] ।
कौन सिखावे बिन गुरू मीत[४] ॥ १ ॥
कुल मालिक का भेद सुना कर ।
चरन कँवल में लगावें प्रीत ॥ २ ॥
मालिक से मालिक को चाहे ।
यही है निरमल भक्ती रीत ॥ ३ ॥
और चाह सब दूर बहाओ ।
चरन गहो तज माया तीत[५] ॥ ४ ॥
गुरू सतगुरू मालिक को जानो ।
वही हैं संत और वे ही अतीत[६] ॥ ५ ॥

१—सराहे, प्रशंसा करे । २—ढंग । ३—सूक्ष्म । ४—मित्र । ५—कड़वी । ६—सब से परे ।

धर परतीत करो दृढ़ प्रीती ।
त्यागो जग की चाल अनीत[1] ॥ ६ ॥
शब्द संग मन सुरत चढ़ाओ ।
सतगुरू बल धर अपने चीत[2] ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर से निज घर जावो ।
काल करम और माया जीत ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

गुरू प्यारे के सँग चलो हे मन यार ॥टेक॥
निज घर की वह राह बतावें ।
सुरत शब्द की जुगती सार[3] ॥ १ ॥
राधास्वामी चरनन प्रीति बढ़ावें ।
घट में सुनावें धुन झनकार ॥ २ ॥
परचे[4] दे परतीत दृढ़ावें[5] ।
बचन सुना करें हिये सिंगार ॥ ३ ॥
मन के मैल बिकार[6] निकारें ।
भोग बासना काटें झाड़[7] ॥ ४ ॥
अस करनी कहो कौन करावे ।
बिन गुरू सतगुरू परम उदार[8] ॥ ५ ॥
निरमल होय सुरत चढ़े अधर में ।
मगन होय लख बिमल बहार ॥ ६ ॥

१—अनुचित, ग़लत । २—चित्त में । ३—उत्तम । ४—अंतरी अनुभव ।
५—पक्की करें । ६—दोष । ७—पूरी तरह, बिलकुल । ८—दयाल ।

परम बिलास[1] मिला निज घर में ।
राधास्वामी रूप निहार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

गुरु प्यारे ने दी मेरी सुरत जगाय ॥टेक॥
किरपा कर सतसँग में खेंचा ।
दया भरे मोहि बचन सुनाय ॥ १ ॥
ध्यान धरत मन रूप समाना ।
घट में रस पावत हरखाय ॥ २ ॥
निज घर का दिया भेद बताई ।
सुरत शब्द में दीन लगाय ॥ ३ ॥
सुन सुन धुन हिये होत अनंदा ।
उमँग सहित नित जुगत कमाय ॥४॥
राधास्वामी दया परख अंतर में ।
छिन छिन अपना भाग सराय[2] ॥५॥

॥ शब्द ५८ ॥

गुरु प्यारे के सँग प्यारी खेलो फाग ॥टेक॥
प्रेम रंग ले खेलो होली ।
आसा मनसा जग की त्याग ॥ १ ॥
मोह नींद में सब जग सोता ।
तू सतसँग में गुरु के जाग ॥ २ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३३ नोट नं० २। २—सराहती हूँ।

मन इंद्री और सुरत समेटो ।
उमँग उमँग गुरू चरनन लाग ॥ ३ ॥
मेहर दया से शब्द सुनावें ।
दिन दिन बढ़े घट में अनुराग[1] ॥४॥
राधास्वामी चरनन जाय समाई ।
जाग उठा मेरा अचरज भाग ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरू प्यारे करो अब मेहर बनाय ।टेक।
मैं तो अजान लिपट रही जग में ।
सतसँग बचन न चित ठहराय ॥ १ ॥
सुरत शब्द की जुगती भारी ।
सो भी मुझ से गई न कमाय ॥ २ ॥
मैं तो सब बिधि हीन[2] अधीनी ।
चरन सरन गही[3] तुम्हरी आय ॥ ३ ॥
जैसे बने मोहि लेव सुधारी ।
चरनन में लेव सुरत लगाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी ।
जस तस[4] देव मेरा काज बनाय ॥ ५ ॥

१—प्रेम । २—तुच्छ । ३—ली । ४—जस तस-जैसे तैसे, किसी न किसी तरह ।

॥ शब्द ६० ॥

गुरु प्यारे करें तेरी आज सहाय ॥टेक॥
क्यों घबरावे मन में प्यारी ।
गुरु परताप[1] रहा हिये छाय ॥ १ ॥
सब बिधि तेरा काज बनावें ।
तू उन चरनन प्रीति बढ़ाय ॥ २ ॥
संशय छोड़ करो विश्वासा ।
जैसी बने तैसी जुगत कमाय ॥ ३ ॥
सतसँग कर उन सेवा धारो ।
प्रेमी जन से मेल मिलाय ॥ ४ ॥
अपनी दया से राधास्वामी प्यारे ।
इक दिन देंगे घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

गुरु प्यारे से रलियाँ[2] कर लो आज ॥टेक॥
भाग जगे सतसँग में आई ।
भक्ति भाव का पाया साज[3] ॥ १ ॥
सुरत सम्हार करो अभ्यासा ।
शब्द रहा तेरे घट में गाज[4] ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति धार गुरु चरनन ।
आज बनाओ अपना काज ॥ ३ ॥

१—प्रताप, प्रभाव । २—केल, बिलास । ३—सामान । ४—रहा गाज—जोर से हो रहा है ।

मन इंद्री के भोग बिसारो।
छोड़ो जग का भय और लाज ॥ ४ ॥
गुरु की दया ले सुरत चढ़ाओ।
पिंड अंड से छिन छिन भाज[1] ॥ ५ ॥
सुन में जाय करो अश्नाना।
काल करम का छूटे बाज[2] ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चालो।
चार लोक चढ़ भोगो राज ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

गुरु प्यारे के सँग चलो महल अपने ॥टेक॥
कब लग मन सँग दुख सुख सहना।
छोड़ चलो यह जग सुपने[3] ॥ १ ॥
गुरु के संग बाँध जुग[4] चालो।
चरन कँवल में अब रचने[5] ॥ २ ॥
सतसँग कर सब भरम निकारो।
बिषय भोग दिन दिन तजने ॥ ३ ॥
गुरु का शब्द कमाओ हित से।
घर की ओर नित्त भजने ॥ ४ ॥
जोत निरख त्रिकुटी में धाओ।
काल करम से वहाँ बचने ॥ ५ ॥

१—भागो, अलहदा हो। २—बाझना, झंझट, बखेड़ा। ३—झूठे खयाल।
४—जोड़ा। बाँध जुग—यानी गहरा संबंध करके। ५—लीन होने के लिए।

चंद्र मँडल लख गई गुफा में ।
मुरली धुन जहाँ लगी बजने ॥ ६ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा ।
राधास्वामी चरन सुरत सजने ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

गुरु प्यारे चरन पर सीस नवाय ॥टेक॥
मद और मोह काम को तज कर ।
सतसँग गुरु का करो बनाय ॥ १ ॥
करम भरम और टेक पुरानी ।
मन से सब को देव भुलाय ॥ २ ॥
गुरु का ध्यान धरो तुम मन में ।
सुरत शब्द में नित्त लगाय ॥ ३ ॥
सेवा कर निज भाग जगाओ ।
दिन दिन प्रीति प्रतीत बढ़ाय ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु आरत[1] धारो ।
हिये में नई नई उमँग जगाय ॥ ५ ॥
दया मेहर ले चढ़ो अधर में ।
घट में धुन झनकार सुनाय ॥ ६ ॥
सतगुरु दरस पाय सतपुर में ।
राधास्वामी चरन समाय ॥ ७ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २ ।

॥ शब्द ६४ ॥

गुरू प्यारे लगावें तुझ को पार ॥टेक॥
कर विश्वास गुरू का प्यारे ।
उनकी गत मत[1] अगम अपार॥ १ ॥
सतसँग कर सेवा कर उनकी ।
जुगत कमाओ धर कर प्यार ॥ २ ॥
जगत जीव स्वारथ के मीता[2] ।
मन से इनका सँग तज डार ॥ ३ ॥
सुरत लगाओ शब्द अधर में ।
सुन सुन धुन जग से होय न्यार ॥४॥
राधास्वामी तेरा काज बनावें ।
चरन सरन उन हिरदे धार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६५ ॥

गुरू प्यारे की सेवा लाग रहूँ ॥टेक॥
अचरज सतसँग मिला भाग से ।
प्रीति सहित गुरु बचन सुनूँ ॥ १ ॥
भेद पाय गुरु जुगत कमाऊँ ।
घट में नित धुन शब्द गुनूँ[3] ॥ २ ॥
सतगुरु सेवा दुरलभ कहिये ।
उमँग उमँग मैं सेव करूँ ॥ ३ ॥

१—गत मत—लीला, सामर्थ्य। २—मित्र। ३—जाँच कर ग्रहण करती हूँ।

ध्यान धरत घट हुआ उजियारा ।
शब्द डोर गह गगन चढ़ूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मेहर मैं पाई ।
चरन सरन गह शांति धरूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

गुरू प्यारे की मेहर कहूँ कस गाय ॥टेक॥
जगत संग मैं रही अजानी ।
चरनन में लिया आप बुलाय ॥ १ ॥
दया भरे मोहि बचन सुनाये ।
मोह जाल से लिया छुड़ाय ॥ २ ॥
परमारथ की क़दर जनाई ।
धुन सँग सूरत दीन लगाय ॥ ३ ॥
प्रेम धार घट भीतर उमँगी ।
अमृत रस पी रहूँ तृप्ताय[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दाता गुरू दयाला ।
मुझ सी अधम[2] को दिया पार लगाय ५

॥ शब्द ६७ ॥

गुरू प्यारे से खेलो फाग रचाय[3] ॥टेक॥
नर देह अजब मिली किरपा से ।
हित[4] से भक्ती पंथ[5] कमाय ॥ १ ॥

१—रहूँ तृप्ताय—संतुष्ट रहूँ । २—नीच । ३—खेलो फाग रचाय—मनुष्य शरीर का प्रयोग सँभाल कर करो । ४—प्रेम । ५—मार्ग ।

यह औसर[1] फागुन[2] ऋतु जानो ।
जीव का अपने काज बनाय ॥ २ ॥
प्रीति धार करो संग गुरू का ।
सेवा कर नई उमँग बढ़ाय ॥ ३ ॥
या बिधि होली खेलो गुरू से ।
प्रेम रंग घट माहिं भराय ॥ ४ ॥
ध्यान धरो घट धुन को साधो ।
मन और सूरत गगन चढ़ाय ॥ ५ ॥
तन मन धन की धूल उड़ा कर ।
शब्द गुरू से भेंटो जाय ॥ ६ ॥
बिरह अनुराग नवीन जगा कर ।
राधास्वामी प्रीतम लेव रिझाय ॥७॥

॥ शब्द ६८ ॥

गुरु प्यारे से होली खेलो आय ॥टेक॥
ऐसा फाग[3] रचो मन मेरे ।
धरन गगन में धूम मचाय ॥ १ ॥
सखी सहेली सँग ले अपने ।
प्रेम रंग की बरखा लाय ॥ २ ॥
शब्द शोर होवत घट माहीं ।
राग रागिनी नई बिधि[4] गाय ॥ ३ ॥

१—मौक़ा, मनुष्य जन्म । २—जिस तरह महीनों में फागुन उत्तम होता है वैसे ही सृष्टि में मनुष्य शरीर उत्तम है । ३—मनुष्य शरीर का इस्तेमाल । ४—तरह ।

मन और सुरत उमँग कर चढ़ते ।
शब्द धुनन सँग केल[1] कराय ॥ ४ ॥
भक्ति दान फगुआ[2] लिया गुरू से ।
उमँग उमँग राधास्वामी गुन गाय ॥५॥

॥ शब्द ६८ ॥

गुरू प्यारे के सँग तू निज घर जाव ।टेक।
नर देह पाई सतगुरू भेंटे ।
अब के पड़ा प्यारी तेरा दाव[3] ॥ १ ॥
काल देस में दुक्ख घनेरा[4] ।
इसको तज ऊपर चढ़ जाव ॥ २ ॥
अधर देस प्रीतम का डेरा[5] ।
उनके चरन में लाओ भाव[6] ॥ ३ ॥
वा घर की गुरू गैल[7] बतावें ।
मन और सूरत शब्द लगाव ॥ ४ ॥
धर परतीत कमावो जुगती ।
गुरू बल सूरत अधर चढ़ाव ॥ ५ ॥
शब्द गुरू के चरन परस के ।
सत्तपुरुष का दरशन पाव ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चालो ।
धाम अनामी जाय समाव ॥ ७ ॥

१—क्रीड़ा । २—होली खेलने का इनाम । ३—मौक़ा । ४—बहुत । ५—निवास । ६—विश्वास । ७—रास्ता ।

॥ शब्द ७० ॥

गुरू प्यारे का सँग करो हे मन मीत[1] ।टेक।
कुमत छोड़ गुरू संगत धारो ।
बचन सुनो उन देकर चीत ॥ १ ॥
दया करें गुरू संग लगावें ।
नित्त बढ़ावें तेरी प्रीत ॥ २ ॥
धुन रस घट में तोहि पिलावें ।
चरनन में देवें परतीत ॥ ३ ॥
मन माया से पीछा छूटे ।
धारे निरमल भक्ती रीत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से लें अपनाई ।
निज घर जाय काल को जीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

गुरू प्यारे से मिल घट कपट हटाय ॥टेक॥
जब लग मन में दुचिता[2] रहती ।
परमारथ की बूझ[3] न पाय ॥ १ ॥
दुबिधा[4] छोड़ करो सतसंगा ।
बचन सार रस पियो अघाय[5] ॥ २ ॥
शब्द भेद जो गुरू बतावें ।
धार हिये करो भजन बनाय ॥ ३ ॥

१—मित्र । २—दुबिधा, अस्थिरता । ३—समझ । ४—अनिश्चित भाव, कभी कुछ कभी कुछ । ५—भरपूर, तृप्त होकर ।

बिमल प्रकाश लखो घट अंतर ।
नइ नइ धुन झनकार सुनाय ॥ ४ ॥
लीला देख अजब मन माना ।
राधास्वामी सरन पड़ाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७२ ॥

गुरु प्यारे से मिल तू मन मत[1] त्याग ।टेक।
भक्ति दान माँगो सतगुरु से ।
दीन होय गुरु चरनन लाग ॥ १ ॥
मेहर करें गुरु देहैं जगाई ।
जुगन जुगन का सोया भाग ॥ २ ॥
उमँग जगाय करावें सतसँग ।
घट में सुनावें अनहद राग[2] ॥ ३ ॥
अपना बल दे सुरत चढ़ावें ।
सहज छुड़ावें कलमल[3] दाग़[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से कीन्ही न्यारी ।
सुरत रही सुन धुन में पाग[5] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

गुरु प्यारे की दम दम शुक़रगुज़ार ॥टेक॥
दया करी मोहि संग लगाया ।
भेद दिया मोहि घट का सार ॥ १ ॥

१—मन की समझ बूझ । २—शब्द । ३—काल के मैल के । ४—धब्बे । ५—लीन ।

सुमत[1] सिखाय छुड़ाई मनमत[2] ।
जगत बासना दई निकार ॥ २ ॥
मन माया के बंधन काटे ।
करम धरम का कूड़ा टार[3] ॥ ३ ॥
निज चरनन में प्रीति बढ़ाई ।
और दई परतीत सम्हार ॥ ४ ॥
शब्द संग सुत अधर चढ़ा कर ।
पहुँचाया राधास्वामी दरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७४ ॥

गुरू प्यारे की मौज रहो तुम धार ॥टेक॥
वे हर दम तेरी दया बिचारें ।
निस दिन रक्षा करें सम्हार ॥ १ ॥
हँगता[4] ममता[5] भूल और भरमा ।
मन के निकारें सबहि बिकार[6] ॥ २ ॥
जिस में तेरी होय भलाई ।
स्वारथ और परमारथ सार ॥ ३ ॥
वैसी ही करें मौज दया से ।
दोऊ में हित[7] मानो यार ॥ ४ ॥
चाहे मन माने या नाहीं ।
मौज गुरू की दया निहार ॥ ५ ॥

१—अच्छी समझ। २—मन की समझ बूझ। ३—हटा कर। ४—अहंकार। ५—मोह। ६—दोष। ७—भलाई।

जिस बिधि राखें वहि बिधि रहना।
शुकर की रखना समझ बिचार ॥ ६॥
ऐसी समझ धार रहे मन में।
सो निरखे[1] गुरु मेहर अपार ॥ ७॥
राधास्वामी समरथ और न कोई।
चरन पकड़ धर प्रेम पियार ॥ ८॥

॥ शब्द ७५ ॥

गुरु प्यारे की आरत[2] करो बनाय ॥टेक॥
मन इन्द्री घट माहि समेटो।
दृष्टि जोड़ सुत चरन लगाय ॥ १॥
धुन की होत जहाँ झनकारी।
और बिमल परकाश दिखाय॥ २॥
दिन दिन बढ़त प्रीति चरनन में।
उमँग उमँग गुरु जुगत कमाय ॥ ३॥
रस पावत घट में नित चालत।
सुन सुन धुन मन अति हरखाय ॥४॥
मेहर करी गुरु अधर चढ़ाया।
नभ में जोत रूप दरसाय ॥ ५॥
त्रिकुटी जाय गुरु शब्द समानी।
तिस[3] परे मुरली बीन सुनाय॥ ६॥

१—देखे। २—देखिए पृष्ट ३६ नोट नं० २। ३—उसके।

काल करम दोउ थक रहे मग[1] में ।
माया भी सिर धुनत लजाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया करी अब न्यारी ।
निज घर मुझको दिया पहुँचाय ।८।

॥ शब्द ७६ ॥

गुरु प्यारे का सतसँग करो बनाय ।टेक।
सहज सहज निरमल हुआ मनुआँ ।
दरशन कर हिये कँवल खिलाय ॥१॥
प्रीति धसी[2] घट में चरनन की ।
उमँग उमँग गुरु रूप धियाय ॥ २ ॥
सुन सुन बचन बढ़ा अनुरागा ।
भेद पाय सुत शब्द लगाय ॥ ३ ॥
साँचा नाम मिला निज घट में ।
दुरमत मन की गई नसाय[3] ॥ ४ ॥
मगन हुई देख हंस बिलासा ।
राधास्वामी २ चहुँ दिस गाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७७ ॥

गुरु प्यारे के चरनन मचल रही[4] ।टेक।
भोली बाली प्यारी सुरतिया ।
घट में दरशन माँग रही ॥ १ ॥

१—रास्ते । २—प्रवेश कर गई । ३—गई नसाय—नष्ट हो गई । ४—मचल रही—प्रेम पूर्वक आग्रह कर रही है ।

निज सरूप की सुन सुन महिमा।
मन में अचरज करत रही ॥ २ ॥
प्रेम भरी धावत[1] अब घट में।
उमँग उमँग सुत अधर गई ॥ ३ ॥
गुरु सरूप निरखा त्रिकुटी में।
सतपुर सतगुरु दरस दई ॥ ४ ॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे।
निज चरनन में मेल लई[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७८ ॥

गुरु प्यारे का सतसँग अमल अमोल[3] ।टेक।
चित से बचन सुनो उर धारो।
कब लग रहो तुम डावाँडोल ॥ १ ॥
शब्द कमाओ प्रेम भक्ति से।
घट का दें गुरु परदा खोल ॥ २ ॥
धुन सँग चढ़ो अधर में प्यारी।
माया के सब उतरें ख़ोल[4] ॥ ३ ॥
गुरु परताप करो यह करनी।
सुफल होय जीवन अनमोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से धुर पद पावे।
अकह[5] अपार अनाम अबोल[5] ॥ ६ ॥

१—दौड़ती है। २—मेल लई—लगा लिया। ३—बेशक़ीमत। ४—ग़िलाफ़। ५—अवर्णनीय।

॥ शब्द ७९ ॥

गुरू प्यारे का सँग बड़भागी पाय ।टेक।
जिन सज्जन गुरू महिमा जानी ।
वे सतसंग करें नित आय ॥ १ ॥
परमारथ की क़दर जान कर ।
जग आसा सब दई हटाय ॥ २ ॥
मन इंद्री का सोधन[1] कर के ।
राधास्वामी चरनन प्रेम जगाय ॥३॥
सुरत लगावें शब्द अधर[2] में ।
घट में निस दिन आनँद पाय ॥ ४ ॥
जग का मोह न ब्यापे उनको ।
दुख सुख में रहें चरन धियाय ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति धार गुरू चरनन ।
सेवा कर लें गुरू रिझाय[3] ॥ ६ ॥
मन इच्छा को रोक जुगत से ।
मगन होय गुरू रज़ा[4] कमाय ॥ ७ ॥
सुखी रहें चरनन में हर दम ।
राधास्वामी प्यारे हुए सहाय ॥ ८ ॥

१—सफ़ाई । २—अंतर के । ३—लें रिझाय—प्रसन्न कर लेते हैं । ४—प्रसन्नता ।

॥ शब्द ८० ॥

गुरू प्यारे के सँग आनँद भारी ॥टेक॥
जग ब्योहार सुहावे नाहीं ।
छोड़ दई कृत[1] संसारी ॥ १ ॥
दरशन बचन भजन और सेवा ।
यह करतूत लगी प्यारी ॥ २ ॥
मन और सुरत प्रेम रँग भीजें ।
सुन सुन अनहद झनकारी ॥ ३ ॥
उमँग उमँग अब चढ़त अधर[2] में ।
छिन छिन होय तन से न्यारी ॥ ४ ॥
गुरू सतगुरू पद परस[3] दया से ।
राधास्वामी चरन सीस धारी ॥ ५ ॥

प्रेम प्रकाश-भाग तीसरा

॥ शब्द १ ॥

गुरू प्यारे के बैन रसीले,
अमृत की खान[4] ॥ टेक ॥
प्रेम भरे नित बचन सुनावें ।
लगे कलेजे बान[5] ।
हुई घायल जान ॥ १ ॥

१—कारवाई । २—अंतर । ३—स्पर्श करके यानी पहुँचकर । ४-भंडार । ५-तीर ।

जगत मोह जंजाल छुड़ाया ।
खैंच धरे मन प्रान ।
गुरु चरनन आन[1] ॥ २ ॥
शब्द भेद दिया घट का सारा[2] ।
सुरत लगाई तान ।
चढ़ कर असमान ॥ ३ ॥
गुरु का रूप लखा त्रिकुटी में ।
सत्तपुरुष का धारा ध्यान ।
सतलोक ठिकान[3] ॥ ४ ॥
आगे चल पहुँची धुर धामा ।
राधास्वामी अचरज दरस दिखान ।
मैं रही हैरान[4] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

गुरु प्यारे के नैन रँगीले,
मेरा मन हर लीन[5] ॥ टेक ॥
अद्भुत छबि निरखत नर नारी ।
बचन सुनत हुए दीन ।
मन धार यक़ीन ॥ १ ॥

१—ला कर । २—असली, ठीक ठीक । ३—स्थान । ४—आश्चर्य में ।
५—हर लीन—वश में कर लिया ।

सुन्दर रूप बसा नैनन में।
दरस बिना तड़पत ग़मगीन[1]।
जस जल बिन मीन[2] ॥ २ ॥
जब गुरु दरशन मिला भाग से।
मगन हुई रस पियत अमी[3]।
गुरु किरपा चीन[4] ॥ ३ ॥
सतसँग कर गुरु सेवा लागी।
निरमल हुई मेरी सुरत मलीन।
हुऐ अघ[5] सब छीन[6] ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई।
राधास्वामी मेहर अनोखी कीन।
हुई चरनन लीन ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु प्यारे की चाल अनोखी[7],
जग से न्यारी ॥ टेक ॥
बाहरमुख जग का परमारथ।
नक़ल से मेल मिला री।
नहीं असल सम्हारी ॥ १ ॥

१—दुखी। २—मछली। ३—अमृत। ४—पहचान कर। ५—पाप। ६—नाश। ७—अद्भुत।

अंतरमुख जो करते करनी ।
पिंड के पार न जा री ।
सतपद नहिं पा री ॥ २ ॥
संत देश ऊँचे से ऊँचा ।
पिंड अंड ब्रह्मंड निहारी ।
तिस पार सिधारी[1] ॥ ३ ॥
सुरत शब्द मारग समझावें ।
मन और सूरत अधर चढ़ावें ।
सुन धुन झनकारी ॥ ४ ॥
जो जिव राधास्वामी सरनी आये ।
मेहर दया से पार लगाये ।
हुए महा सुखियारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

गुरु प्यारे का संग अमोला,
सुख का भंडार ॥ टेक ॥
जिन जिन संग करा हित[2] चित से ।
पाया उन घर भेद अपार ।
पिया अमृत सार[3] ॥ १ ॥

१—प्रेम । २—गई । ३—उत्तम ।

प्रेम प्रीति उन घट में जागी ।
राधास्वामी चरन उर धरे सम्हार ।
हुआ हिये उजियार[1] ॥ २ ॥
जगत भाव और भोग बासना ।
मन से उनके दई निकार ।
मल धोये झाड़[2] ॥ ३ ॥
निरमल होय सुरत अलगानी ।
मगन हुई गुरु रूप निहार ।
सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥
नभ में होय गई त्रिकुटी में ।
वहाँ से पहुँची सुन्न मँझार[3] ।
सुनी सारँग सार ॥ ५ ॥
मुरली बीन सुनी धुन दोई ।
पहुँची अलख पुरुष दरबार ।
गई अगम के पार ॥ ६ ॥
आगे राधास्वामी धाम निहारा ।
मिला वहाँ आनंद अपार ।
हुआ जीव उबार ॥ ७ ॥

१—प्रकाश । २—सभी । ३—में ।

॥ शब्द ५ ॥

गुरू प्यारे का रँग चटकीला[1],
कभी उतरे नाहिं ॥ टेक ॥
जिन पर मेहर करी गुरू प्यारे ।
सतसँग में उन लिया मिलाय ।
दई चरनन छाँय ॥ १ ॥
करम भरम से लीन बचाई ।
निरमल कर उन लिया अपनाय ।
गई काल की दायँ[2] ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति दई चरनन में ।
शब्द की महिमा दई बसाय ।
उन हिरदे माहिं ॥ ३ ॥
शब्द सुनाय सुत गगन चढ़ाई ।
लीला देख सब रहे हरखाय ।
मिल गुरू गुन गायँ ॥ ४ ॥
ऐसा रंग रँगा राधास्वामी ।
सब जिव चरन सरन में धाय ।
दृढ़[3] पकड़ी बाँह ॥ ५ ॥

१—तेज । २—रगड़ । ३—मजबूती से ।

॥ शब्द ६ ॥

गुरू प्यारे का रँग अति निरमल,
कभी मैला न होय ॥ टेक ॥
सतसँग धारा नित ही जारी ।
काल जाल और करम कटाय ।
दिये कलमल[1] धोय ॥ १ ॥
हिरदे में नई प्रीति जगावें ।
चरनन में परतीत बढ़ावें ।
करम भरम दिये खोय ॥ २ ॥
जुगत बताय करावें करनी ।
मन सूरत धुन में धरनी[2] ।
मिला आनँद मोहि ॥ ३ ॥
शब्द शब्द का भेद सुनाया ।
धुर पद का मोहि मरम लखाया ।
जहाँ एक न दोय ॥ ४ ॥
राधास्वामी सँग की महिमा भारी ।
मेहर दया पर जाऊँ बलिहारी ।
स्रुत चरन समोय ॥ ५ ॥

१—काल के मैल । २—लगाना ।

॥ शब्द ७ ॥

गुरु प्यारे का देश अति ऊँचा,
कस पहुँचूँ धाय ॥ टेक ॥
बिन गुरु दया काज नहिं होई ।
सतसँग में अब बैठूँ जाय ।
चित चरन लगाय ॥ १ ॥
सुन सुन बचन सुरत मन माँजूँ[1] ।
गुरु मूरत का ध्यान लगाय ।
घट ताकूँ[2] जाय ॥ २ ॥
शब्द जुगत गुरु दीन बताई ।
प्रेम सहित रहूँ ताहि[3] कमाय ।
मन सुरत जमाय ॥ ३ ॥
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊँ ।
सहसकँवल सुनूँ घंटा जाय ।
फिर गगन चढ़ाय ॥ ४ ॥
सुन्न और महासुन्न के पारा ।
गुफा परे सत पद दरसाय ।
धुन बीन सुनाय ॥ ५ ॥

१—साफ़ करूँ । २—देखूँ । ३—उसको ।

उमँग जगाय चढ़ी आगे को।
अलख अगम का दरस दिखाय।
तिस पार चलाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी रूप निरख मगनानी।
महिमा वाकी[1] को सके गाय।
मैं रही शरमाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

गुरु प्यारे का महल सुहावन,
कस[2] देखूँ जाय ॥ टेक ॥
गुरु बिन कोई भेद न जाने।
उनका सँग अब करूँ बनाय।
हिये उमँग जगाय ॥ १ ॥
सुन सुन देश की महिमा भारी।
मन में दिन दिन प्रीति बढ़ाय।
बिरह हिये रही छाय ॥ २ ॥
इंद्री भोग नहीं अब भावें।
मन में रहे नित दरद समाय।
पिया पीर[3] सताय ॥ ३ ॥

१—उसकी। २—कैसे। ३—याद की तकलीफ़।

बिन गुरु कौन दवा करे मेरी ।
मेहर से दें वे सुरत चढ़ाय ।
धुन शब्द सुनाय ॥ ४ ॥
बिमल बिलास[1] लखे अंतर में ।
तब तन मन कुछ शांति धराय ।
घट पाट[2] खुलाय ॥ ५ ॥
कँवल कँवल की लीला न्यारी ।
मेहर दया से निरखूँ जाय ।
अति आनँद पाय ॥ ६ ॥
बिनय करूँ राधास्वामी चरनन में ।
बेग[3] देव मेरा काज बनाय ।
हिये दया उमँगाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९ ॥

गुरु प्यारे का मारग झीना[4],
कोइ गुरुमुख जाय ॥ टेक ॥
मन इंद्री को रोक अँदर में ।
भोग बासना दूर हटाय ।
मन मान[5] नसाय ॥ १ ॥

१—लीला । २—परदा । ३—जल्दी । ४—सूक्ष्म । ५—अहंकार ।

सतगुरु प्रेम भींज रहे निस दिन।
नया नया भाव और उमँग जगाय।
गुरु सेवा लाय ॥ २ ॥
होय हुशियार चलत गुरु मारग।
घट में बिमल बिलास दिखाय।
गुरु ध्यान धराय ॥ ३ ॥
तन मन धन चरनन पर वारत[1]।
मन और सूरत गगन चढ़ाय।
घट शब्द जगाय ॥ ४ ॥
करम काट गुरु बल चली आगे।
माया दल भी दूर पराय[2]।
दिया काल गिराय ॥ ५ ॥
ऐसी सुत गुरु चरन अधीनी।
सूर होय सत शब्द समाय।
धुन बीन बजाय ॥ ६ ॥
मेहर हुई सुत अधर सिधारी[3]।
राधास्वामी दिया निज घर पहुँचाय।
लिया गोद बिठाय ॥ ७ ॥

१—निछावर करती। २—हो गया। ३—गई।

॥ शब्द १० ॥

गुरू प्यारे चरन मनभावन,[१]
हिये राखूँ बसाय (छिपाय) ।टेक।
सुन सुन बचन गुरू प्यारे के ।
संशय भरम सब गये नसाय ।
मन भाव बढ़ाय ॥ १ ॥
चरन सरन की महिमा जानी ।
मन और सूरत रहे लुभाय ।
दृढ़ लगन[२] लगाय ॥ २ ॥
चरन भेद ले धारा ध्याना ।
नित प्रति रस और आनँद पाय ।
निज भाग सराय ॥ ३ ॥
गुरू चरनन सम[३] और न प्यारा ।
बारम्बार उन्हीं में धाय ।
मन सुत हरखाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर की क्या कहूँ महिमा ।
सहज लिया मोहि चरन लगाय ।
सब बंद[४] छुड़ाय ॥ ५ ॥

१—सुंदर । २—प्रेम । ३—समान । ४—बंधन ।

॥ शब्द ११ ॥

गुरू प्यारे की छबि मनमोहन[1]।
रही नैनन छाय ॥ टेक ॥
जब से मैं पाये गुरू प्यारे के दरशन।
हिरदे में रही प्रीति समाय।
मन अति अकुलाय ॥ १ ॥
बार बार दरशन को धावत।
बिन दरशन रहे अति घबराय।
कहीं चैन न पाय ॥ २ ॥
ऐसी दशा देख गुरू प्यारे।
निज सतसँग में लिया मिलाय।
घट प्रेम बढ़ाय ॥ ३ ॥
तन मन इंद्री सिथिल[2] हुए अब।
दरशन रस ले रहे तृप्ताय[3]।
जग भाव भुलाय ॥ ४ ॥
गुरू सरूप अब बसा हिये में।
हर दम गुरू का ध्यान धराय।
कभी बिसर[4] न जाय ॥ ५ ॥

१—अत्यंत सुंदर। २—शिथिल, कमज़ोर। ३—अघाय। ४—भूल।

प्रीति प्रतीति बढ़ी गुरु चरनन ।
गुरु सम[1] जग में कोइ न दिखाय ।
रही महिमा गाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से घट पट[2] खोला ।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाय ।
दई घर पहुँचाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु प्यारे का पंथ[3] निराला,
अति ऊँच ठिकान ॥ टेक ॥
बेद कतेब[4] पार नहिं पावें ।
जोगी ज्ञानी मरम[5] न जान ।
पद ब्रह्म ठिकान[6] ॥ १ ॥
तिरदेवा[7] और दस औतारा ।
पीर[8] पैग़म्बर वली[9] भुलान ।
गति संत न जान ॥ २ ॥
मुझ पर दया करी गुरु प्यारे ।
सुरत शब्द का भेद बतान ।
घट राह चलान ॥ ३ ॥

१—समान । २—परदा । ३—मार्ग । ४—मज़हबी पुस्तकें, क़ुरान अंजील इत्यादि । ५—भेद । ६—स्थान । ७—ब्रह्मा, विष्णु, महादेव । ८—मुसलमानों के गुरु । ९—फ़कीरों की एक क़िस्म ।

प्रेम प्रीति गुरू चरनन धारी ।
धुन सँग मन और सुरत लगान ।
चढ़ अधर अस्थान ॥ ४ ॥
राधास्वामी गति मति अतिसे[1] भारी ।
बिन किरपा नहिं होय पहिचान ।
कस पाय निशान ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

गुरू प्यारे की कर परतीती ।
होय जीव उबार ॥ टेक ॥
संशय भरम निकारो मन से ।
कर सतसंग बढ़ाओ प्यार ।
रहो नित हुशियार ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ बिकारा[2] ।
इन दूतन का सँग तज डार ।
गुरू सीख[3] सम्हार ॥ २ ॥
गुरू बल सील छिमा चित राखो ।
और संतोष बिबेक[4] बिचार ।
अस दूतन[5] टार ॥ ३ ॥

१—बहुत । २—दोष । ३—शिक्षा । ४—ज्ञान । ५—काम, क्रोध इत्यादि ।

शब्द जुगत तुम नित्त कमाओ ।
गुरु मूरत का ध्यान सम्हार ।
घट देख बहार[1] ॥ ४ ॥
मेहर करें राधास्वामी दयाला ।
सुरत चढ़ावें धुन की लार[2] ।
जाय निज घर बार[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

गुरु प्यारे का धार भरोसा ।
करें कारज पूर ॥ टेक ॥
सुरत शब्द की जुगत कमाओ ।
मेहर से घट में झलके नूर[4] ।
बाजे अनहद तूर[5] ॥ १ ॥
बिरहन सुरत पाय घट भेदा ।
कार कमावत कर भ्रम चूर[6] ।
तज मनसा कूर[7] ॥ २ ॥
सुन सुन धुन सूरत मगनानी ।
मस्त हुआ मन सूर[8] ।
हुई इच्छा दूर ॥ ३ ॥

१—बिलास । २—साथ । ३—घर बार—निज देश । ४—प्रकाश । ५—शब्द । ६—नाश । ७—खराब । ८—बहादुर ।

राधास्वामी दृष्टि दया की डारी।
काल करम रहे झूर[1]।
मिली जाय पद मूर[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर की क्या कहूँ महिमा।
पहुँच गई धुर[3] धाम हज़ूर।
हुई चरनन धूर[4] ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु प्यारे की जुगत कमाओ।
मन धर कर प्यार ॥ टेक ॥
दीन होय कर सतसँग गुरु का।
बचन सुनो चित चेत सम्हार।
उर[5] धारो सार ॥ १ ॥
संशय छोड़ प्रीति कर गुरु से।
दिन दिन उन परतीत सम्हार।
सब भरम निकार ॥ २ ॥
जब मन निरमल चित होय निश्चल।
शब्द भेद देंय सब का सार।
गुरु किरपा धार ॥ ३ ॥

१—रहे झूर—झुरते रहे, पछताते रहे। २—मूल, असली। ३—अंतिम। ४—धूल। ५—हृदय में।

घेर घुमर[1] घट में मन सूरत।
शब्द सुने चढ़ उलटी धार।
लख बिमल बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से जाय अधर में।
सुन्न और महासुन्न के पार।
सत रूप निहार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

गुरु प्यारे का कर दीदारा,[2]
घट प्रीति जगाय ॥ टेक ॥
गुरु दरशन की महिमा भारी।
छिन में कोटिन[3] पाप नसाय।
जिव काज बनाय ॥ १ ॥
बिरही जन कोइ जानें रीती[4]।
जस दरपन[5] में दरस दिखाय।
हिये रूप बसाय ॥ २ ॥
ऐसी लगन[6] लगावें जो जन।
छिन छिन रहें गुरु चरन समाय।
घट आनंद पाय ॥ ३ ॥

१—घेर घुमर—पूरी तरह से एकाग्र करके। २—दर्शन। ३—करोड़ों। ४—ढंग। ५—शीशा। ६—प्रेम।

चरन भेद ले सुरत चढ़ावें।
दरशन रस ले रहें तृप्ताय[1]।
धुन शब्द सुनाय ॥ ४ ॥
मेहर करें गुरु राधास्वामी प्यारे।
एक दिन लें निज चरन लगाय।
धुर घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

गुरु प्यारे से प्रीति लगाना।
मन सरधा[2] लाय ॥ टेक ॥
जगत भोग सब जान असारा[3]।
इनसे हट सतसंग समाय।
गुरु बचन कमाय[4] ॥ १ ॥
भूल भरम और करमा धरमा।
इनसे नहिं कुछ काज सराय[5]।
सब दूर बहाय ॥ २ ॥
उमँग सहित गुरु सेवा धारो।
मन और सुत धुन संग लगाय।
गुरु रूप धियाय ॥ ३ ॥

१—संतुष्ट। २—श्रद्धा, विश्वास। ३—झूठ। ४—मानो। ५—काज सराय—काम बनता।

मेहर से घट में मिले अनंदा।
दिन दिन प्रीति प्रतीति बढ़ाय।
नई उमँग जगाय ॥ ४ ॥
दया करें गुरु सुरत चढ़ावें।
सहसकँवल लख[1] त्रिकुटी धाय।
गुरु शब्द सुनाय ॥ ५ ॥
सुन्न में जाय सुनी धुन सारँग।
सूरज सेत[2] भँवर दरसाय।
सोहँग धुन गाय ॥ ६ ॥
सतगुरु रूप लखे सतपुर में।
आगे राधास्वामी धाम दिखाय।
निज चरन समाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

गुरु प्यारे चरन में भाव[3],
लाओ मन से प्यारी ॥ टेक ॥
जगत बड़ाई धोखा जानो।
भोगन को बिष रूप पहिचानो[4]।
इनसे होय फिर दुख भारी ॥ १ ॥

१—देख कर। २—सफ़ेद। ३—विश्वास। ४—समझो।

गुरु सतसँग की महिमा जानो ।
सुन सुन बचन चित्त में आनो ।
इक दिन होय जग से न्यारी ॥ २ ॥
जो यह काम करो नहिं अब के ।
माया संग रहो नित अटके[1] ।
जनम जनम रहो दुखियारी ॥ ३ ॥
याते कहन हमारी मानो ।
गुरु चरनन में आरत[2] ठानो ।
हित चित से सेवा धारी ॥ ४ ॥
मेहर से गुरु तोहि भेद लखावें ।
शब्द संग तेरी सुरत चढ़ावें ।
निरखे घट में उजियारी ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन सुर्त घट में रीझे[3] ।
काल करम बल छिन छिन छीजे[4] ।
जावे गगन शिखर[5] पारी ॥ ६ ॥
सत्त शब्द धुन सुन हरखानी ।
अलख अगम की सुन लई बानी ।
मिल राधास्वामी हुइ सुखियारी ।७

१—फँसे । २—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २ । ३—प्रसन्न होवे । ४—नाश हो । ५—चोटी ।

॥ शब्द १९ ॥

गुरू प्यारे का सुन्दर रूप,
निरखत मोह रही ॥ टेक ॥
जग ब्योहार लगा सब फीका ।
गुरू चरनन मन लागा नीका[१] ।
सतसँग कर मल[२] धोय रही ॥ १ ॥
गुरू सरूप हिये माहिं बसाना ।
रैन दिवस उन धरती ध्याना ।
शब्द में सुरत समोय[३] रही ॥ २ ॥
हरख हरख घट सुनती बाजा ।
भक्ति भाव का पाया साजा[४] ।
कुटिल[५] कुमत[६] सब खोय रही ॥३॥
प्रीति प्रतीति चरन में बढ़ती ।
शब्द संग सुत ऊपर चढ़ती ।
माया सिर धुन रोय रही ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से गई दस द्वारे ।
सत्त अलख और अगम के पारे ।
निज चरनन सुत पोय रही[७] ॥ ५ ॥

१—अच्छी तरह । २—मैल । ३—लीन कर । ४—सामान । ५—कुटिलता । ६—कुबुद्धि । ७—पोय रही—प्रवेश कर रही ।

॥ शब्द २० ॥

गुरू प्यारे की लीला सार,
जग जिव नेक[1] न जान ॥टेक॥
यह तो करम भरम में अटके।
लोक वेद[2] में रहे फँसान।
घर आदि[3] भुलान ॥ १ ॥
गुरू भक्ती की चाल अनोखी।
प्रेमी जन के अति मन भान[4]।
गुरू प्रेम जगान ॥ २ ॥
प्रेमी जन नित मन से जूझें[5]।
इंद्रियन को रोकें घट आन[6]।
माया बिघन[7] हटान ॥ ३ ॥
जग जीवन से मेल न होवे।
वे भोगन में रहें अटकान।
रहे मन मत ठान[8] ॥ ४ ॥
जन्म जन्म वे दुख सुख भोगें।
चौरासी में रहें भरमान।
कहीं चैन न पान ॥ ५ ॥

१—जरा भी। २—लोक वेद—लौकिक यानी संसारी व वैदिक यानी वेद संबंधी ज्ञान के चक्कर। ३—जहाँ से सब सृष्टि प्रकट हुई। ४—अच्छी लगी। ५—लड़ें। ६—आ कर। ७—झगड़े। ८—रहे ठान—पकड़े हुए हैं।

गुरू भक्तन की रीत निराली[1]।
गुरू चरनन नित प्रीति बढ़ान।
सरबस[2] वार धरान[3] ॥ ६ ॥
मेहर दया राधास्वामी की पावें।
छिन छिन घर ओर चलान।
लख शब्द निशान ॥ ७ ॥

॥ शब्द २१ ॥

गुरू प्यारे की सेवा धारो,
तज मन अभिमान ॥ टेक ॥
अस गुरू संग भाग से पइये।
सेवा कर उन बहुत रिझइये[4]।
तन मन कर कुरबान[5] ॥ १ ॥
गुरू पूरे जब दया बिचारें।
करम भरम सब छिन में टारें[6]।
दें भक्ती दान ॥ २ ॥
निज घट का गुरू भेद बतावें।
सुरत शब्द का जोग सिखावें।
लाय घट में ध्यान ॥ ३ ॥

१—अद्भुत। २—सर्वस्व, सभी कुछ। ३—वार धरान—निछावर कर देते हैं। ४—प्रसन्न करो। ५—निछावर। ६—दूर करें।

दीन होय गुरु सतसँग करना ।
मन और सुरत शब्द में धरना ।
चढ़ अधर ठिकान ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
शब्द शब्द का धाम लखावें ।
धुर पद दरसान ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

गुरु प्यारे से प्रीति बढ़ाओ,
तज मन का मान[1] ॥ टेक ॥
मन में मान धार करे सतसँग ।
सतगुरु की नहिं होय पहिचान ।
घट तिमिर[2] समान[3] ॥ १ ॥
दीन अधीन होय करे भक्ती ।
तब कुछ घट में पाय निशान ।
बढ़े प्रेम निदान ॥ २ ॥
ताते मान और कपट तियागो ।
गुरु चरनन में प्रीति लगान ।
परतीत जगान[4] ॥ ३ ॥

१—अहंकार । २—अंधकार । ३—समाया हुआ है । ४—पैदा करो ।

तब गुरु होय प्रसन्न दया से ।
देवें घर का पता निशान ।
सुत अधर चढ़ान ॥ ४ ॥
प्रेम अंग ले सूरत साजी[1] ।
राधास्वामी प्यारे हो गये राज़ी[2] ।
घर जाय बसान ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

गुरु प्यारे से प्यार बढ़ाना,
सुन घट में धुन ॥ टेक ॥
बचन सुनो तुम समझ बूझ के ।
दरस करो तुम उमँग प्रेम से ।
नित गावो गुन ॥ १ ॥
मान मनी[3] तज सतसँग करना ।
गुरु चरनन में नित चित धरना ।
सुमिर नाम निस दिन ॥ २ ॥
मन माया के भोग बिसरना[4] ।
गुरु की आज्ञा सिर पर धरना ।
छाँट बचन चुन चुन ॥ ३ ॥

१—सजाई । २—प्रसन्न । ३—मान मनी—मन का अहंकार । ४—भुलाना ।

करम भरम का कूड़ा झाड़ा ।
गुरु सरूप अब लागा प्यारा ।
झाँक रहूँ छिन छिन ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे किरपा धारी ।
जगत जाल से किया मोहि न्यारी ।
मेल[1] लिया चरनन ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

गुरु प्यारे के बचन अमोला,
उर[2] धार रहूँ ॥ टेक ॥
निज घर का गुरु भेद जनाई ।
राधास्वामी महिमा अधिक सुनाई ।
हिये उमँग भरूँ ॥ १ ॥
सहज जोग सुत शब्द कहावा ।
सो गुरु मेहर से मोहि समझावा ।
सुत तान रहूँ[3] ॥ २ ॥
नित अभ्यास मैं करूँ सम्हारी ।
हरखूँ घट में निरख उजारी ।
गुरु सेव करूँ ॥ ३ ॥

१—मिला । २—हृदय में । ३—तान रहूँ—जमाए रहूँ ।

प्रीति जगी अब मन में भारी ।
गुरु सम[1] रक्षक[2] कोइ न बिचारी।
नित ध्यान धरूँ ॥ ४ ॥
दीन जान मो पै कीनी दाया[3]।
राधास्वामी प्यारे अंग लगाया।
जस[4] गाय रहूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

गुरु प्यारे की सरन सम्हारो,
धर मन परतीत ॥ टेक ॥
बिना सरन कोइ बचे न भाई ।
सरन बिना कोइ घर नहिं जाई।
तज[5] माय तीत[6] ॥ १ ॥
जिन जिन सरन गही गुरु पूरे ।
उन ही जाय लखा पद मूरे[7]।
ले संतन सीत[8] ॥ २ ॥
जो तुम निज घर जाना चाहो ।
सतगुरु से ले जुगत कमाओ ।
कर मनुआँ मीत[9] ॥ ३ ॥

१—समान। २—रक्षा करने वाला । ३—दया। ४—यश, बड़ाई। ५—छोड़ कर। ६—कड़वी। ७—मूल, असली। ८—प्रसाद। ९—मित्र।

दिन दिन चरनन प्रेम बढ़ाओ ।
तन मन धन गुरु भेंट चढ़ाओ ।
यही है भक्ती रीत[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि से हेरें[2] ।
मन और सुरत दोऊ तेरे घेरें[3] ।
दे चरनन प्रीत ॥ ५ ॥
शब्द संग सुत अधर चढ़ावें ।
नभ लख गगन शिखर पहुँचावें ।
मन माया जीत ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन सतपुर धाई ।
अलख अगम के पार चढ़ाई ।
गाऊँ राधास्वामी गीत ॥ ७ ॥

॥ शब्द २६ ॥

गुरु प्यारे का दरस निहारत,
मेरा मन हुआ दीन ॥टेक॥
देख देख गुरु भक्ती रीती ।
प्रेमी जन की दृढ़ परतीती ।
हुई चरनन लीन ॥ १ ॥

१—ढंग । २—देखें । ३—एकाग्र करें ।

मेहर हुई सतसँग में आई।
बचन सुनत हिये प्रीति अब छाई।
हुई निपट[1] अधीन ॥ २ ॥
भेद दिया गुरु राधास्वामी देशा।
उमँग सहित लिया शब्द उपदेशा।
मन धार यक़ीन ॥ ३ ॥
सुरत लगाय सुनूँ धुन काना।
गुरु स्वरूप का धारूँ ध्याना।
हुए कल मल[2] छीन[3] ॥ ४ ॥
सहज सहज सुत घट में चढ़ती।
गुरु बिश्वास चित्त में धरती।
रही दया घट चीन[4] ॥ ५ ॥
प्रेम प्रीति नइ हिये में जागी।
उमँग उमँग सुत सतसँग लागी।
तज चाह मलीन[5] ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से लीन उबारी।
काल जाल से सुरत निकारी।
मेरा कारज कीन ॥ ७ ॥

१—बिलकुल। २—काल के मैल। ३—क्षीण, नाश। ४—रही चीन—पहचान रही। ५—मैली।

प्रेम प्रकाश-भाग चौथा

॥ शब्द १ ॥

गुरू प्यारे ने दिखाई,
घट उजियारी हो ॥ टेक ॥
सतसँग करत प्रीति हिये जागी ।
मन और सुरत चरन में लागी ।
हुए सुखियारी हो ॥ १ ॥
जिन सतसँग की सार[1] न जानी ।
माया संग रहे लिपटानी ।
रहे दुखियारी हो ॥ २ ॥
मेरी सुरत गुरू गगन चढ़ाई ।
भर भर पियत अमी[2] जल लाई ।
हुई पनिहारी हो ॥ ३ ॥
सतगुरू प्रीति रीत अब जानी ।
छोड़ दई अब बिघन पहिचानी[3] ।
मत[4] संसारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे दया कराई ।
दीन निरख मेरे हुए सहाई ।
किया भौ[5] पारी हो ॥ ५ ॥

१—असलियत । २—अमृत । ३—समझ कर । ४—समझ बूझ । ५-भौसागर के ।

॥ शब्द २ ॥

सतगुरू प्यारे ने सुनाई,
घट झनकारी हो ॥ टेक ॥

दीन अधीन पड़ी गुरू चरना ।
हुए परसन्न दई निज सरना ।
करी दया भारी हो ॥ १ ॥

भेद सुना दिया शब्द उपदेशा ।
निज घर का दिया अजब सँदेसा ।
अगम अपारी हो ॥ २ ॥

मगन होय करती घट करनी ।
सुरत निरत[1] दोउ धुन में धरनी ।
अधर सिधारी[2] हो ॥ ३ ॥

घंटा संख और गरज सुनाई ।
सारँग बजी और मुरली सुहाई ।
हुई बीन अधारी हो ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन सुरत हुई लीनी ।
प्रेम रंग की बरषा कीनी ।
भींज रही सारी हो ॥ ५ ॥

१—सुरत का ज्ञान लेने वाला अंग । २—गई ।

॥ शब्द ३ ॥

सतगुरु प्यारे ने जनाया,
घट भेद अपारा हो ॥ टेक ॥
जग में भरमत बहु जुग बीते ।
माया संग रहे कर[१] रीते[२] ।
काहू न दीन सहारा हो ॥ १ ॥
अब के सतगुरु मिले भाग से ।
शब्द सीख[३] उन दई मेहर से ।
किया जीव उपकारा हो ॥ २ ॥
सुन सुन धुन घट में अब रीझूँ[४] ।
प्रेम रंग तन मन में भीजूँ ।
हुआ आज उबारा[५] हो ॥ ३ ॥
करम भरम का मिटा पसारा ।
त्रिय तापन[६] से हुआ छुटकारा।
हुए दूर बिकारा[७] हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से अधर चढ़ाया ।
भौसागर के पार कराया ।
मिला प्रीतम प्यारा हो ॥ ५ ॥

१—हाथ । २—खाली । ३—शिक्षा । ४—प्रसन्न होऊँ । ५—उद्धार । ६—त्रिया तापन—आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक कष्ट । ७—दोष ।

॥ शब्द ४ ॥

सतगुरू प्यारे ने लखाया,
पिया देश नियारा हो ॥ टेक ॥
देस पिया का ऊँच से ऊँचा ।
संत बिना कोइ वहाँ न पहुँचा ।
माया ब्रह्म के पारा हो ॥ १ ॥
जगत जीव करमन में अटके ।
बाहरमुख पूजा में भटके ।
रहे भौ बारा[1] हो ॥ २ ॥
मुझ को सतगुरू मिले दया कर ।
घट का भेद दिया किरपा कर ।
लिया आप सुधारा हो ॥ ३ ॥
सुन सुन धुन सुत चढ़त अधर में ।
त्रिकुटी होय गइ सुन्न नगर में ।
लखा चन्द्र उजारा[2] हो ॥ ४ ॥
मुरली सुन धुन बीन जगाई ।
अलख अगम के पार चढ़ाई ।
मिला राधास्वामी चरन अधारा हो ५

१—इसी तरफ़ । २—प्रकाश ।

॥ शब्द ५ ॥

सतगुरु प्यारे ने मिलाया,
प्रीतम प्यारा हो ॥ टेक ॥
बहु दिन जग में खोजत बीते ।
पंडित भेष लखे[१] मैं रीते[२] ।
कोइ जाने न वह घर न्यारा हो ॥१॥
मेहर हुई धुर की गुरु मिलिया ।
उन सँग मन और सुरत सम्हलिया ।
भेद मिला धुन सारा[३] हो ॥ २ ॥
उमँग सहित घट करी कमाई ।
धुन सँग मन और सुरत लगाई ।
लखा अचरज उजियारा[४] हो ॥३॥
चढ़ चढ़ सुरत गई दस द्वारे ।
सतपुर सतगुरु दरस निहारे ।
गई अगम के पारा हो ॥ ४ ॥
मेहर हुई पहुँची धुर धामा[५] ।
राधास्वामी चरन मिला बिस्रामा ।
संत का निज दरबारा हो ॥ ५ ॥

१—देखे, पाए । २—ख़ाली यानी जिन्हें कुछ प्राप्त नहीं है । ३—उत्तम ।
४—प्रकाश । ५—स्थान ।

॥ शब्द ६ ॥

सतगुरु प्यारे ने पिलाया,
प्रेम पियाला हो ॥ टेक ॥
प्रीति नवीन[1] हिये में जागी ।
जगत मोह तज चरनन लागी ।
गुरु लीन सम्हाला हो ॥ १ ॥
प्रीति प्रतीति मेरे हिये धर दीन्ही ।
मेहर दया अंतर में चीन्ही ।
गुरु कीन निहाला[2] हो ॥ २ ॥
उमँग उमँग अब घट में चाली ।
सुन सुन धुन स्रुत हुई मतवाली[3] ।
लखा गुरु रूप बिशाला[4] हो ॥ ३ ॥
सुन्न शिखर होय गई सतपुर में ।
अटल[5] भक्ति पाय हुई मगन[6] मैं ।
दई सतपुरुष दयाला हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन आरत[7] धारी ।
मेहर दया उन कीनी भारी ।
दिया निज धाम निराला[8] हो ॥५॥

१—नई । २—सरशार । ३—मस्त । ४—भव्य, सुंदर । ५—अडिग । ६—प्रसन्न । ७—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २ । ८—अद्भुत ।

॥ शब्द ७ ॥

सतगुरु प्यारे ने जगाया,
सोता मनुआँ हो ॥ टेक ॥
बहु जुग बीते भूल भरम में।
अटक रही नित करम धरम में।
सहत रही मैं तपनुआँ[१] हो ॥ १ ॥
गुरु दयाल मोहि खैंच बुलाई।
सतसंगत में लीन लगाई।
भेद दिया घट धुनुआँ[२] हो ॥ २ ॥
सेवा कर गुरु लीन रिझाई[३]।
मेहर दया उन छिन छिन पाई।
वार रही[४] मन तनुआँ[५] हो ॥ ३ ॥
घट में निस[६] दिन करत कमाई।
धुन डोरी गह[७] सुरत चढ़ाई।
दिन दिन बढ़त लगनुआँ[८] हो ॥४॥
राधास्वामी मेहर से सतपुर आई।
काल करम बल सबहि नसाई[९]।
गये अहंकार मदनुआँ[१०] हो ॥ ५ ॥

१—तपन, जलन। २—शब्द का। ३—लीन रिझाई—प्रसन्न कर लिया। ४—वार रही—निछावर कर रही। ५—शरीर। ६—रात। ७—पकड़ कर। ८—प्रेम। ९—नाश हो गया। १०—काम।

॥ शब्द ८ ॥

सतगुरु प्यारे ने दया कर,
मोहि लीन उबारी हो ॥ टेक ॥
जन्म जन्म भोगन में भूली ।
ऊँच नीच माया सँग झूली ।
रही दुखियारी हो ॥ १ ॥
इस औसर[1] गुरु सतसँग पाया ।
मेहर हुई मन चरन समाया ।
बचन गुरू उर[2] धारी हो ॥ २ ॥
जग का रंग देख सब मैला ।
प्रेमी जन सँग कीना मेला ।
भोग लगे सब खारी[3] हो ॥ ३ ॥
उमँग उमँग सेवा को धाई ।
घेर फेर मन शब्द लगाई ।
हुई गुरु प्यारी हो ॥ ४ ॥
अधर चढ़त गई द्वारे दस में ।
भीज रही स्रुत अमृत रस में ।
दूर हुए दुख सारी हो ॥ ५ ॥

१—मौक़ा । २—हृदय में । ३—बुरे, फीके ।

सोहं मुरली धुन सुन पाई।
बीन सुनी सतपुर में जाई।
लखी गुरु लीला भारी हो ॥ ६ ॥
अलख अगम गई सुरत प्रबीनी[1]।
राधास्वामी चरन हुई लौलीनी।
हुई सबसे अब न्यारी हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९ ॥

सतगुरु प्यारे ने मेहर से,
मेरा काज सँवारी हो ॥ टेक ॥
भरमत रही जक्त में सारी।
भोगन सँग सब पूँजी[2] हारी।
दुख पाये मैं भारी हो ॥ १ ॥
जग का हाल देख बहु डरती।
जहँ तहँ खोज जतन[3] का करती।
कोई न जनाया घर पारी हो ॥२॥
हुई निरास सोच हुआ भारी।
तब गुरु प्यारे दया बिचारी।
आन[4] मिले कर प्यारी हो ॥ ३ ॥

१—चतुर। २—संपत्ति। ३—उपाय। ४—आ कर।

घट का भेद सार समझाई ।
घर चलने की जुगत लखाई ।
मेहर करी कुछ न्यारी[1] हो ॥ ४ ॥
प्रेम प्रीति गुरु चरनन लागी ।
जगत मोह तज सूरत जागी ।
धुन सँग लागी तारी[2] हो ॥ ५ ॥
उमँग उमँग सुत चालत घट में ।
धुन घंटा सुन रही तिल पट[3] में ।
लखी जोत उजियारी हो ॥ ६ ॥
गुरु सतगुरु का दरशन कीना ।
राधास्वामी चरन सरन हुई लीना ।
निरभय हुई सुत प्यारी हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

सतगुरु प्यारे ने खिलाया,
निज परशाद निवाला हो ॥टेक॥
ले परशाद प्रीति हुई भारी ।
सतगुरु ने मोहि आप सँवारी ।
खोल दिया घट ताला हो ॥ १ ॥

१—विशेष । २—गहरा संबंध । ३—परदे ।

करम भरम सब जड़ से तोड़ा ।
जल पषान[1] पूजन अब छोड़ा ।
छोड़ा ईंट दिवाला[2] हो ॥ २ ॥
सतगुरु ने मोहि भेद जनाई ।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाई ।
झाँका गगन शिवाला[3] हो ॥ ३ ॥
गुरु दयाल मेरे हुए सहाई ।
मन माया की पेश न जाई ।
थाका काल कराला[4] हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम गई मैं सज के ।
राधास्वामी चरन पकड़ लिये धज[5] से
उन कीना मोहि निहाला हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सतगुरु प्यारे ने दृढ़ाया, ।
निज नाम पियारा हो ॥ टेक ॥
वह निज नाम है राधास्वामी नामा ।
ऊँच से ऊँच है तिस[6] का धामा ।
कुल रचना का अधारा हो ॥ १ ॥

१—पाषाण, पत्थर, मूर्त्ति । २—देवालय, मंदिर । ३—शिवालय, शिवजी का मंदिर । ४—भयंकर । ५—शान । ६—उस ।

जहँ नहिं पारब्रह्म और माया।
काल करम नहिं और नहिं काया[1]।
वह पद सब से न्यारा हो ॥ २ ॥
जहँ धुन नाम रसीली बोले।
सुन सुन सुत आनँद में फूले।
लख पद अपर अपारा हो ॥ ३ ॥
जहाँ हंसन का सदा बिलासा।
पुरुष दरस बिन और न आसा।
तज दिये भोग असारा हो ॥ ४ ॥
मैं अति दीन पड़ी गुरु चरना।
सब बल तज गही[2] राधास्वामी सरना।
नहिं कोइ और सहारा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु प्यारे ने जिताई,
काल से बाज़ी हो ॥ टेक ॥
भोगन सँग मैं बहु दुख पाये।
जगत जाल में रही भरमाये।
चेता[3] न यह मन पाजी[4] हो ॥ १ ॥

१—शरीर। २—ग्रहण की। ३—होश में आया ४—नालायक़।

जब से सतगुरु सरना लीनी ।
घट का भेद मेहर कर दीनी ।
मधुर मधुर धुन गाजी[1] हो ॥ २ ॥
सुरत चढ़ाय गगन पहुँचाई ।
काल बिघन[2] सब दूर कराई ।
माया भी रही लाजी[3] हो ॥ ३ ॥
जगत जीव सब माया चेरे[4] ।
जन्में मरें सहें दुक्ख घनेरे[5] ।
पंडित भेख और क़ाज़ी हो ॥ ४ ॥
मेहर से गुरु सेवा बन आई ।
सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ाई ।
राधास्वामी हो गये राज़ी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सतगुरु प्यारे ने लखाया,
निज रूप अपारा हो ॥ टेक ॥
हद्द[6] हद्द सब मत में गावें ।
बेहद[7] रूप संत दरसावें ।
माया घेर[8] के पारा हो ॥ १ ॥

१—ज़ोर से होने लगी । २—झगड़े । ३—लज्जित, शर्मिन्दा ४—ग़ुलाम ।
५—बहुत । ६—सीमित । ७—असीम, अपार । ८—देश ।

रूप अरूप[१] का भेद सुनावें।
मायक[२] रूप स्थिर[३] न रहावें।
वह निज रूप नियारा हो ॥ २ ॥
संतन निरमल देश जनाया।
जहँ नहि काल करम और माया।
वह पद सार[४] का सारा हो ॥ ३ ॥
सत्तपुरुष जहाँ सदा बिराजें।
हंस मंडली अद्भुत राजें[५]।
करते प्रेम पियारा हो ॥ ४ ॥
जिन जिन यहाँ गुरु भक्ती धारी।
सो पहुँचे सतगुरु दरबारी।
राधास्वामी चरन निहारा हो ॥५॥
संतन का भगवंत[६] अबिनाशी।
भेद भक्ति जहाँ वहाँ परकाशी।
सत्तपुरुष दरबारा हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम अनाम अपारा।
जहाँ नहि रंग रूप आकारा[७]।
अभेद भक्ति[८] जहाँ धारा हो ॥ ७ ॥

१—जिसे रूप नहीं कह सकते। २—माया का, माया संबंधी। ३—क़ायम। ४—असली। ५—शोभित हैं। ६—मालिक। ७—शक़्ल। ८—अभेद भक्ति—जिस अवस्था में प्रेमी व प्रियतम एक हो जाते हैं।

या बिधि[1] जो कोइ कार कमावे ।
पिरथम गुरु भक्ती चित लावे ।
जग से हो जाय न्यारा हो ॥ ८ ॥
अंतर सतगुरु भक्ती साधे[2] ।
सुरत शब्द मारग आराधे[3] ।
सोई जाय भौ पारा हो ॥ ९ ॥
सत्तपुरुष का दरशन पावे ।
वहाँ से राधास्वामी चरन समावे ।
येही सत्त[4] उधारा हो ॥१०॥
और मते सब काल पसारे ।
माया के कोइ जाय न पारे ।
करम भरम पच हारा हो ॥११॥
जो चाहो सच्चा उद्धारा ।
राधास्वामी मत धारो यह सारा ।
बारम्बार पुकारा हो ॥१२॥

॥ शब्द १४ ॥

सतगुरु प्यारे ने लगाई,
बिरह करारी हो ॥ टेक ॥
सुन सुन महिमा प्रीतम प्यारे ।
और शोभा निज धाम अपारे ।
चाह उठी हिये भारी हो ॥ १ ॥

१—तरह । २—साधन करे । ३—उपासना करे । ४—सच्चा ।

सतगुरु चरन हुई दीन अधीनी ।
उमँग उमँग उन सेवा कीनी ।
मेहर दृष्टि मो[1] पै डारी हो ॥ २ ॥
निज घर का मोहि भेद सुनाई ।
राह चलन की जुगत बताई ।
सुन धुन पिंड से न्यारी हो ॥ ३ ॥
प्रेम सहित सुत धुन में लागी ।
शब्द शब्द सुन हुई अनुरागी ।
तन मन गुरु पै वारी हो ॥ ४ ॥
तीन लोक के हो गई पारा ।
दयाल देश संतन दरबारा ।
राधास्वामी चरन निहारी हो ॥५॥

॥ शब्द १५ ॥

सतगुरु प्यारे ने जगाया,
अचरज भागा हो ॥ टेक ॥
बहु दिन सोई मोह नींद में ।
मन सँग भरमी जुगन जुगन में ।
धर[2] भोगन में रागा[3] हो ॥ १ ॥

१—मुझ । २—करके । ३—प्रेम ।

सतगुरु मिले मोहि बचन सुनाये।
सतसंगत में लीन लगाये।
बढ़त चरन अनुरागा[1] हो ॥ २ ॥
ध्यान धरत तन मन हुआ निश्चल।
भजन करत मेरा चित हुआ निरमल।
जगत मोह अब त्यागा हो ॥ ३ ॥
गुरु चरनन में प्रीति बढ़ावत।
संशय तज परतीत दृढ़ावत[2]।
मनुआँ धुन रस पागा हो ॥ ४ ॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे।
तीन लोक के किया मोहि पारे।
सहज प्रेम रँग लागा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सतगुरु प्यारे ने सिखाई,
भक्ती रीती हो ॥ टेक ॥
सब जिव भूल रहे जग माहीं।
बिन गुरु को घर भेद सुनाई।
को लावे परतीती हो ॥ १ ॥

१—प्रेम। २—मज़बूत करती है।

जब गुरू मिलें भाग से पूरे।
करम करम सब होवें दूरे।
चरनन में दें प्रीती हो ॥ २ ॥
सतसँग कर नित प्रीत बढ़ाना।
सेवा कर नई उमँग जगाना।
छूटे जग बिपरीती[1] हो ॥ ३ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ावें।
भीसागर के पार पहुँचावें।
काल करम दल[2] जीती हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन मिला बिसरामा।
दूर हुए सब अर्थ[3] और कामा[4]।
हुई सुफल उमरिया बीती हो ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

सतगुरू प्यारे ने छुड़ाई,
आवागवन[5] की डोरी हो ॥ टेक ॥
सतसँग में मोहि सार[6] बुझाया।
निज घर का सब भेद सुनाया।
करम भरम किये दूरी हो ॥ १ ॥

१—जो हितसाधन में विघ्न है। २—फ़ौज। ३—इंद्रियों के विषय। ४—वासनाएँ। ५—जन्म मरण। ६—तत्व।

गुरु सरूप का धारा ध्याना ।
धुन सँग किया ब्रह्मंड पयाना[1] ।
श्याम कंज[2] दल फोड़ी हो ॥ २ ॥
काल करम बहु अटक लगाये ।
माया भी नये चरित्र दिखाये ।
गुरु बल उन मुख मोड़ी हो ॥ ३ ॥
त्रिकुटी जाय सुनी गुरु बानी ।
सतपुर सतगुरु रूप पहिचानी ।
अलख अगम स्रुत जोड़ी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी निज किरपा धारी ।
सुरत हुई उन चरनन प्यारी ।
कुल जग से अब तोड़ी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सतगुरु प्यारे ने मिटाया,
काल कलेशा[3] हो ॥ टेक ॥
दया करी मोहि निकट बुलाया ।
राधास्वामी चरन प्रतीति दृढ़ाया[4] ।
भेद दिया निज देशा हो ॥ १ ॥

१—प्रयाण, गमन । २—तीसरा तिल । ३—कष्ट । ४—मज़बूत की ।

माया काल की हद्द लखाई ।
करम भरम सब दूर कराई ।
दिया शब्द उपदेशा हो ॥ २ ॥
मेहर का बल दे सुरत चढ़ाई ।
घट में बिमल बिलास[1] दिखाई ।
हट गये राग[2] और द्वेषा[3] हो ॥ ३ ॥
जन्म मरन की त्रास[4] नसाई ।
तीन लोक के पार पहुँचाई ।
जहाँ नहिं ब्रह्म महेशा हो ॥ ४ ॥
सत्त अलख और अगम निहारे ।
मिल गये राधास्वामी पुरुष अपारे ।
पूरन धनी[5] धनेशा[6] हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुनाई,
अचरज बानी हो ॥ टेक ॥
भरमत रही जगत में बहु दिन ।
देवी देव करत रही पूजन ।
पाई न घर की निशानी हो ॥ १ ॥

१—आनन्द । २—संसार के पदार्थों का मोह । ३—संसार के पदार्थों से हटने का भाव । ४—भय । ५—सामर्थ्यवान् । ६—धनियों के भी धनी ।

बेद शास्त्र और स्मृत[1] पुराना[2]।
तौरेत[3] अंजील और कुराना।
गुरु बिन भरम कहानी हो ॥ २ ॥
सतगुरु मिले मेहर से आई।
भेद सुनाय जुगत बतलाई।
शब्द सुनूँ असमानी हो ॥ ३ ॥
घट में अद्भुत लीला दरसे।
मन और सुरत चरन जाय परसे।
गुरु सरूप पहिचानी हो ॥ ४ ॥
गुरु की दया ले चाली आगे।
पहुँची जहाँ बीन धुन जागे[4]।
सतगुरु रूप दिखानी हो ॥ ५ ॥
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे।
उन चरनन में रहूँ सदा रे।
आदि अनादि ठिकानी हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी धाम की महिमा भारी।
सब रचना तिस के आधारी[5]।
सुरत शब्द की खानी[6] हो ॥ ७ ॥

१—स्मृतियाँ। २—पुराण। ३—यहूदियों का धर्मग्रन्थ। ४—प्रकट है। ५—सहारे। ६—भंडार।

॥ शब्द २० ॥

सतगुरु प्यारे ने दिखाई,
गगन अटारी हो ॥ टेक ॥
जग परमारथ संग भुलानी ।
तीरथ बर्त रही लिपटानी ।
करम चढ़ाये भारी हो ॥ १ ॥
निज घर का गुरु पता बताई ।
पिया मिलन की गैल[1] लखाई ।
सुरत शब्द मत धारी हो ॥ २ ॥
सतसँग करत भरम सब भागे ।
कर अभ्यास सुरत मन जागे ।
शब्द सुना झुनकारी हो ॥ ३ ॥
गुरु चरनन में बाढ़ी प्रीती ।
सुरत शब्द की हुई परतीती ।
त्रिकुटी ओर सिधारी[2] हो ॥ ४ ॥
गुरु सरूप गगना में देखा ।
काल करम का मिट गया लेखा[3] ।
सुरत हुई गुरु प्यारी हो ॥ ५ ॥

१—रास्ता । २—गई । ३—हिसाब किताब, क़र्ज़ा ।

सुन की धुन सुन सुरत चढ़ाई ।
मन माया से खूँट[1] छुड़ाई ।
हंसन सँग करी यारी[2] हो ॥ ६ ॥
मानसरोवर किये अशनाना ।
सत्तपुरुष का धारा ध्याना ।
राधास्वामी काज सुधारी हो ॥७॥

॥ शब्द २१ ॥

सतगुरु प्यारे ने दिलाया,
शब्द में भावा[3] हो ॥ टेक ॥
शब्द ने पिरथम करी पुकारा ।
शब्द ने चहुँ दिस किया उजारा।
वही सब रचन रचावा हो ॥ १ ॥
आदि पुकार[4] सुने जो कोई ।
देश संत का पावे सोई ।
शब्दहि देत बुलावा हो ॥ २ ॥
शब्दहि फैल रहा चहुँ देशा ।
शब्द शब्द सुन करो प्रवेशा ।
शब्दहि पार लगावा हो ॥ ३ ॥

१—संबंध । २—मित्रता । ३—श्रद्धा । ४—शब्द ।

शब्द भेद बड़भागी पावें।
शब्द संग वे सुरत चढ़ावें।
शब्दहि शब्द मिलावा हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से दिया घट भेदा।
सुन सुन शब्द मिटे कर्म खेदा[1]।
नित गुरु महिमा गावा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

सतगुरु प्यारे ने गिराया,
काल करालाा[2] हो ॥ टेक ॥
सुन सुन महिमा सतसँग केरी[3]।
दरशन कर हुई चरनन चेरी[4]।
गुरु लीन सम्हाला हो ॥ १ ॥
नाद[5] की महिमा गुरु मोहि सुनाई।
जस उतपति हुई सब गाई।
लखा गुरु देश निराला[6] हो ॥ २ ॥
ता[7] के नीचे काल पसारा।
माया ब्रह्म और तिरगुन[8] धारा।
सब रचना दुख साला[9] हो ॥ ३ ॥

१—कष्ट। २—भयंकर। ३—की। ४—दासी। ५—शब्द। ६—अद्भुत। ७—उस। ८—तीन गुणों यानी सतोगुन रजोगुन व तमोगुन की। ९—स्थान।

गुरू ने निकसन[1] जुगत बताई ।
शब्द भेद दे सुरत लगाई ।
लखा जोत जमाला[2] हो ॥ ४ ॥
त्रिकुटी होय गई दस द्वारे ।
भँवरगुफा सतलोक निहारे ।
मिले पुरुष दयाला हो ॥ ५ ॥
काल बिघन गुरू दूर कराये ।
मन माया भी रहे मुरझाये ।
गुरू कीन निहाला हो ॥ ६ ॥
पुरुष दया कर अंग लगाई ।
बल अपना दे अधर चढ़ाई ।
जहाँ राधास्वामी तेज जलाला[3] हो ॥ ७

॥ शब्द २३ ॥

सतगुरू प्यारे ने नचाया,
मनुआँ नटवा हो ॥ टेक ॥
जुगन जुगन से जग में बहता ।
भोग बासना सँग दुख सहता ।
झाँका औघट[4] घटवा[5] हो ॥ १ ॥

१—निकलने की । २—प्रकाश । ३—शान । ४—विकट, कठिन, दुर्गम । ५—स्थान ।

जग ब्योहार लगा अब साँचा।
कुल मालिक का भेद न जाँचा।
भूला घर की बटवा[1] हो ॥ २ ॥
सतगुरु संत मिले किरपा से।
भेद दिया उन मोहि दया से।
मन हुआ चरनन लटवा[2] हो ॥ ३ ॥
मन रहा खेल कला ज्यों नट की।
ख़बर लेत सुत चढ़ सर[3] तट[4] की।
सुनत रही धुन छटवा[5] हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया गई सुत सतपुर।
अलख अगम फिर मिले परम गुरु।
काज किया मेरा झटवा[6] हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

सतगुरु प्यारे ने बसाई,
उजड़ी बाड़ी[7] हो ॥ टेक ॥
जग सँग भूल गई सतनामा।
मन में बसत क्रोध और कामा।
डूब रही सारी हो ॥ १ ॥

१—बाट, रास्ता। २—अनुरागी। ३—मानसरोवर। ४—किनारा।
५—छँटी हुई, चुनी हुई। ६—फ़ौरन्। ७—घर।

गुरु दयाल मोहि जब से भेंटे ।
काल करम माया रही ऐंठे[1] ।
भेद मिला सत करतारी[2] हो ॥ २ ॥
सील छिमा चित माहि बसानी ।
काल करम से खूँट[3] छुड़ानी ।
सुरत शब्द मत धारी हो ॥ ३ ॥
मन और सुरत मगन हुए सुन धुन ।
पाप और पुन्न मोक्ष हुए[4] छिन छिन ।
प्रेम धार घट जारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन बसे अब हिय में ।
प्रेम बढ़त अब दिन दिन जिय में ।
गुरु भौ पार उतारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सतगुरु प्यारे ने सिंचाई,
प्रेम कियारी हो ॥ टेक ॥
जब से मैं सतगुरु दरशन पाये ।
चितवन में[5] दई प्रीति जगाये ।
सुरत हुई गुरु प्यारी हो ॥ १ ॥

१—अकड़े । २—कर्त्तार का । ३—संबंध । ४—मोक्ष हुए—छूट गए ।
५—चितवन में—दृष्टि से ही ।

दिन दिन प्रीति बढ़त हिये अंतर ।
रटत रहूँ निस[1] दिन गुरु मंतर[2] ।
हुई गुरु नाम अधारी हो ॥ २ ॥
चित्त रहे गुरु चरन समाना ।
गुरु सरूप हिये माहिं बसाना ।
निरख रही उजियारी हो ॥ ३ ॥
सतगुरु संग लगा मोहि प्यारा ।
करम भरम हुए दूर असारा[3] ।
सुन अनहद झनकारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन प्रेम बढ़ा भारी ।
तन मन धन सब उन पर वारी ।
हुई दरशन मतवारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सतगुरु प्यारे ने खिलाई,
घट फुलवारी हो ॥ टेक ॥
शब्द भेद ले लगी सुत घट में ।
धुन के फूल खिले तिल[4] पट[5] में ।
झाँकी कँवल कियारी हो ॥ १ ॥

१—रात । २—मंत्र, नाम । ३—मिथ्या, झूठ । ४—तीसरे तिल के । ५—परदे ।

धुन घंटा और संख सुनाई ।
सूरज चाँद अनेक दिखाई ।
चढ़ गई गगन अटारी हो ॥ २ ॥
सुन्न मँडल का ताला खोला ।
शब्द सेत धुन सारँग बोला ।
जहाँ अमी सरोवर भारी हो ॥ ३ ॥
आगे चल गई भँवर अस्थाना ।
सेत सूर जहाँ नूर[1] दिखाना ।
मुरली सँग लगी तारी हो ॥ ४ ॥
आगे लखा अचरज उजियारा ।
सत्त अलख और अगम निहारा ।
राधास्वामी चरन बलिहारी हो ॥५

॥ शब्द २७ ॥

सतगुरु प्यारे ने सँवारी,
मेरी सुरत निमानी[2] हो ॥ टेक ॥
तज अहंकार गई गुरु पासा ।
बचन सुनत मन हुआ हुलासा ।
प्रेम प्रीति की खानी[3] हो ॥ १ ॥

१—प्रकाश । २—दीन । ३—भंडार ।

कर सतसंग हुआ मन निरमल ।
बढ़ा अनुराग चित्त हुआ निश्चल ।
रोम रोम हरखानी हो ॥ २ ॥
गुरु सरूप का धारा ध्याना ।
सुरत लगाय सुनी धुन ताना[1] ।
यही गुरु ज्ञान बखानी हो ॥ ३ ॥
चढ़ चढ़ सुरत गई दस द्वारे ।
काल बिघन सब दूर निकारे ।
गुरु की मेहर पहिचानी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी लिया मोहि अंग लगाई ।
मेहर से दिया सब काज बनाई ।
पहुँची अधर ठिकानी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुधारा,
मनुआँ अनाड़ी[2] हो ॥ टेक ॥
दया करी सतसँग में खींचा ।
बचन सुनाय अधिक मन भींचा[3] ।
भोग तरंग[4] निकारी हो ॥ १ ॥

१—आवाज़ा । २—मूर्ख । ३—दबाया । ४—लहरें ।

सेवा करत बढ़ा अनुरागा[1]।
सोता मन सुन सुन धुन जागा।
लखी घट जोत उजारी हो ॥ २ ॥
गुरु की दया ले गई सुत आगे।
गगन ओर जहाँ ओअं जागे[2]।
हुई गुरु शब्द अधारी हो ॥ ३ ॥
वहाँ से चल पहुँची सतपुर में।
सतगुरु प्यारे मिले अधर में।
गति मति अगम अपारी हो ॥ ४ ॥
गुरु प्यारे मोहि आप सुधारी।
अलख अगम के पार किया री।
राधास्वामी चरन निहारी[3] हो ॥५॥

॥ शब्द २९ ॥

सतगुरु प्यारे ने खिलाई,
अब के नई होरी हो ॥ टेक ॥
काम क्रोध को मार हटावा।
सील छिमा हिये माहिं बसावा।
लोभ मोह सिर फोड़ी हो ॥ १ ॥

१—प्रेम। २—ओअं जागे—ओं शब्द प्रकट है। ३—देखे।

मान ईरषा भी दई त्यागी ।
मन हुआ जग से सहज बैरागी[1] ।
गुरु चरनन सुत जोड़ी हो ॥ २ ॥
प्रेम रंग घट माहिं भरावा ।
पच[2] इंद्री पिचकार[3] बनावा ।
गुरु पर भर भर छोड़ी हो ॥ ३ ॥
दिन दिन प्रीति बढ़त गुरु चरना ।
उमँग उमँग हिये धारी सरना ।
जग से अब सुत मोड़ी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी दृष्टि मेहर की कीनी ।
प्रेम दात मोहि निज कर दीनी ।
कुल जग नाता[4] तोड़ी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० ॥

सतगुरु प्यारे ने मचाई,
जग बिच होरी हो ॥ टेक ॥
हेला मार[5] कहा जीवन को ।
सतसँग कर रोको तन मन को ।
निज घर सुरत बहोरी[6] हो ॥ १ ॥

१—उदासीन । २—पाँच । ३—रंग फेंकने की पिचकारी । ४—ताल्लुक़ ।
५—हेला मार—पुकार कर । ६—लौटाओ ।

प्रेम प्रीति का रँग बरसाया।
शब्द गुरू सँग फाग[1] खिलाया।
गुन[2] गुलाल घट घोरी हो ॥ २ ॥
पाँच दूत[3] को मार पछाड़ा।
तीन गुनों का कूड़ा टारा[4]।
काल करम बल तोड़ी हो ॥ ३ ॥
सुन में जाय फिर फाग रचाया।
हंसन संग अबीर उड़ाया।
धूम मची नहिं थोड़ी हो ॥ ४ ॥
सतपुर जाय हुई सुत निर्मल।
अलख अगम को निरखा चढ़ चल।
राधास्वामी चरनन जोड़ी हो ॥५॥

॥ शब्द ३१ ॥

सतगुरु प्यारे ने निभाई[5],
खेप[6] हमारी हो ॥ टेक ॥
नइया मोर बहत मँझधारा।
गुरु बिन कौन लगावे पारा।
वही जीव हितकारी हो ॥ १ ॥

१—होली। २—तीन गुणों का। ३—पाँच दूत—काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। ४—हटाया। ५—पार लगाई। ६—संसार की यात्रा।

सतगुरु दीन दयाल हमारे ।
मेहर करी मोहि लीन सम्हारे ।
भौसागर पार उतारी हो ॥ २ ॥
बचन सुना दई अगम निशानी ।
सुरत शब्द मारग दरसानी ।
सुत गगना ओर सिधारी[1] हो ॥३॥
लख[2] लख जोत सूर और चंदा ।
तोड़ अंड फोड़ा ब्रह्मंडा ।
भँवरगुफा धुन धारी हो ॥ ४ ॥
मेहर हुई लखिया सत[4] नूरा[3] ।
अलख अगम की हो गई धूरा ।
राधास्वामी काज सँवारी हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सतगुरु प्यारे ने लजाये,
माया ब्रह्म खिलाड़ी हो ॥ टेक ॥
दीन होय जो सरनी आये ।
तिन जीवन को लिया अपनाये ।
भेद दिया उन भारी हो ॥ १ ॥

१—गई । २—देख कर । ३—सत्तपुरुष का । ४—प्रकाश ।

कर अभ्यास बढ़ी हिये प्रीती ।
सुरत शब्द की हुई परतीती ।
सहज गए भौ पारी हो ॥ २ ॥
जिन सतगुरु से किया अहंकारा ।
उनका हुआ नहिं जीव गुज़ारा ।
रहे माया दर[1] के भिखारी हो ॥३॥
याते[2] चेत करो सब कोई ।
बिन गुरु सरन उबार[3] न होई ।
क्यों नर देही हारी[4] हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला ।
सब जीवन की करें प्रतिपाला[5] ।
जिन गुरु भक्ती धारी हो ॥ ५ ॥
करम जाल सब देहि कटाई ।
पाप पुन्न सब सहज नसाई[6] ।
माया बाज़ी हारी हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी निज घर भेद लखावें ।
सुरत चढ़ाय अधर पहुँचावें ।
काल रहा झक मारी[7] हो ॥ ७ ॥

१—द्वार । २—इसलिए । ३—छुटकारा । ४—बरबाद की । ५—रक्षा ।
६—नाश कर देते हैं । ७—झक मारी—परेशान हो रहा है ।

॥ शब्द ३३ ॥

सतगुरु प्यारे ने बसाई,
हिये भक्ति करारी[1] हो ॥ टेक ॥
सुन सुन बचन नसे[2] सब भरमा ।
दूर हुए सब कंटक[3] कर्मा ।
शब्द संग लगी तारी[4] हो ॥ १ ॥
अभ्यास करत हिये बढ़त अनंदा ।
द्रोह मोह का काटा फंदा ।
घूम चली दस द्वारी हो ॥ २ ॥
नभ में निरखा जोत सरूपा ।
त्रिकुटी जाय लखा गुरु रूपा ।
सुन में चंद्र उजारी हो ॥ ३ ॥
भँवरगुफा सोहं धुन पाई ।
मधुर बाँसुरी बजै सुहाई ।
सुनी बीना झनकारी हो ॥ ४ ॥
अलख अगम करी मेहर नियारी[5] ।
राधास्वामी चरन प्रीति बढ़ी भारी ।
अचरज दरस निहारी हो ॥ ५ ॥

१—तेज । २—नाश हुए । ३—काँटे, विघ्न । ४—लगी तारी—गहरा ध्यान लगा । ५—विशेष ।

॥ शब्द ३४ ॥

सतगुरु प्यारे ने निकारे[१],
मन के बिकारा[२] हो ॥ टेक ॥
सतसँग में गुरु लीन लगाई ।
बचन सुना मेरी समझ बढ़ाई ।
मेहर से दीन सहारा हो ॥ १ ॥
अपने चरन की प्रीति बसाई ।
सुरत शब्द की राह बताई ।
भेद दिया घट सारा[३] हो ॥ २ ॥
कर अभ्यास मलिनता नाशी ।
घट में शब्द किया परकाशी ।
सुरत चढ़ी नौ पारा हो ॥ ३ ॥
पाँच रंग निरखे तत[४] सारा[५] ।
चमक बीजली चंद्र निहारा ।
फोड़ा तिल का द्वारा हो ॥ ४ ॥
गुरु पद लख निरखा सत सूरा ।
अलख अगम का पाया नूरा[६] ।
राधास्वामी धाम निहारा हो ॥५॥

१—हटाए । २—दोष । ३—उत्तम । ४—पाँच तत्वों के । ५—असली । ६—प्रकाश ।

॥ शब्द ३५ ॥

सतगुरु प्यारे ने हटाये,
बिघन अनेका हो ॥ टेक ॥
परमारथ की सुध जब लीनी ।
उमँग सहित गुरु सेवा कीनी ।
धर मन में गुरु टेका[1] हो ॥ १ ॥
जग जिव देख ऐंठ[2] रहे मन में ।
निंदा कर कर फूलें तन में ।
जानें न अंत का लेखा[3] हो ॥ २ ॥
माया बिघन अनेक हटाये ।
संशै भरम सब दूर कराये ।
काटी करम की रेखा[4] हो ॥ ३ ॥
सतगुरु दया करूँ क्या बरनन ।
भेद दिया मोहि राधास्वामी चरनन ।
धुर पद अगम अलेखा[5] हो ॥ ४ ॥
वा घर भेद कोई नहिं जाने ।
जोगी ज्ञानी भरम भुलाने ।
पंडित शेख़ और भेषा हो ॥ ५ ॥

१—अवलंब । २—अकड़ । ३—हिसाब किताब । ४—लकीर । ५—अवर्णनीय ।

मेहर से गुरू मोहि जुगत बताई।
धुन में मन और सुरत लगाई।
शब्द तेज घट देखा हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम हिये बिच धारा।
रूप अनूप का ध्यान सम्हारा।
अचरज दरशन पेखा[1] हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

सतगुरू प्यारे ने मेहर से,
दिया भक्ती दाना हो ॥ टेक ॥
सुरत अजान जगत में बहती।
करम भरम सँग दुख सुख सहती।
मिला न ठौर ठिकाना हो ॥ १ ॥
तीरथ बर्त नेम[2] आचारा[3]।
बाचक ज्ञान बिबेक सम्हारा।
निज घर भेद न जाना हो ॥ २ ॥
संत दयाल मिले मोहि जबही।
घर का भेद दिया उन तबही।
भजन भक्ति और ध्याना हो ॥ ३ ॥

१—देखा। २—नियम। ३—आचार व्यवहार।

बचन सुना परतीत बढ़ाई ।
घट परचे[1] दे प्रीति जगाई ।
हिये में उमँग समाना हो ॥ ४ ॥
मन और सुरत लगे घट धुन में ।
गुरू मारग रहे चलत अपन[2] में ।
राधास्वामी धाम निशाना[3] हो ॥५॥

॥ शब्द ३७ ॥

सतगुरु प्यारे ने चुकाया,
काल का क़रज़ा हो ॥ टेक ॥
मेहर से मोहि सतसँग में खींचा ।
भक्ती पौद लगा गुरू सींचा ।
काटे[4] बिघन और हरजा[5] हो ॥१॥
दया गुरू परख बढ़त परतीती ।
सेव करत जागत नई प्रीती ।
बढ़त मेरा दिन दिन दरजा हो ॥२॥
शब्द का मारग दीन लखाई ।
सुत मेरी धुन सँग दीन मिलाई ।
आज घट गगना गरजा हो ॥ ३ ॥

१—अंतरी अनुभव । २—अंतर । ३—लक्ष्य । ४—दूर किए । ५—हानिकारक बातें ।

भरम गुरू मेट दिये मेरे सारे ।
करम भी काट दिये अति भारे[१] ।
काल भी डर से लरज़ा[२] हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी कीन जगत उपकारा ।
चरन सरन दे जीव उबारा ।
तार दई[३] सब परजा[४] हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

सतगुरू प्यारे ने चिताये,
जीव घनेरे[५] हो ॥ टेक ॥
सब जिव भरम रहे जग माहीं ।
भोगन संग अधिक लिपटाहीं ।
पड़े अँधेरे हो ॥ १ ॥
सतगुरू हेला मार[६] सुनावें ।
घट में घर की राह लखावें ।
चेतो याहि उजेरे[७] हो ॥ २ ॥
काल शिकारी मग[८] में ठाड़ा ।
बिघन अनेक लगावत भारा ।
गुरू सँग भाग सबेरे[९] हो ॥ ३ ॥

१—बड़े । २—भयभीत हुआ । ३—तार दई—पार कर दिया । ४—जीवों को ।
५—बहुत । ६—हेला मार—पुकार कर । ७—प्रकाश में । ८—मार्ग । ९—शीघ्र ।

गुरु उपदेश धार लो मन में ।
शब्द संग चढ़ चलो गगन में ।
मत कर देर अबेरे हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया सेव[1] बन आई ।
सुन सुन धुन सुत अधर चढ़ाई ।
पाय गई पद नेड़े[2] हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

सतगुरु प्यारे ने छुड़ाया,
जग ब्योहार असारा हो ॥ टेक ॥
मेहर दया गुरु कस कहुँ गाई ।
सतसँग में मोहि खेंच लगाई ।
भेद दिया घट सारा हो ॥ १ ॥
ध्यान धरत गुरु छबि[3] दरसानी ।
शब्द सुनत मन हुआ अकामी ।
सुरत चली गुरु लारा[4] हो ॥ २ ॥
जोत सरूप लखा नभपुर में ।
गुरु दरशन पाया त्रिकुटी में ।
भौजल पार उतारा हो ॥ ३ ॥

१—सेवा । २—नज़दीक । ३—शोभा । ४—साथ ।

सुन में जाय सरोवर न्हाई ।
हंसन संग मिलाप बढ़ाई ।
निरखा चंद्र उजारा हो ॥ ४ ॥
मुरली बीन सुनी धुन दोई ।
अलख अगम पद परसे[१] सोई ।
राधास्वामी धाम निहारा हो ॥५॥

॥ शब्द ४० ॥

सतगुरु प्यारे ने बजाई,
प्रेम मुरलिया हो ॥ टेक ॥
सुन सुन धुन मोहित हुई मन में ।
प्रेम बढ़ा मेरे रगन रगन[२] में ।
जागी[३] बिरह बिकलिया[४] हो ॥१॥
सतसँग महिमा कस कहुँ गाई ।
शब्द जुगत कस करूँ बड़ाई ।
हरे[५] बिकार सकलिया[६] हो ॥ २ ॥
बिरह अगिन हिये भड़कन लागी ।
बिन पिया दरस चित्त बैरागी[७] ।
काम न देत अक़लिया[८] हो ॥ ३ ॥

१—स्पर्श किए, पहुँची । २—अंग अंग । ३—पैदा हो गई । ४—बेकली ।
५—दूर किए । ६—सभी । ७—उदासीन । ८—अक़्ल ।

सतगुरु प्यारे दया उमँगाई ।
दरशन दे मेरी प्यास बुझाई ।
बरसत प्रेम बदलिया हो ॥ ४ ॥
जग जिव गुरु महिमा नहिं जानें ।
मन मत अपनी फिर फिर ठानें[1] ।
अटके जाय नक़लिया हो ॥ ५ ॥
प्रेम भक्ति की सार न जानी ।
भोगन माहिं रहे अटकानी ।
फिर फिर काल निगलिया[2] हो ॥६॥
मो को सतगुरु लिया अपनाई ।
चरन अमी रस नित्त पिलाई ।
दिन दिन होत मँगलिया हो ॥ ७ ॥
सतगुरु दया गई भौ पारा ।
सुन्न शब्द की सुनी पुकारा ।
झाँका सेत कँवलिया हो ॥ ८ ॥
वहाँ से सुरत अधर को धाई ।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई ।
पहुँची सत धाम अमलिया[3] हो ॥९॥

१—चलाते हैं । २—खाता है । ३—निर्मल ।

राधास्वामी दया बना मम[१] काजा।
अलख अगम का लखा समाजा।
अचल[२] में जाय मचलिया[३] हो ।१०।

॥ शब्द ४१ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुनाई,
जुगत निराली हो ॥ टेक ॥
सुन गुरु बचन हुई परतीती।
गुरु ने सिखाई भक्ती रीती।
लीना मोहि सम्हाली हो ॥ १ ॥
सतसँग करत भाव बढ़ा दिन दिन।
प्रीति लगी अब राधास्वामी चरनन।
खुल गया भेद दयाली हो ॥ २ ॥
उमँग उठी सेवा की भारी।
तन मन धन गुरु चरनन वारी।
हो गई आज निहाली हो ॥ ३ ॥
शब्द भेद गुरु दीन जनाई।
धुन सँग सूरत उमँग लगाई।
निरखा रूप जमाली[४] हो ॥ ४ ॥

१—मेरा। २—अटल स्थान। ३—मचली, प्रेमपूर्वक हठ करने लगी।
४—प्रकाशवान्।

मन इच्छा गुरु दीन सुलाई[१]।
काल करम बल सबहि नसाई।
बिघन बिकार निकाली हो ॥ ५ ॥
मेहर से दिया गुरु खेत जिताई[२]।
सरन धार गुरु चरन समाई।
मिट गई ख़ामख़याली[३] हो ॥ ६ ॥
सतगुरु सुरत सिंगार कराया।
राधास्वामी प्यार से गोद बिठाया।
नित घट होत दिवाली हो ॥ ७ ॥
दरशन कर मेरी गति[४] हुई कैसी।
मीन[५] मगन होय जल में जैसी।
दूर हुए दुख साली[६] हो ॥ ८ ॥
प्यारे राधास्वामी गुन कस कह गावा।
संत रूप धर काज बनावा।
अटल जोत घट बाली[७] हो ॥ ९ ॥
आओ रे आओ जिव सरनी आओ।
राधास्वामी चरनन प्रेम बढ़ाओ।
छूटे सबहि बेहाली[८] हो ॥१०॥

१—नाश कर दिया। २—खेत जिताई—काल कर्म पर विजय दिलाई।
३—ख़ामख़याली—ग़लत बिचार। ४—अवस्था। ५—मछली। ६—कष्ट।
७—जलाई, प्रकाशित की। ८—परेशानी।

मेहर करें राधास्वामी गुरु प्यारे ।
छिन छिन तुमको लेहिं उबारे ।
गति[1] पावो आज मराली[2] हो ॥११।

॥ शब्द ४२ ॥

सतगुरु प्यारे ने खुलाया,
घट प्रेम ख़ज़ाना हो ॥ टेक ॥
मेहर दृष्टि मेरे सतगुरु डाली ।
सुरत शब्द सुन घट में चाली ।
मन हुआ आज निमाना[3] हो ॥१॥
रूप अनूप[4] देख हिये माहीं ।
सुरत निरत दोउ घट घिर आईं ।
मन हुआ प्रेम दिवाना हो ॥ २ ॥
मद और मोह अहँगता[5] त्यागी।
भक्ति नवीन हिये में जागी ।
गुरु पै बल बल जाना हो ॥ ३ ॥
गुरु छबि मोहि लगी अति प्यारी।
बार बार चरनन पर वारी ।
सुध बुध सब बिसराना[6] हो ॥ ४ ॥

१—अवस्था । २—हंस की । ३—दीन अधीन । ४—अद्भुत । ५—अहंकार । ६—भुला दी ।

मेहर दया ले चढ़ी गगन में।
गुरु बतियाँ सुन हुई मगन[1] मैं।
काल और करम हिराना[2] हो ॥५॥
सुन में जा हुई हंसन प्यारी।
अमी धार जहाँ हर दम जारी।
पी पी अमी अघाना[3] हो ॥ ६ ॥
भँवरगुफा जाय लागी ताड़ी।
धुन मुरली जहँ बजत करारी।
छूटा आना जाना हो ॥ ७ ॥
सतपुर सतगुरु दरस दिखानी।
बीन सुनत सुत हुई मस्तानी।
अचरज खेल खिलाना हो ॥ ८ ॥
अलख अगम के पार ठिकाना।
राधास्वामी दरस दिखाना।
चरनन माहि समाना हो ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

सतगुरु प्यारे ने सिंगारी,
सुरत रँगीली हो ॥ टेक ॥
जग में सुरत रही मेरी अटकी।
करम भरम में बहु बिधि[4] भटकी।
गह[5] रही टेक हठीली हो ॥ १ ॥

१—प्रसन्न। २—भुला गए। ३—तृप्त हुआ। ४—तरह। ५—पकड़।

बचन सुनाय गढ़त[१] गुरू कीनी ।
घट का भेद मेहर कर दीनी ।
धुन शब्द सुनाई रसीली[२] हो ॥२॥
सुन सुन धुन सुत नभ पर धाई ।
गगन फोड़ गइ सुन्न में छाई[३] ।
हो गई आज छबीली[४] हो ॥ ३ ॥
बिघन सबहि गुरु दूर कराई ।
काल करम दोउ रहे लजाई ।
माया भई शरमीली[५] हो ॥ ४ ॥
सुन्न शिखर पर चढ़ी सुत बिरहन ।
भँवगुफा धुन पड़ी अब सरवन[६] ।
छोड़ दिया मठ[७] नीली[८] हो ॥ ५ ॥
सतपुर जाय किया अब बासा ।
हंस करें जहाँ नित्त बिलासा ।
सुनी धुन बीन सुरीली हो ॥ ६ ॥
यहाँ से सूरत अधर चढ़ाई ।
राधास्वामी दरस पाय हरखाई ।
हो गई आज सजीली हो ॥ ७ ॥

१—सुधार, दुरुस्ती । २—आकर्षक । ३—गइ छाई—प्रवेश कर गई । ४—सुंदर । ५—शर्मिन्दा । ६—कान में । ७—स्थान । ८—अंधकार का ।

॥ शब्द ४४ ॥

सतगुरु प्यारे ने पढ़ाई,
घट की पोथी हो ॥ टेक ॥
जगत भाव में रही भुलानी ।
बाहरमुख जुगती रही कमानी ।
किरत[1] करी सब थोथी[2] हो ॥ १ ॥
जब से सतगुरु संग लगाई ।
सार बचन मोहि दिये समझाई ।
जाग उठी सुत सोती हो ॥ २ ॥
सतसँग करत बिकार[3] घटाती ।
घट धुन में नित सुरत लगाती ।
दिन दिन कलमल[4] धोती हो ॥ ३ ॥
गुरु चरनन बढ़ता अनुरागा[5] ।
जग भोगन से चित बैरागा[6] ।
धुन में सूरत पोती[7] हो ॥ ४ ॥
दया हुई सुत नभ पर चढ़ती ।
घंटा और संख धुन सुनती ।
निरख रही घट जोती हो ॥ ५ ॥

१—कृति, काररवाई । २—निरर्थक, फ़ज़ूल । ३—दोष । ४—काल के मैल ।
५—प्रेम । ६—उदासीनता । ७—प्रवेश करती ।

बंकनाल धस[1] त्रिकुटी धाई ।
काल करम दोउ रहे मुरझाई ।
माया सिर धुन रोती हो ॥ ६ ॥
सत्तपुरुष के चरनन लागी ।
राधास्वामी धुन सँग सूरत पागी[2] ।
चली प्रेम कियारी बोती हो ॥ ७

॥ शब्द ४५ ॥

सतगुरु प्यारे ने सुनाई ।
प्रेमा बानी हो ॥ टेक ॥
सुन सुन बचन प्रेम भरा मन में ।
फूली नाहिं समाऊँ तन में ।
हरख हरख हरखानी हो ॥ १ ॥
मन और सुरत सिमट कर आये ।
गुरु मूरत हिये में दरसाये ।
हुई चरनन मस्तानी हो ॥ २ ॥
छिन छिन मन अस उमँग उठाई
दरशन रस ले रहूँ अघाई[3]
चरनन पर कुरबानी[4] हो ॥ ३ ॥

१—घुस कर । २—रल मिल गई । ३—संतुष्ट हो कर । ४—निछावर ।

बिन दरशन मोहि चैन न आवे ।
सुमिर सुमिर पिया जिया घबरावे।
भावे[1] अन्न न पानी हो ॥ ४ ॥
बिनय[2] सुनो राधास्वामी प्यारे।
चरनन में मोहि राखो सदा रे।
तुम समरथ पुरुष सुजानी हो ॥५॥

प्रेम प्रकाश-भाग पाँचवाँ

॥ शब्द १ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
प्रीतम दरस दिखादे,
जियरा बहु तड़पे ॥ टेक ॥
काम करम बहु पेच[3] लगाये ।
बिन दरशन मैं रहूँ घबराये ।
मनुआँ नित तरसे ॥ १ ॥
जब जब प्रीतम छबि[4] चित लाऊँ ।
नैनन से जल धार बहाऊँ ।
हियरा बहु धड़के ॥ २ ॥
प्रीतम पीर सतावत निस दिन ।
बिन सतसंग दुखित रहे तन मन।
भाली[5] ज्यों खड़के ॥ ३ ॥

१—अच्छा लगे। २—प्रार्थना। ३—दाँव। ४—रूप। ५—बरछी।

जो कोई प्रीतम महिमा गावे ।
लीला और बिलास[1] सुनावे ।
मनुआँ अति हरखे ॥ ४ ॥
जब राधास्वामी का दरशन पाऊँ ।
उमँग उमँग मैं नित गुन गाऊँ ।
घट आनँद बरसे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

अरी हे सुहावन आली[2],
प्रीतम ख़बर सुना दे,
मनुआँ नित भटके ॥ टेक ॥
जब से मैं बिछड़ी स्वामी प्यारे से ।
जगत माहिं बँध रही तन मन से ।
बिरह[3] घर की खटके ॥ १ ॥
जब लग गुरु का संग न पावे ।
घर की ओर उलट कस[4] जावे ।
जगत मोह झटके[5] ॥ २ ॥
दया होय सतगुरु आय मेलें[6] ।
घर का भेद सुना सुर्त पेलें[7] ।
घट धुन सँग लटके ॥ ३ ॥

१—प्रीतम से मिलने का विशेष आनंद । २—सखी । ३—वियोग की पीड़ा ।
४—कैसे । ५—झटका देकर नीचे खींचता है । ६—मिलें । ७—प्रवेश करावें ।

मिल गुरु से अब लगन[1] बढ़ाऊँ।
ध्यान धरत घट शब्द जगाऊँ।
रही री नाम रट[2] के ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम ओर सुत दौड़ी।
सुन सुन शब्द हुई घट पोढ़ी[3]।
चली गुरु सँग गठ[4] के ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

अहो हे दयाला सतगुरु,
मेरी सुरत चढ़ा दो,
जग में तपन[5] घनेरी[6] ॥ टेक ॥
सारी बैस जगत सँग बीती।
फल नहिं मिला रही कर[7] रीती[8]।
दिन दिन फँसियाँ अँधेरी ॥ १ ॥
सतगुरु मिले भाग मेरा जागा।
संशै भरम सब छिन में भागा।
दृढ़ कर चरन गहे री ॥ २ ॥
शब्द भेद दे किया निहाला।
बचन सुना काटा जम जाला।
घट शब्द सुने री ॥ ३ ॥

१—प्रेम। २—सुमिरन करके। ३—पक्की। ४—गाँठ बाँध कर। ५—जलन, कष्ट। ६—बहुत। ७—हाथ। ८—खाली।

सुन सुन धुन मेरा मन हुआ लीना ।
घट में दरशन सतगुरु चीना[1] ।
आनँद आज लये री ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से अधर चढ़ाया ।
अद्भुत सुख घट में दिखलाया ।
सब दुख दूर टले री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अहो मेरे प्यारे सतगुरु,
प्रेम दान मोहि दीजे,
दुख सुख बहु भरमावत ॥ टेक ॥
दया करी मोहि संग लगाया ।
मारग का मोहि भेद जनाया ।
घट शब्द जगावत ॥ १ ॥
प्रेम बिना मन होय न सूरा[2] ।
संशै भरम नहिं होवत दूरा ।
धुन रस नहिं पावत ॥ २ ॥
याते सतगुरु दया बिचारो ।
प्रेम दान मोहि देव कर प्यारो ।
सूरत अधर चढ़ावत ॥ ३ ॥

१—पहचाना । २—बहादुर ।

शब्द शब्द धुन सुन रस पावत।
अधर जाय निज भाग जगावत।
गुरु गुन उमँगत गावत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से पहुँची सुन में।
वहाँ से चल लागी सत[1] धुन में।
सतपुर बीन सुनावत ॥ ५ ॥
अलख लोक जाय डाला डेरा।
अगम लोक जाय किया बसेरा[2]।
राधास्वामी धाम दिखावत ॥६॥
राधास्वामी चरन जाय लिपटानी।
प्रेम बढ़ा अब कहाँ समानी।
आनँद बरना न जावत ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अहो मेरे प्यारे सतगुरु,
अचरज शब्द सुना दो,
धुन में सुत अटके ॥ टेक ॥
काल करम मोहि अति भरमाते।
मन इंद्री बहु बिघन लगाते।
भोगन में भटके ॥ १ ॥

१—सत्तलोक की। २—निवास।

दया करो मेरे सतगुरु प्यारे ।
मेहर से लो मोहि आज सम्हारे ।
जगत भाव[1] झटके[2] ॥ २ ॥
दिन दिन प्रीति बढ़े तुम चरनन ।
काट देव बंधन तन मन धन ।
सुरत अधर सटके[3] ॥ ३ ॥
सुन सुन धुन नभ ऊपर धावे ।
गगन जाय धुन गरज सुनावे ।
सुन में जाय मटके[4] ॥ ४ ॥
धुन मुरली और बीन बजावे ।
अलख अगम धुन अधिक सुहावे ।
रही राधास्वामी रट के ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

अहो मेरे प्यारे सतगुरु,
अमृत धार बहा दो,
तन मन सुत भींजे ॥ टेक ॥
प्रेम बिना सब करनी फीकी ।
नेकहु मोहि न लागे नीकी[5] ।
घट धुन रस दीजे ॥ १ ॥

१—मोह । २—नीचे को झटकता है । ३—तेज़ी से जावे । ४—हर्ष से नाचे । ५—अच्छी ।

मैं हूँ नीच अधम नाकारा[1] ।
तुम चरनन का लीन सहारा ।
मोहि अपना कीजे ॥ २ ॥
दीन अधीन पड़ा तुम द्वारे ।
तुम बिन को मेरी दया बिचारे ।
मोहि सरना लीजे ॥ ३ ॥
तुम समरथ क्यों देर लगाओ ।
दरशन दे मेरी सुरत चढ़ाओ ।
आयू छिन छिन छीजे[2] ॥ ४ ॥
प्रेम भंडार तुम्हारे भारी ।
मेहर से खोलो गगन किवाड़ी ।
मन और स्रुत रीझे[3] ॥ ५ ॥
आओ रे जीव सरन में आओ ।
सतगुरु से अब प्रीति लगाओ ।
अमृत रस पीजे ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेरा काज सँवारा ।
खोला आदि शब्द भंडारा ।
स्रुत धुन सँग सीझे[4] ॥ ७ ॥

१—निकम्मा । २—कम हो रही है । ३—प्रसन्न हों । ४—एक रस हो जावे ।

॥ शब्द ७ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
जुड़ मिल गुरु गुन गाओ,
उनकी मेहर अपारी ॥ टेक ॥
भरम रही थी बहु बिधि जग में ।
अटक रही थी जहँ तहँ मग[१] में ।
उन सीधी राह दिखा री ॥ १ ॥
प्यार किया मोहि संग लगाया ।
घट का भेद अजब समझाया ।
जुगती सहज बता री ॥ २ ॥
धर हिये ध्यान लखा[२] गुरु रूपा ।
सुन सुन शब्द तजा भौ[३] कूपा[४] ।
हियरे हरख बढ़ा री ॥ ३ ॥
दया करी घट प्रीति बढ़ाई ।
सोता मनुआँ लीन जगाई ।
सूरत अधर चढ़ा री ॥ ४ ॥
को सके अस सतगुरु गुन गाई ।
को जाने उन अधिक बड़ाई ।
अबला[५] जीव उबारी ॥ ५ ॥

१—रास्ते । २—देखा । ३—संसार । ४—कुआँ । ५ निर्बल, कमजोर ।

जनम जनम का मारा पीटा ।
जोन[1] जोन में काल घसीटा ।
मेहर से लीन बचा री ॥ ६ ॥
मैं गुरु प्रीतम लेत मनाई ।
छिन छिन राधास्वामी चरन धियाई ।
उन कीना मोर उपकारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
गुरु सँग फाग रचाओ,
मिला औसर भारी ॥ टेक ॥
ऋतु फागुन[2] अब आन मिली है ।
गुरु प्यारे से प्रीति ठनी[3] है ।
चूके मत अब प्यारी ॥ १ ॥
प्रेम रंग घट माट[4] भरावो ।
गुरु पै छिड़क छिड़क हुलसावो ।
निरखो शोभा न्यारी ॥ २ ॥
सुरत अबीर मलो चरनन में ।
प्रीति प्रतीति धरो निज मन में ।
तन मन धन देव वारी[5] ॥ ३ ॥

१—योनी । २—ऋतु फागुन—मनुष्य शरीर से प्रयोजन है । ३—लगी ।
४—मटका, घड़ा । ५—देव वारी—वार देवो, निछावर कर दो ।

सेवा कर गुरु लेव रिझाई ।
प्रेमी जन सँग आरत गाई ।
देखो अजब बहारी ॥ ४ ॥
अस औसर नहिं बारम्बारा ।
गुरु चरनन करो प्रेम अधारा[1] ।
जग भय लाज बिसारी ॥ ५ ॥
गुरु भक्ती की महिमा भारी ।
जाने जो जिन जुगत सम्हारी ।
प्रेम रँग भींजे सारी ॥ ६ ॥
परम गुरू मेरे प्रीतम प्यारे ।
राधास्वामी यह सब खेल खिलारे ।
उन पर जाऊँ बलिहारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
हिल मिल गुरु सँग चालो,
मग[2] में काल का पहरा ॥ टेक ॥
माया जग में जाल बिछाई ।
भोग दिखा लिया जीव फँसाई ।
दुख सुख पात[3] घनेरा[4] ॥ १ ॥

१—अवलंब, सहारा । २—मार्ग, रास्ते । ३—पाते हैं । ४—बहुत ।

बिन गुरु नहिं कोई बंदीछोड़ा[१]।
वे काटें बल काल कठोरा।
उन सँग बाँधो बेड़ा[२] ॥ २ ॥
गुरु चरनन लाओ प्रीति घनेरी।
छूट जाय चौरासी फेरी।
कर दें आज निबेड़ा[३] ॥ ३ ॥
बचन सार उन चित दे सुनना।
सुन सुन फिर नित मन में गुनना[४]।
छूटे मेरा तेरा ॥ ४ ॥
गुरु उपदेश लेव भ्रम भंगा[५]।
गुरु रक्षा लेव अपने संगा।
चलो घर आज सबेरा ॥ ५ ॥
शब्द डोर गह[६] घट में चढ़ना।
गुरु सरूप को अगुआ[७] रखना।
बिघन न आवे नेड़ा[८] ॥ ६ ॥
चढ़ चल पहुँचो सहसकँवल में।
गुरु सरूप लख गगन मँडल में।
निरखो चंद्र उजेरा[९] ॥ ७ ॥

१—बंधन छुड़ाने वाला। २—बाँधो बेड़ा—संबंध क़ायम करो। ३—छुटकारा। ४—विचारना। ५—भ्रम भंगा—भरम नाश करने वाला। ६—पकड़ कर। ७—आगे चलने वाला। ८—नज़दीक। ९—प्रकाश।

मुरली धुन चढ़ गुफा सम्हारी।
धुन बीना सुनी तिस[1] परे न्यारी।
किया सतपुर डेरा ॥ ८ ॥
अलख अगम की चढ़ गई घाटी।
राधास्वामी दर की हो गई भाटी[2]।
किया निज धाम बसेरा ॥ ९ ॥

॥ शब्द १० ॥

अरी हे पड़ोसिन प्यारी,
कोई जतन बता दो,
कस मिलै प्रीतम प्यारा ॥टेक॥
बिरह अगिन नित भड़कत तन में।
पिया की पीर नित खटकत मन में।
सहत रहूँ दुख भारा ॥ १ ॥
कोई बैद[3] मिलें जब भारी।
रोग बूझ[4] दें दवा बिचारी।
तब कुछ पाऊँ सहारा ॥ २ ॥
सतगुरु ऐसे बैद कहावें।
प्रीतम से वे तुरत मिलावें।
दे निज चरन अधारा ॥ ३ ॥

१—उसके। २—भाट, प्रशंसा करने वाली। ३—हकीम। ४—समझ कर।

चलो पड़ोसिन गुरु ढिग[1] जावें ।
बिनती कर निज काज बनावें ।
छोड़ें जग अँधियारा ॥ ४ ॥
सतगुरु हैं वे दीनदयाला ।
मेहर से छिन में करें निहाला[2] ।
अस होय जीव गुज़ारा[3] ॥ ५ ॥
प्रेम प्रीति गुरु चरनन लावें ।
आरत[4] कर उन बहुत रिझावें[5] ।
तन मन चरनन वारा ॥ ६ ॥
भेद सुनावें अतिसै[6] भारी ।
प्रीतम आपहि गुरु तन धारी ।
करते जीव उबारा ॥ ७ ॥
कर पहिचान लिपट रहें चरनन ।
प्रीति प्रतीति बढ़ावें छिन छिन ।
तज सब भरम पसारा ॥ ८ ॥
राधास्वामी धाम से सतगुरु आवें ।
जीव दया वे हिये बसावें ।
उन गति अगम अपारा ॥ ९ ॥

१—पास । २—सरशार । ३—होय गुज़ारा—काम बने । ४—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २ । ५—प्रसन्न करें । ६—बहुत ।

भाग उदय हुए आज हमारे ।
मिल गये राधास्वामी प्रीतम प्यारे ।
लखा निज रूप नियारा[1] ॥१०॥
आओ पड़ोसिन गाओ बधाई ।
राधास्वामी महिमा अगम अथाई[2]
दम दम शुकर बिचारा ॥११॥

॥ शब्द ११ ॥

अरी हे सुहागिन हेली[3],
तू बड़भागन भारी,
तोहि मिल गये निज भरतारा[4] ॥टेक॥
तू करे आनँद प्रीतम साथा ।
चरनन में तेरा मन रहे राता[5] ।
तोहि मिल गये गुरू दातारा ॥१॥
मैं पड़ी आय यहाँ भूल भरम में ।
अटक रही थोथे[6] करम धरम में ।
भेद न पाया सच करतारा ॥२॥
अब करो मदद मेरी तुम मिल कर ।
सतगुरु पै ले चलो दया कर ।
वे करें मेहर अपारा ॥३॥

१—अद्भुत । २—अथाह, अपार । ३—हे आली, हे सखी । ४—भर्त्तार, स्वामी । ५—लीन । ६—व्यर्थ के ।

दुख सुख सहत रहूँ मैं भारी ।
बिन प्रीतम मैं रहूँ दुखारी ।
गुरु मोहि देहि सहारा ॥ ४ ॥
प्रीतम का मोहि भेद बतावें ।
मिलने की मोहि जुगत लखावें ।
मिले घट शब्द अधारा[1] ॥ ५ ॥
गुरु सरूप हिये माहि धियाऊँ ।
मेहर पाय सुत अधर[2] चढ़ाऊँ ।
निरखूँ बिमल बहारा ॥ ६ ॥
अस करनी कर मिलूँ पिया से ।
राधास्वामी चरन पकड़ हिया जिया से ।
पहुंचूँ धुर दरबारा ॥ ७ ॥
सतगुरु दृष्टि मेहर की कीन्ही ।
चरन सरन मोहि निज कर दीन्हीं ।
छिन में काज सँवारा[3] ॥ ८ ॥
सुरत चढ़ाय अधर पहुँचाई ।
घट में राधास्वामी दरस दिखाई ।
हुआ अब जीव उधारा[4] ॥ ९ ॥

१—अवलंब । २—अंतर में । ३—बनाया । ४—उद्धार ।

॥ शब्द १२ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
गुरु बिन कौन उतारे,
मोहि भौसागर पारा ॥ टेक ॥
गुरु ही मात पिता पति प्यारे ।
गुरु ही सच समरथ करतारे[१] ।
गुरु ही मेरे प्रान आधारा ॥ १ ॥
जग में फैल रहा तम[२] भारी ।
करमन में भरमे जिव सारी[३] ।
गुरु बिन घोर अँधियारा ॥ २ ॥
बचन सुना गुरु समझ बढ़ावें ।
घट में शब्द भेद दरसावें ।
निरखे अजब[४] उजारा[५] ॥ ३ ॥
याते गुरु सँग जोड़ो नाता[६] ।
मन रहे उन चरनन में राता[७] ।
गुरु बिन नहिं और सहारा ॥ ४ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर गहना[८] ।
आज्ञा उनकी सिर पर धरना ।
ले शब्द का मारग सारा ॥ ५ ॥

१—कर्त्तार । २—अंधकार । ३—सभी । ४—अद्भुत । ५—प्रकाश । ६—संबंध । ७—लीन । ८—पकड़ना ।

घट में निस दिन करो कमाई।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाई।
काल से होय छुटकारा ॥ ६ ॥
राधास्वामी परम गुरू दातारे[1]।
या बिधि[2] जीव को लेहिं उबारे।
उन चरनन धरो प्रेम पियारा॥७॥

॥ शब्द १३ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
घट में शब्द जगाओ,
शब्दहि करे निरवारा ॥ टेक ॥
सतगुरु खोज पड़ो उन चरना।
सुन सुन बचन चित्त में धरना।
वे तोहि लेहिं सुधारा ॥ १ ॥
शब्द भेद गुरु देहिं बताई।
धुन में मन और सुरत लगाई।
सुन अनहद झनकारा ॥ २ ॥
गुरु चरनन में प्रीति बढ़ाना।
उमँग सहित नित शब्द कमाना।
घट में होत उजारा[3] ॥ ३ ॥

१—दयालु। २—तरह। ३—प्रकाश।

मन माया के बिघन हटाओ।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाओ।
निरखो अजब बहारा ॥ ४ ॥
राधास्वामी सूरत लीन सिंगारी।
तब भौसागर पार सिधारी[1]।
अस हुआ सहज उधारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

अरी रे सहेली प्यारी,
चेत करो सतसंगा,
छूटे कलमल[2] दाग़ा ॥ टेक ॥
बिन सतसंग भरम नहिं भागे।
शब्द गुरू में प्रीति न जागे।
छूटे नहिं मति[3] कागा[4] ॥ १ ॥
याते गुरु उपदेश सम्हारो।
प्रीति प्रतीति चरन में धारो।
तब सतसँग रँग लागा ॥ २ ॥
ध्यान धरत मन होत अनंदा।
शब्द सुनत कटते जम फंदा।
भाग उदय होय जागा ॥ ३ ॥

१—गई। २—काल के मैल के। ३—बुद्धि। ४—कौए की।

जग ब्योहार अब नेक[1] न भावे[2]।
गुरु चरनन मन छिन छिन धावे[3]।
दिन दिन बढ़त अनुरागा ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से लिया अपनाई।
निज चरनन में सुरत लगाई।
काल देश अब त्यागा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
गुरु का ध्यान सम्हारो,
मनमुखता सहज नसावे[4] ॥टेक॥
सतसँग कर बढ़ा भाव गुरु में।
प्रीति लगी अब चरन गुरू में।
नित दरशन को धावे ॥ १ ॥
गुरु मूरत हिये माहि बसानी।
छिन छिन गुरु के पास रहानी।
नई नई उमँग उठावे ॥ २ ॥
सेवा को लोचे[5] मन छिन छिन।
प्रेम बढ़त गहिरा अब दिन दिन।
गुरु बिन कछु ना सुहावे ॥ ३ ॥

१—जरा। २—अच्छा लगे। ३—दौड़े। ४—नाश हो जावे, दूर हो। ५—चाहे।

ध्यान धरत मन चढ़े अकाशा ।
देखे घट में बिमल बिलासा ।
शब्दारस पी त्रिप्तावे[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से सूरत जागे ।
धुन डोरी गह[2] घर को भागे ।
चरनन माहिं समावे ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
गुरु की महिमा भारी,
धर उन चरनन प्यारा ॥ टेक ॥
गुरु पूरे सतपुर के बासी ।
उन सँग पावे सहज बिलासी ।
सहज करें भी पारा ॥ १ ॥
गुरु पूरे हितकारी साँचे ।
उन सँग जले न जग की आँचे[3] ।
सब बिधि लेहिं सुधारा ॥ २ ॥
दीनदयाल है नाम गुरू का ।
दृढ़ कर पकड़ो चरन गुरू का ।
कर उन नाम अधारा ॥ ३ ॥

१—तृप्त हो, संतुष्ट हो । २—पकड़ कर । ३—आग में ।

सतगुरु घर की बाट[1] लखावें ।
बल अपना दे सुरत चढ़ावें ।
शब्द सुनावें सारा ॥ ४ ॥
मारग में गुरु पद दरसावें ।
सत्तपुरुष का रूप लखावें ।
पहुँचे राधास्वामी धाम अपारा ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
जग है बिष की खाना,[2]
यासे रहो होशियारा ॥ टेक ॥
माया ने रचे भोग बिलासा ।
घेरे[3] जीव दिखाय तमाशा ।
जाल बिछाया भारा ॥ १ ॥
मन इच्छा सँग जीव मलीना ।
रोग सोग और दुख सुख सहना ।
करम भार सिर डारा ॥ २ ॥
कुल कुटम्ब और भाई बिरादर ।
स्वारथ सँग सब करते आदर ।
बिन धन देयँ न सहारा ॥ ३ ॥

१—रास्ता । २—भंडार । ३—फँसाए ।

याते चेत चलो मेरे भाई।
गुरू बिन नहिं कोइ और सहाई।
उन चरनन में लाओ प्यारा ॥४॥
गुरू से शब्द का ले उपदेशा।
कर अभ्यास तजो यह देशा।
राधास्वामी नाम का कर आधारा ५

॥ शब्द १८ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
प्रेम की दौलत भारी,
छिन छिन भक्ति कमाओ ॥टेक॥
भक्ति बिना सब बिरथा[1] करनी।
थोथा[2] ज्ञान ध्यान चित धरनी।
यह नहिं मुक्ति उपाओ ॥ १ ॥
प्रेम बिना कोइ जाय न पारा।
पहुँचे नहिं सतगुरू दरबारा।
क्यों बिरथा बैस[3] गँवाओ ॥ २ ॥
ऐसा प्रेम गुरू से पावे।
जो कोइ उनकी कार[4] कमावे।
उन चरनन पर सीस नवाओ ॥३॥

१—व्यर्थ, फ़जूल। २—बेमतलब। ३—वयस, उम्र। ४—जुगत, काररवाई।

दीन ग़रीबी धारो मन में।
प्रीति बसाओ तुम निज मन में।
घट में शब्द जगाओ ॥ ४ ॥
दया मेहर से सुरत चढ़ावें।
धुर पद में वे ले पहुँचावें।
राधास्वामी चरन समाओ ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
दूत बिरोधी भारी,
गुरु बल इनको मारो ॥ टेक ॥
काम क्रोध और मोह और लोभा।
मद और मान बड़ाई शोभा।
इनसे सब कोइ हारो ॥ १ ॥
गुरु की दया ले इनसे लड़ना।
सुरत शब्द ले ऊपर चढ़ना।
या बिधि[1] इनको टारो[2] ॥ २ ॥
जब लग घट में घाट न बदले।
मन और सुरत रहें यहाँ गदले[3]।
फिर फिर भरमें वारो[4] ॥ ३ ॥

१—तरह। २—हटाओ। ३—मैले। ४—इसी तरफ़ यानी भौसागर में।

जिस पर मेहर गुरू की होई ।
पार जाय निरमल होय सोई ।
काल जाल से न्यारो ॥ ४ ॥
डरत रहो बैरियन से भाई ।
राधास्वामी चरन ओट[1] गहो आई ।
सहज करें निरवारो[2] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
गुरु की सरन सम्हारो,
काज करें वे पूरा ॥ टेक ॥
सरन धार चरनन में धाओ ।
ध्यान लाय सुत अधर चढ़ाओ ।
बाजे अनहद तूरा[3] ॥ १ ॥
प्रीति प्रतीति धरो गुरु चरनन ।
करम भरम सब कीन्हे मरदन[4] ।
गुरु बल मन हुआ सूरा[5] ॥ २ ॥
सूर होय गगनापुर धावत ।
गुरु को पल पल माहिं रिझावत[6] ।
निरखत अद्भुत नूरा[7] ॥ ३ ॥

१—शरण । २—छुटकारा । ३—बाजा । ४—मर्दन, नाश । ५—बहादुर ।
६—प्रसन्न करता है । ७—प्रकाश ।

काल करम से नाता[1] छूटा।
जगत पसार लगा सब झूठा।
खोजत चली पद मूरा[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब मुझ पर।
सहज पहुँचाय दिया मोहि धुर घर।
हुई उन चरनन धूरा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
यह जग रैन[3] का सुपना,
करो काज सबेरा[4] ॥ टेक ॥
भोग बिलास जगत के काँचे[5]।
खोज करो तुम सतगुरु साँचे।
उन सँग बाँधो बेड़ा[6] ॥ १ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा।
राधास्वामी चरनन बाँधो आसा।
मत कर बहुत अबेरा[7] ॥ २ ॥
गुरु सरूप का धर हिये ध्याना।
दिन दिन प्रीति प्रतीति बढ़ाना।
मिटे चौरासी फेरा[8] ॥ ३ ॥

१—संबंध। २—मूल, आदि। ३—रात। ४—जल्दी। ५—झूठे। ६—बाँधो बेड़ा—संबंध क़ायम करो। ७—देर। ८—चक्कर।

तन मन से सुत होकर न्यारी ।
गुरु की दया ले अधर सिधारी[१] ।
गगन मँडल किया डेरा[२] ॥ ४ ॥
सतगुरु ध्यान धरत फिर चाली ।
धुन बीना सुन हुई निहाली[३] ।
किया राधास्वामी धाम बसेरा[४]।५।

॥ शब्द २२ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
हूँगता[५] बैरन भारी,
दीन ग़रीबी धारो ॥ टेक ॥
जब लग मन में मान समाना ।
घट अंतर में दख़ल न पाना ।
मद[६] और मोह बिसारो ॥ १ ॥
बिना दीनता दया न पावे ।
बिना दया नहिं शब्द समावे ।
जाय न भौ के पारो ॥ २ ॥
नीच निकाम[७] जान अपने को ।
निपट[८] अजान मान अपने को ।
तब पाय मेहर अपारो ॥ ३ ॥

१—गई । २—निवास । ३—सरशार । ४—निवास । ५—अहंकार । ६—अहंकार । ७—निकम्मा । ८—बिलकुल ।

अस घट प्रेम गुरू का जागे।
झीनी सुरत चरन में लागे।
सुन अनहद झनकारो ॥ ४ ॥
सुन सुन शब्द गगन को धावे।
वहाँ से सतपुर जाय समावे।
राधास्वामी चरन निहारो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
मन से क्यों तू हारे,
गुरु हैं तेरे सहाई ॥ टेक ॥
राधास्वामी को तुम समरथ मानो।
प्रीति प्रतीति चरन में आनो[1]।
काल से लेंहि बचाई ॥ १ ॥
दृढ़ कर उनकी सरन सम्हारो।
हानि लाभ जग कुछ न बिचारो।
घट में प्रेम जगाई ॥ २ ॥
राधास्वामी तेरी दया बिचारें।
काल बिघन वे सबही टारें[2]।
मन से खूँट[3] छुड़ाई ॥ ३ ॥

१—लाओ। २—दूर करें। ३—संबंध।

मेहर से घट में दरस दिखावें।
शब्द शब्द धुन अजब सुनावें।
सूरत अधर चढ़ाई ॥ ४ ॥
गुरु पद परस[1] अधर को धावे।
सत्तपुरुष का दरशन पावे।
राधास्वामी धाम लखाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
क्यों न सुने गुरु बैना,
वे हैं बंदीछोड़ा[2] ॥ टेक ॥
सतसँग कर उन सहित पिरीती।
बचन सुनो हिये धर परतीती[3]।
छिन छिन बंधन तोड़ा ॥ १ ॥
भूल भरम तेरा सबही मिटावें।
घट में धुन सँग सुरत लगावें।
सुन ले अनहद घोरा[4] ॥ २ ॥
छिन छिन वे तेरी करें सफ़ाई।
अटक भटक सब देंहि तुड़ाई।
मन इच्छा मुख मोड़ा ॥ ३ ॥

१—स्पर्श करके। २—बंधन छुड़ाने वाले। ३—सहित पिरीती—प्रेम के साथ
४—शब्द।

घट में अचरज दरस दिखावें ।
मन और सूरत अधर चढ़ावें ।
मारें काल कठोरा[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी अपनी मेहर करावें ।
तब घट में अस मौज दिखावें ।
सुत निज चरनन जोड़ा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

अरी हे सहेली प्यारी,
क्या सोवे जग माहीं,
जाग चलो घर अपने ॥ टेक ॥
बिन गुरु दया कोई नहिं जागे ।
मेहर बिना नहिं घट में लागे ।
अटके जग सुपने ॥ १ ॥
गुरु पूरे का जो सँग पावे ।
करम भरम तज घट में धावे ।
घर की ओर भजने ॥ २ ॥
याते सतसँग सतगुरु धारो ।
सुरत शब्द अभ्यास सम्हारो ।
सँग मन माया तजने[2] ॥ ३ ॥

१—निर्दय । २—छोड़ो ।

गुरु सँग प्रीति बढ़ाओ दिन दिन।
धुन में सुरत लगाओ छिन छिन।
चरनन में पकने ॥ ४ ॥
दीन होय गहो राधास्वामी सरना।
राधास्वामी नाम हिये में धरना।
चरनन में रचने ॥ ५ ॥

बचन १३

प्रेम तरंग—भाग पहला

॥ शब्द १ ॥

मेरे हिये में बजत बधाई।
संत सँग पाया रे ॥ १ ॥
ढूँढ़ फिरी जग में बहुतेरा।
भेद कहीं नहिं पाया रे ॥ २ ॥
संत मता अति ऊँचा गहिरा।
बेद कतेब[1] न जाना रे ॥ ३ ॥
बड़भागी कोइ बिरले प्रेमी।
तिनको मरम[2] जनाया रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से जीव उबारें।
उन महिमा अगम अपारा रे॥५॥

१—अंजील इत्यादि धार्मिक पुस्तकें। २—भेद।

॥ शब्द २ ॥

मेरे धूम[1] भई अति भारी ।
दरस राधास्वामी कीन्हा रे ॥ १ ॥
भाग जगे मेरे धुर के[2] सजनी ।
आज रूप रस[3] लीन्हा रे ॥ २ ॥
कौन कहे महिमा अब उनकी ।
जिन प्रेम दान गुरु दीन्हा रे ॥ ३ ॥
सुखी भया अब तन मन सारा ।
हुई गुरु चरन अधीना[4] रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन रही लिपटानी ।
अमृत हर दम पीना रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

राधास्वामी छबि निरखत मुसकानी ।
तन मन सुध बिसरानी[5] रे ॥ १ ॥
बिन दरशन कल नाहिं पड़त है ।
भावे[6] अन्न न पानी रे ॥ २ ॥
देखत रहूँ री रूप गुरु प्यारा ।
छिन छिन मन हरखानी रे ॥ ३ ॥
दया करी गुरु दीन दयाला ।
हुई जग से अलगानी रे ॥ ४ ॥

१—हर्ष । २—धुर के—पूरे, भरपूर । ३—आनन्द । ४—दीन । ५—भूल गई । ६—अच्छा लगे ।

लिपट रहूँ हर दम चरनन से ।
राधास्वामी जान पिरानी[1] रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुन सुन महिमा गुरु प्यारे की ।
हुई मैं दरस दिवानी[2] रे ॥ १ ॥
धाय धाय चरनन में धाई ।
परगट रूप दिखानी रे ॥ २ ॥
मोहित हुई अचरज छबि[3] निरखत ।
तन मन सुद्ध भुलानी रे ॥ ३ ॥
बार बार बल जाउँ चरन पर ।
कस गुन गाउँ बखानी रे[4] ॥ ४ ॥
राधास्वामी जान जान के जानाँ[5] ।
उन चरनन लिपटानी रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

कस प्रीतम से जाय मिलूँ मैं ।
कोई जतन बताओ रे ॥ १ ॥
तड़प रही मैं बिन पिया प्यारे ।
कोई दरस दिखाओ रे ॥ २ ॥
रैन[6] दिवस मोहि चैन न आवे ।
किस बिधि करूँ उपाओ रे ॥ ३ ॥

१—प्राण । २—पागल । ३—शोभा । ४—कह कर । ५—जान के जानाँ—प्राणों के प्राण । ६—रात ।

बिरह अगिन नित सुलगत भड़कत।
प्रेम धार बरसाओ रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल दरस देव अब की।
तन मन शांत धराओ रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

भाग चलो जग से तुम अब के।
सतसँग में मन दीजो रे ॥ १ ॥
इंद्री भोग त्याग[1] देव मन से।
चरन सरन गुरु लीजो रे ॥ २ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा।
सुरत शब्द रँग भींजो रे ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति सहित[2] गुरु सेवा।
तन मन धन से कीजो रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन बसाय हिये में।
नित्त सुधा[3] रस पीजो रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

गुरु सतसंग करो तन मन से।
बचन सुनत नित जागो रे ॥ १ ॥
मोह नींद में बहु दिन सोये।
अब गुरु चरनन लागो रे ॥ २ ॥

१—छोड़। २—साथ। ३—अमृत।

ले उपदेश शब्द का गुरु से।
घट अंतर में झाँको[1] रे ॥ ३ ॥
उमँग अंग ले जोड़ दृष्टि को।
गुरु सरूप को ताको[1] रे ॥ ४ ॥
राधास्वामीदया निरख निजहिय में।
जग से छिन छिन भागो रे ॥ ५ ॥

प्रेम तरंग—भाग दूसरा

॥ शब्द १ ॥

राधास्वामी दीन दयाला,
मेरे सद किरपाला,
मोहि कीन निहाला रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥१॥
राधास्वामी परम उदारा,
मेरे अति दातारा,
मोहि लीन उबारा रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥२॥
राधास्वामी प्रान पियारे,
मेरी आँखों के तारे,
मेरे जग उजियारे रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥३॥

१—देखो।

राधास्वामी लीन सुधारा,
मेरे मन को सँवारा,
मेरा किया उपकारा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥४॥
राधास्वामी शब्द जनाई,
मेरी सुरत चढ़ाई,
मोहि चरन लगाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥५॥

॥ शब्द २ ॥

राधास्वामी संग लगाई,
मोहि बचन सुनाई,
हिये प्रीति बढ़ाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥१॥
राधास्वामी सेवा धारी,
उन नैन[1] निहारी,[2]
हिये भई उजियारी रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥२॥
राधास्वामी भेद बताया,
घट शब्द सुनाया,
सोता मनुआँ जगाया रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥३॥

१—नेत्र। २—देखे।

मन उमँगत चाला,
घट देख उजाला,
लखा[१] रूप दयाला रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥४॥

त्रिकुटी घन[२] गाजा,[३]
सुन[४] सारँग बाजा,
मुरली धुन साजा रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥५॥

सतपुर माँहि धावत,
धुन बीन सुनावत,
करी सतगुरु आरत[५] रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥६॥

लख अलख सरूपा,
मिल अगम कुल भूपा,[६]
गई धुर धाम अनूपा[७] रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥७॥

राधास्वामी रूप निहारा,
हुआ आनँद भारा,[८]
सब काज सँवारा रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥८॥

१—देखा। २—बादल। ३—गरजा। ४—सुन्न स्थान में। ५—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। ६—कुल भूपा—सब रचना के भूप या राजा। ७—अद्भुत। ८—बड़ा।

॥ शब्द ३ ॥

परम पुरुष प्यारे राधास्वामी
धर संत सरूपा, जग आये री।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे ॥१॥

करी मेहर घनेरी,[1] जिव भाग जगे री,
दल[2] काल दले[3] री, मुख माया मोड़ी रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥२॥

दिया घर का सँदेशा, किया शब्द उपदेशा,
मेटा सब ही अँदेशा,[4] तज काल कलेशा रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥३॥

मगन[5] हुई सुन सतगुरू बचना,
नित चरन सरन में पकना,
भोग जग सब ही तजना रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥४॥

सुत शब्द लगाऊँ, गुरू रूप धियाऊँ,
मन चरनन लाऊँ, नित राधास्वामी गाऊँ रे।
राधास्वामी३, प्यारे राधास्वामी रे॥५॥

१—बहुत। २—फ़ौज। ३—नाश की। ४—भय। ५—प्रसन्न।

॥ शब्द ४ ॥

चहुँ दिस धूम[१] मची, सतगुरु अब आये,
जग जीव जगाये, उन लिया अपनाई रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे ॥१॥

राधास्वामीपरमहितकारी,[२] असलीलाधारी,
जो जिव दीन दुखारी, उन लेहैं उबारी रे ।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥२॥

जम काल लजाई, माया रही मुरझाई,
कुछ पेश न जाई, सब करम नसाई[३] रे ।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥३॥

हुआ जीव उबारा, मिटा भर्म पसारा,
घर काल उजाड़ा, हुआ सत[४] उजियारा रे।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥४॥

राधास्वामी महिमा भारी, कस गाउँ पुकारी,
मैं बाल अनाड़ी,[५] उन सरन अधारी रे ।
राधास्वामी ३, प्यारे राधास्वामी रे॥५॥

१—शोर । २—परोपकारी । ३—नष्ट हो गए । ४—सत्य का । ५—मूर्ख ।

॥ शब्द ५ ॥

प्यारे लागें री मेरे दातार ।
सतगुरु प्यारे लागें । ॥ १ ॥
प्यारे लागें री कुल करतार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ २ ॥
प्यारे लागें री प्रेम भंडार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३ ॥
प्यारे लागें री अकह[1] अपार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४ ॥
प्यारे लागें री प्रान अधार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ५ ॥
प्यारे लागें री मेरे दिलदार[2] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ६ ॥
प्यारे लागें री परम उदार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ७ ॥
प्यारे लागें री अपर अपार[3] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ८ ॥
प्यारे लागें री अधर[4] अधार[5] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥ ९ ॥

१—अवर्णनीय । २—दिल के प्यारे । ३—अपर अपार—सर्वोपरि व अकह् । ४—अपने ही अवलंब पर स्थित । ५—सबका आधार ।

प्यारे लागें री अमी[१] भंडार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१०॥
प्यारे लागें री संत अवतार ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥११॥
प्यारे लागें री मेरे रछपाल[२] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१२॥
प्यारे लागें री मेरे किरपाल ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१३॥
प्यारे लागें री दीन दयाल ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१४॥
प्यारे लागें री अमल[३] अरूप[४] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१५॥
प्यारे लागें री शब्द सरूप ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१६॥
प्यारे लागें री मोहन[५] रूप ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१७॥
प्यारे लागें री सुन्दर रूप ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१८॥
प्यारे लागें री आनँद रूप ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥१९॥

१–अमृत । २—रक्षक । ३–निर्मल । ४–जिनका कोई रूप नहीं है । ५–आकर्षक ।

प्यारे लागें री हैरत रूप[१]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२०॥
प्यारे लागें री सत्त स्वरूप।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२१॥
प्यारे लागें री अगम[२] अनाम[३]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२२॥
प्यारे लागें री अचरज धाम[४]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२३॥
प्यारे लागें री अचरज नाम।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२४॥
प्यारे लागें री भौतारन[५]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२५॥
प्यारे लागें री जीव उबारन।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२६॥
प्यारे लागें री मनमोहन।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२७॥
प्यारे लागें री काल बिडारन[६]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२८॥
प्यारे लागें री माया टारन[७]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥२९॥

१—हैरत रूप—आश्चर्यजनक रूप वाले। २—पहुँच से बाहर। ३—जिनका नाम नहीं है। ४—स्थान। ५—संसार से पार करने वाले। ६—हटाने वाले। ७—दूर करने वाले।

प्यारे लागें री जान पिरान[1]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३०॥
प्यारे लागें री प्रेम निधान[2]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३१॥
प्यारे लागें री जग तारन[3]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३२॥
प्यारे लागें री हे रँगीले।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३३॥
प्यारे लागें री हे छबीले[4]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३४॥
प्यारे लागें री हे रसीले।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३५॥
प्यारे लागें री अचल[5] अडोल[5]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३६॥
प्यारे लागें री अगम अतोल[6]।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३७॥
प्यारे लागें री अमल[7] अमोल।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३८॥
प्यारे लागें री जीव हितकारी।
सतगुरु प्यारे लागें ॥३९॥

१—प्राण। २—भंडार। ३—जग तारन—संसार से तारने वाले। ४—सुन्दर। ५—अटल। ६—जिनकी महिमा समझी नहीं जाती। ७—निर्मल।

प्यारे लागें री पूरन धनी ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४०॥
प्यारे लागें री अंतरजामी ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४१॥
प्यारे लागें री अगम अगाध[1] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४२॥
प्यारे लागें री अलख अथाह[2] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४३॥
प्यारे लागें री सर्व समरथ ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४४॥
प्यारे लागें री अबल[3] की ओट[4] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४५॥
प्यारे लागें री प्यारे परबीन[5] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४६॥
प्यारे लागें री मेरे प्रीतम ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४७॥
प्यारे लागें री गहिर गँभीर ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४८॥
प्यारे लागें री बंदीछोड़[6] ।
सतगुरु प्यारे लागें ॥४९॥

१—अथाह । २—जिनकी थाह न मिल सके । ३—निर्बल, कमज़ोर ।
४—शरण । ५—प्रवीण, चतुर । ६—बंधन छुड़ाने वाले ।

प्यारे लागें री मात पिता।
सतगुरु प्यारे लागें ॥५०॥

प्रेम तरंग—भाग तीसरा

कजली

॥ शब्द १ ॥

कैसे गाऊँ गुरु महिमा,
अति अगम अपार ॥ टेक ॥
गुरु प्यारे मेरे राधास्वामी दाता।
उनके चरन पर जाउँ बलिहार ॥ १ ॥
राधास्वामी मेहर से अंग लगाया।
काल जाल से लिया है निकार ॥ २ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई।
घंटा संख सुनी धुन सार[1] ॥ ३ ॥
लाल सूर[2] लख चंद्र निहारा।
मुरली सुन धुन बीन सम्हार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन परस[3] मगनानी।
पहुँच गई अब धुर दरबार ॥ ५ ॥

१—उत्तम। २—सूरज। ३—स्पर्श करके।

॥ शब्द २ ॥

कैसे मिलूँ री पिया से चढ़ गगन गली[1] ॥टेक॥
रैन[2] अँधेरी और बाट[3] अनेड़ी[4]।
कोइ संग न साथी कहाँ जाऊँ री अली[5]।१।
खोज करो गुरु दीन दयाला।
जोगी ज्ञानी रहे तली[6] ॥ २ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ।
निरखो नभ चढ़ जोत बली[7] ॥ ३ ॥
त्रिकुटी जाय सुनो अनहद धुन।
सुन्न में हंसन संग रली[8] ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष का रूप निरख कर।
राधास्वामी चरनन जाय मिली ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

कैसे चलूँ री अधर चढ़ सुन नगरी ॥टेक॥
मन मेरा चंचल चित्त मलीना।
गैल[1] कठिन कस धरूँ पग[9] री ॥ १ ॥
गुरु दयाल बिन कौन सहाई।
उनके चरन में रहूँ लग री ॥ २ ॥
वे दयाल जब दया बिचारें।
तब सुत चढ़े अधर डगरी[10] ॥ ३ ॥

१—रास्ता। २—रात। ३—रास्ता। ४—अटपट, कठिन। ५—सखी। ६—नीचे। ७—प्रकाशमान। ८—मेल किया। ९—पैर। १०—रास्ता।

काल करम को दूर हटावें ।
और निकारें माया मगरी[१] ॥ ४ ॥
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी धाई ।
सुन में हंसन सँग पग[२] री ॥ ५ ॥
मुरली धुन सुन आगे चाली ।
महाकाल भी रहा थक री ॥ ६ ॥
पुरुष दया ले अधर सिधारी[३] ।
राधास्वामी चरन माहिं जकड़ी[४] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

कैसे गहूँ[५] री सरन गुरु बिन परतीत ॥टेक॥
मन इंद्री भोगन में अटके ।
नेक न छोड़ें जग की प्रीत ॥ १ ॥
बचन सुनत और फिर बिसरावत[६] ।
चित्त न धारें भक्ती रीत ॥ २ ॥
काल करम मोहि नित भरमावें ।
बिन गुरु दया इन्हें कस जीत ॥ ३ ॥
मेहर करें सतगुरु जब अपनी ।
दूर हटावें सभी अनीत[७] ॥ ४ ॥
हे राधास्वामी अब दया बिचारो ।
मेरे हिये में बसाओ चरन पुनीत[८] ॥ ५ ॥

१—धोखेबाज़ । २—रल मिल गई । ३—गई । ४—कस कर बाँध दी ।
५—लूँ । ६—भुला देते हैं । ७—अनुचित व्यवहार । ८—पवित्र ।

॥ शब्द ५ ॥

काहे री चरन गुरू भूली री सुरतिया ॥टेक॥
बिन गुरू चरन आसरा नाहीं ।
क्यों नहिं उन उर धारो री सुरतिया। १ ।
चेत सुनो अब सतसँग बचना ।
प्रीति लाय उन मानो री सुरतिया ॥ २ ॥
सेवा कर आरत कर गुरू की ।
सत्तपुरुष सम[1] जानो री सुरतिया ॥ ३ ॥
दरशन कर उनका हित[2] चित से।
दृष्टि जोड़ सुत तानो[3] री सुरतिया ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन बल हिये धर।
काल करम को जारो[4] री सुरतिया ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

करो री सुरत गुरू चरन अधारा ॥टेक॥
गुरू सम कोइ हितकारी नाहीं ।
उनकी दया का लेओ री सहारा ॥ १ ॥
बचन सुनाय सुधारें तुझको ।
भेद बतावें धुर दरबारा ॥ २ ॥
घर चालन की जुगत बतावें ।
सुरत शब्द का मारग सारा[5] ॥ ३ ॥

१—बराबर । २—प्रेम । ३—लगाओ । ४—नाश करो । ५—उत्तम ।

भक्ती रीत सिखावें तुझको।
जगत जाल से करें नियारा॥ ४॥
परम पुरुष राधास्वामी चरनन में।
मेहर से दें तोहि प्रेम करारा[1]॥ ५॥

॥ शब्द ७॥

खोजो री शब्द घर सुरत पियारी॥टेक॥
मिल गुरु से लो भेद शब्द का।
धुन अनहद नित घट में जारी॥ १॥
सुन सुन धुन मन उगलत[2] जग को।
इंद्रियन से स्रुत होवत न्यारी॥ २॥
घट में अजब बिलास दिखाना।
मगन हुई पाय आनँद भारी॥ ३॥
गुरु की दया ले चढ़त अधर में।
सुन्न परे धुन सोहँग धारी॥ ४॥
सत्त अलख और अगम निरख[3] कर।
राधास्वामी चरनन सूरत वारी[4]॥ ५॥

॥ शब्द ८॥

लागो रे चरन गुरु जीव अनाड़ी[5]॥टेक॥
करम धरम में कब लग[6] पचना[7]।
तीरथ मूरत कब लग जारी॥ १॥

१—तेज। २—बाहर निकालता, जग की बासना को छोड़ता। ३—देख।
४—निछावर कर दी। ५—मूर्ख। ६—तक। ७—परेशान होना।

या में फल पाओ नहिं नेका[1]।
घर जाने की गैल[2] भुला री ॥ २ ॥
जनम मरन से छुटना चाहो।
तो सतगुरु की सरन सम्हारी ॥ ३ ॥
मेहर करें गुरु बचन सुनावें।
मन और सूरत लेहिं सुधारी ॥ ४ ॥
निज घर का दें भेद सुनाई।
सुरत शब्द की जुगत[3] बता री ॥ ५ ॥
बिरह जगाय[4] चलो अब घट में।
सुन सुन धुन हिये बढ़त पियारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन धार हिये अंतर।
सहज चलो सतगुरु दरबारी ॥ ७ ॥

प्रेम तरंग—भाग चौथा

॥ शब्द १ ॥

मैं गुरु प्यारे के चरनों की दासी ॥टेक॥
नित उठ दरशन करूँ उमँग से।
हार चढ़ाऊँ अपने गुरु सुख रासी[5] ॥ १ ॥
मत्था टेक लेउँ परशादी।
करम भरम सब होते नाशी ॥ २ ॥

१—ज़रा भी। २—रास्ता। ३—अभ्यास। ४—पैदा करके। ५—राशि, भंडार।

प्रीति बढ़त गुरु चरनन निस दिन।
जग से रहती सहज उदासी[1] ॥ ३ ॥
शब्द कमाई करूँ प्रेम से।
मगन होय रहूँ नित गुरु पासी[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनाओ।
दीजे मोहि निज चरन बिलासी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

मैं पड़ी अपने गुरु प्यारे की सरना ॥टेक॥
मेहर करी गुरु भेद बताया।
सुरत शब्द में निस दिन भरना[3] ॥ १ ॥
गुरु के चरन पकड़ हित चित से।
भौसागर से सहजहि तरना ॥ २ ॥
गुरु का बल सँग लेकर अपने।
मन माया से छिन छिन लड़ना ॥ ३ ॥
जगत जाल जंजाल जार[4] कर।
गगन ओर धुन सुन सुन चढ़ना ॥ ४ ॥
राधास्वामी बल अब धार हिये में।
काल करम से काहे को[5] डरना ॥ ५ ॥

१—उदासीन, उपराम चित्त। २—पास, निकट। ३—प्रवेश करना, लगाना।
४—जला। ५—काहे को—किस लिए, क्यों।

॥ शब्द ३ ॥

मैं हुई सखी अपने प्यारे की प्यारी ॥टेक॥
सेवा में नित हाज़िर रहती ।
हरख हरख नित रूप निहारी ॥ १ ॥
दरशन शोभा क्योंकर बरनूँ ।
छबि पर जाउँ छिन छिन बलिहारी ॥२॥
मेहर भरी दृष्टी जब डारी ।
भूल गई तन मन सुध सारी ॥ ३ ॥
कस गुन गाउँ अपने गुरु प्यारे के ।
तन मन धन उन चरनों पै वारी[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे से यही बर[2] माँगूँ ।
चरन में रहूँ लीन सदा री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

जब से मैं देखा राधास्वामी का मुखड़ा ।टेक।
मोहित हुई तन मन सुध भूली ।
छोड़ दिया सब जग का झगड़ा ॥ १ ॥
राधास्वामी छबि छा गई नैनन में ।
नहीं सुहावे मोहि अब कोई रगड़ा[3] ॥ २ ॥
नित्त बिलास करूँ दरशन का ।
भर भर प्रेम हुआ मन तकड़ा[4] ॥ ३ ॥

१—निछावर करती । २—बख्शिश । ३—संसार का झगड़ा । ४—मज़बूत ।

मेहर हुई स्तुत चढ़त अधर में।
छोड़ चली अब काया[1] छकड़ा[2] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब भारी।
छिन छिन मन चरनन में जकड़ा[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

राधास्वामी छबि मेरे हिये बस गई री।टेक।
राधास्वामी शोभा क्योंकर गाऊँ।
नैन कँवल दृष्टी जोड़ दई री ॥ १ ॥
दरस रूप रस[4] बरनूँ कैसे।
नर देह मेरी आज सुफल भई री ॥ २ ॥
नित नित ध्याय रहूँ गुरु रूपा।
घट में आनँद बिमल लई री ॥ ३ ॥
बिन प्रीतम बहु जनम बिताये।
और बिपता[5] बहु भाँत[6] सही री ॥ ४ ॥
अब मोहि राधास्वामी मिले भाग से।
चरन लगाय निज सरन दई री ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मन हुआ मेरा गुरु चरनन में लीना ॥टेक॥
जग से हट[7] सतसँग में लागी।
भक्ती दान गुरू मोहि दीना ॥ १ ॥

१—शरीर का। २—गाड़ी। ३—बाँधा। ४—आनंद। ५—विपत्ति, आफ़त। ६—तरह। ७—अलहदा होकर।

शब्द संग मैं सुरत लगाऊँ।
मगन होय नित धुन रस पीना॥ २॥
सेवा कर नई उमँग जगाऊँ।
मैं हुई अपने गुरु चरनन की रीना[1]। ३॥
बिन दरशन मोहि कल न पड़त है।
तड़प रहूँ जैसे जल बिन मीना[2]॥ ४॥
राधास्वामी प्यारे मेरे प्रान अधारे।
मेहर से उन मेरा कारज कीना॥ ५॥

॥ शब्द ७॥

आज मैं पाई सरन गुरु पूरे॥ टेक॥
गुरु चरनन मिल हुई बड़भागी।
बाजे घट में अनहद तूरे[3]॥ १॥
जगत भाव भय लज्जा त्यागी।
मन कायर हुआ घट में सूरे[4]॥ २॥
सुन सुन धुन अब चढ़त अधर में।
जोत जगमगी झलकत नूरे[5]॥ ३॥
त्रिकुटी जाय ओं धुन पाई।
काल और करम रहे दोउ झूरे[6]॥ ४॥

१—लीन। २—मछली। ३—बाजे, शब्द। ४—बहादुर। ५—प्रकाश। ६—झुरते।

अक्षर धुन सुन आगे चाली ।
तज दिया देश अब माया कूड़े ॥ ५ ॥
मुरली सुन धुन बीन सम्हारी ।
मगन हुई लख सत पद मूरे[1] ॥ ६ ॥
प्रेम भँडार लखा अब भारी ।
मिल गये राधास्वामी चरन हज़ूरे ॥ ७ ॥
राधास्वामी महिमा अतिसै[2] भारी ।
सुरत हुई उन चरनन धूरे ॥ ८ ॥

॥ शब्द ८ ॥

आज मैं पाया दरस गुरु प्यारे ॥टेक॥
दरशन कर हिये होत हुलासा ।
बचन सुनत भ्रम मिट गये सारे ॥ १ ॥
अचरज महिमा सतसँग देखी ।
गुरु उपदेश लिया उर[3] धारे ॥ २ ॥
ध्यान धरत सुत घेरी घट में ।
गगन ओर चढ़ती धुन लारे[4] ॥ ३ ॥
मेहर हुई सुत अधर चढ़ाई ।
तीन लोक के हो गई पारे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल की महिमा भारी ।
कोटिन जीव लिये उन तारे ॥ ५ ॥

१—मूल । २—अत्यन्त । ३—हृदय में । ४—साथ ।

प्रेम तरंग—भाग पाँचवाँ

॥ शब्द १ ॥

धुर धाम नियार।
लखे कोइ गुरुमुख जाय ॥ १ ॥
गुरु प्रीति सम्हार।
करे नित सेवा धाय ॥ २ ॥
गुरु रूप निहार।
ध्यान धर हिये रस पाय ॥ ३ ॥
गुरु चरन अधार।
सुरत जाय शब्द समाय ॥ ४ ॥
नई उमँग जगाय।
चरन राधास्वामी परसे आय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

कैसे उतरूँ पार।
भौसागर का चौड़ा फाट ॥ १ ॥
कस होवे जीव उबार।
गुरु बिन कौन लखावे बाट ॥ २ ॥
सतसँग कर आज सम्हार।
तब मिले भेद गुरु घाट ॥ ३ ॥
गुरु चरनन धरो पियार।
तब घट का खुले कपाट ॥ ४ ॥

शब्दा रस लेव सम्हार ।
राधास्वामी भरें सुरत का माट[1] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरू चरनन प्यार ।
लाओ मन मेरे उमँग से ॥ १ ॥
गुरू आरत धार ।
सन्मुख होय प्रेम अँग से ॥ २ ॥
सुन घट धुन सार[2] ।
निकसो जाल उचँग[3] से ॥ ३ ॥
घट देख बहार ।
रँग जाय सुत गुरू रँग से ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन सम्हार ।
जीते काल निहँग[4] से ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

गुरू ले पहिचान ।
काज करें तेरा छिन में ॥ १ ॥
वोही हैं पुरुष सुजान ।
प्रगट हुए अब के तन[5] में ॥ २ ॥
तू सेव चरन धर प्यार ।
मत सोच करो कुछ मन में ॥ ३ ॥

१—मटका, घड़ा, बर्तन । २—उत्तम । ३—तरह तरह की बासनाओं के ।
४—भयंकर । ५—मनुष्य शरीर में ।

धुन भेद सुनावें तोहि।
और सुरत चढ़ावें गगन में ॥ ४ ॥
राधास्वामी धरिया नाम।
सुमिरो धर ध्यान अपन[1] में ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

बिमल चित जोड़ रही।
घट शब्द गुरू धर प्यार ॥ टेक ॥
सुन सुन धुन अब होत मगन[2] मन।
छोड़त किरत[3] असार[4] ॥ १ ॥
गुरू सतसंगी प्यारे लागें।
नेक न भावे जग ब्योहार ॥ २ ॥
बचन सुनत मन कँवल खिलाना।
दरशन कर घट होत उजार[5] ॥ ३ ॥
सुरत चढ़ाय गई नभपुर में।
वहाँ से पहुँची गगन मँझार[6] ॥ ४ ॥
राधास्वामी किरपा धारी।
मो सी अधम[7] को लिया उबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

जगत बिच भूल पड़ी।
जीव कैसे के उतरे पार ॥ १ ॥

१—अंतर। २—प्रसन्न। ३—कारर्वाई। ४—फ़ज़ूल। ५—प्रकाश। ६—में। ७—नीच।

मन माया का ज़ोर घनेरा।
जीव निबल कस करे सम्हार ॥ २ ॥
अनेक भोग खैंचें वाहि चहुँ दिस।
भरम रहा इंद्रियन की लार ॥ ३ ॥
कुटुँब जगत का बंधन भारी।
कस निकसे जिव हुआ लाचार ॥ ४ ॥
बिना दया सतगुरु पूरे के।
कभी न जग से होय उबार ॥ ५ ॥
वे दयाल जब जुगत बतावें।
आप होयँ इसके रखवार ॥ ६ ॥
मन इंद्री तब सीधे चालें।
जुगत कमावे हिये धर प्यार ॥ ७ ॥
तब निरमल होय चढ़े अधर में।
राधास्वामी चरन निहार ॥ ८ ॥

॥ शब्द ७ ॥

बिकल जिया तरस रहा।
मोहि दरस दिखा दो जी ॥टेक॥
त्रिय तापन सँग तप रही सारी।
चरन अमी पिला दो जी ॥ १ ॥
इंद्रियन सँग नित भरमत डोले।
सोता मनुआँ जगा दो जी ॥ २ ॥

जुगन जुगन से बिछड़ी चरन से।
अभी पिया से मिला दो जी ॥ ३ ॥
शब्द जुगत तुम दीन बताई।
घट कपट हटा दो जी ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे गुरू हमारे।
मोहि पार लगा दो जी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मैं तो आय पड़ी परदेस।
गैल[1] कोई घर की बता दीजो रे॥ १ ॥
मन इंद्री सँग बहु दुख पाये।
भेद सुख घर का जना[2] दीजो रे॥ २ ॥
हे गुरू समरथ बंदीछोड़ा[3]।
मोहि चरनों में आज लगा लीजो रे ३
डरत रहूँ नरकन के दुख से।
मोहि जम से आप बजा लीजो रे॥४॥
शब्द रूप तुम्हरा अगम अपारा।
सोई मोहि लखा दीजो रे ॥ ५ ॥
जुगत तुम्हार कमाऊँ उमँग से।
शब्द में सुरत समा दीजो रे॥ ६ ॥

१—रास्ता। २—बतला। ३—बंधन छुड़ाने वाले।

राधास्वामी सतगुरु प्यारे।
काज मेरा पूरा बना दीजो रे॥ ७॥

॥ शब्द ९ ॥

गुरु दरशन बिन चैन न आवे।
मैं कौन उपाय करूँ॥ १॥
काल करम बहु बिघन लगाये।
कैसे उनको दूर करूँ॥ २॥
मोर जतन कोइ पेश न जावे।
अब चरनन में बिनय करूँ॥ ३॥
हे सतगुरु मोहि दरस दिखाओ।
निस[1] दिन तुम्हरे बचन सुनूँ॥ ४॥
बिन सतसँग कुछ काज न सरिहै[2]।
सतसँग में चित जोड़ धरूँ॥ ५॥
शब्द अभ्यास सम्हार मेहर से।
सुरत गगन में नित्त भरूँ[3]॥ ६॥
राधास्वामी प्यारे दया बिचारो।
मैं अब तुम्हरी सरन पड़ूँ॥ ७॥

॥ शब्द १० ॥

उमँग मन फूल रहा।
गुरु दरशन पाया री॥ १॥

१—रात। २—बनेगा। ३—प्रवेश करूँ।

तड़प तड़प मोहि बहु दिन बीते।
आज मेरा भाग जगाया री ॥ २ ॥
दृष्टि तनी[1] रहती गुरु छबि पर।
मनुआँ चरन समाया री ॥ ३ ॥
प्रीति बढ़त छिन छिन अब हिये में।
जग ब्योहार भुलाया री ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब भारी।
मोहि नीच को लिया अपनाया री ५

॥ शब्द ११ ॥

मगन मन केल[2] करत।
घट धुन सँग लागा री ॥ १ ॥
गुरु चरनन में प्रीति बढ़ावत।
करम भरम सब भागा री ॥ २ ॥
जनम जनम माया सँग भूला।
मेहर से अब के जागा री ॥ ३ ॥
अस औसर मिले सतगुरु आई।
उन दीन जगाय मेरा भागा री ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा।
उन सँग खेलूँ फागा री ॥ ५ ॥

१—लगी। २—विलास।

॥ शब्द १२ ॥

दरस पाय मन बिगस रहा।
गुरु लागे प्यारे री ॥ १ ॥
बार बार छबि पर बलि जाऊँ।
चरन सीस पर धारे री ॥ २ ॥
कौन वस्तु गुरु आगे राखूँ।
तन मन धन सब वारे री ॥ ३ ॥
क्या मुख ले मैं महिमा गाऊँ।
उन गत मत अगम अपारे री ॥ ४ ॥
जीव पड़े चौरासी भोगें।
गुरु बिन कौन उबारे री ॥ ५ ॥
मेरा भाग जगा किरपा से।
मोहि जग से कीन नियारे री ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से जुगत बताई।
धुन सुन गई दसवें द्वारे री ॥ ७ ॥

प्रेम तरंग—भाग छठवाँ

॥ शब्द १ ॥

चरन गुरु ध्याओ री।
तज जग भय आस ॥ टेक ॥
मन अज्ञानी भरम भुलाना।
फिर फिर चाहत जग में बास ॥ १ ॥

बिन सतसंग समझ नहिं आवे।
याते[1] कर गुरु संग निवास ॥ २ ॥
नाम जपत नित शुधता बाढ़े।
राधास्वामी नाम सुमिर हर स्वाँस। ३ ॥
सतगुरु चरन ध्यान धर घट में।
निरखे अचरज प्रेम बिलास ॥ ४ ॥
दिन दिन मन में बढ़त अनंदा।
उमँग उमँग करता अभ्यास ॥ ५ ॥
गुरु की दया परखता छिन छिन।
खेलत रहे नित चरनन पास ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन ओट[2] अब धारी।
पाप पुन्न दोउ हो गये नास ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

सरन गुरु धार री धर दृढ़[3] परतीत ॥टेक॥
उमँग अंग ले करो साध सँग।
बचन सुनो तुम देकर चीत[4] ॥ १ ॥
जग व्योहार जान सब मिथ्या[5]।
जग जिव सब स्वारथ के मीत[6] ॥ २ ॥
इन से हट मन चरनन जोड़ो।
हित[7] से धारो भक्ती रीत ॥ ३ ॥

१—इसलिए। २—शरण। ३—पक्की। ४—चित्त। ५—झूठा। ६—मित्र। ७—प्रेम।

तन मन इंद्री सब दुखदाई ।
बुधि और विद्या सबहि अनीत[1] ॥ ४ ॥
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे ।
मिल अब उनसे कारज कीत[2] ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति धार गुरु चरनन ।
गुरु बल काल करम को जीत ॥ ६ ॥
मौज निहार करो सब काजा ।
मन में धारो गुरु की नीत[3] ॥ ७ ॥
प्रेम अंग ले ध्यान सम्हारो ।
चरन आनंद लेव धर प्रीत ॥ ८ ॥
अस अभ्यास करो तुम निस दिन ।
गुरु रँग भीज रहो तज भीत[4] ॥ ९ ॥
आस भरोस धार गुरु चरनन ।
त्याग देव जग की बिपरीत[5] ॥१०॥
गुरु भक्तन की चाल अनोखी ।
धारो रल मिल गुरु संगीत[6] ॥११॥
घट में परखो अपन उधारा ।
गाओ निस दिन राधास्वामी गीत[7] ॥१२॥

१—अनुचित दिशा में ले जाने वाले । २—करो । ३—नेतृत्व । ४—भय, डर । ५—अहितकर कार्य । ६—संग । ७—महिमा ।

॥ शब्द ३ ॥

हठीला[1] मनुआँ माने न बात ॥टेक॥
अपनी ओछी[2] समझ न त्यागे ।
सतसँग बचन न चित्त समात॥ १ ॥
बारम्बार जक्त सँग लिपटे ।
भोगन में रहे सदा भुलात ॥ २ ॥
जग को सत्त जान कर पकड़ा ।
निज करता[3] की सुद्ध[4] न लात॥ ३ ॥
साध गुरू सँग प्रीति न करता ।
जग जीवन सँग मेल मिलात ॥ ४ ॥
हित का बचन दया कर बोलें ।
यह मूरख परतीत न लात ॥ ५ ॥
जग बंधन हित चित से चाहे ।
छूटन की नहिं सुनता बात ॥ ६ ॥
ऐसे मूरख मन के मौजी ।
फिर फिर जग में भटका खात॥ ७ ॥
जो चाहें यह जीव गुज़ारा ।
तो सतगुरु का पकड़ें हाथ ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरन बसाय हिये में ।
भेद पाय फिर सरन समात[5]॥ ९ ॥

१—ज़िद्दी । २—तुच्छ । ३—कर्त्ता, मालिक । ४—याद । ५—लीन हों ।

॥ शब्द ४ ॥

कठोरा मनुआँ सुने न बैन ॥ टेक ॥
जगत भोग में रहे भुलाना ।
घट अंतर की परखे[1] न सैन[2] ॥ १ ॥
दम दम दुखी बिकल रहे तन में ।
नहिं पावे सुख चैन[3] ॥ २ ॥
साध गुरू बहु बिधि समझावें ।
नहिं माने उन कहन[4] ॥ ३ ॥
करम धरम में निस दिन खपता[5] ।
पाप और पुन्न भार सिर लेन ॥ ४ ॥
जब लग[6] सतसँग संत न पावे ।
खुले नहीं कभी हिरदे नैन ॥ ५ ॥
नाम बिना उद्धार न होवे ।
राधास्वामी नाम सुमिर दिन रैन[7] ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन गहो मेरे प्यारे ।
छूटे काल करम का देन[8] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

मूरख मनुआँ भोग न छोड़े ।
याहि कस समझाऊँ री ॥ १ ॥

१—पहचाने । २—इशारा । ३—आराम । ४—कहना, आज्ञा । ५—पचता ।
६—तक । ७—रात । ८—क़र्ज़ा ।

बहु बिधि[1] याहि समझौती दीनी।
देख भोग ललचाऊँ री ॥ २ ॥
भोग करे बहु बिधि दुख पावे।
फिर फिर मैं पछताऊँ री ॥ ३ ॥
बिन गुरु कौन करे मेरी रक्षा।
उन चरनन में धाऊँ री ॥ ४ ॥
मेहर करें या मन को सम्हालें।
तब निज घर में जाऊँ री ॥ ५ ॥
सतसँग करूँ बचन उर[2] धारूँ।
शब्द में सुरत लगाऊँ री ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला।
मैं तो तुमहीं नित्त मनाऊँ री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हे प्यारे मनुआँ, नेक लगा दे कान ॥टेक॥
खटपट[3] में क्यों अटपट[4] बरते।
झट पट गुरु की कर पहिचान ॥ १ ॥
शब्द भेद लेकर तू उन से।
सुरत लगादे धुन में तान ॥ २ ॥
बिना शब्द उद्धार न होगा।
यह निश्चय कर साँची मान ॥ ३ ॥

१—तरह। २—हृदय। ३—संसार के झगड़े बखेड़े में। ४—उलटा सीधा।

या ते धुन में चित्त लगाओ।
गुरु की दया संग ले आन ॥ ४ ॥
सुन सुन धुन घट मिले अनंदा।
सुरत चढ़ाओ अधर ठिकान ॥ ५ ॥
राधास्वामी चरनन बाँध निशाना।
अलख अगम के पार बसान ॥ ६ ॥

प्रेम तरंग—भाग सातवाँ

॥ शब्द १ ॥

जागी है उमँग मेरे हिये में।
गुरु सतगुरु आरती[1] करूँ मैं ॥ १ ॥
महिमा सुन सुन बढ़ा पियारा।
गुरु चरन कँवल मिला अधारा ॥ २ ॥
दृष्टी जोड़ूँ दरस गुरू में।
नित प्रीति सहित बचन सुनूँ मैं ॥ ३ ॥
ले शब्द भेद नित करूँ अभ्यासा।
देखूँ घट में बिमल तमाशा ॥ ४ ॥
गुरु सरूप धर हिये धियाना।
हैरत[2] में रहूँ निरख के शाना[3] ॥ ५ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। २—आश्चर्य। ३—जलाल।

चरनन में गुरु के मन हुआ लीन ।
हरखत रहे नित्त जैसे जल मीन[1] ॥ ६ ॥
जो जिव चरन में गुरु के लागे ।
मन और सुरत उन्हीं के जागे ॥ ७ ॥
जग देखा काल का पसारा ।
माया ने उपाये[2] भोग सारा ॥ ८ ॥
जीवन लिया जाल में फँसाई ।
निज घर की बाट[3] दी छिपाई ॥ ९ ॥
दुख भोगें दाद[4] को न पावें ।
बाहर कोई जाल से न जावें ॥१०॥
मम भाग उदय हुआ है भारी ।
सतगुरु मेरी आप सुध सम्हारी ॥११॥
चरनों में मुझे लिया बुलाई ।
सतसँग में मुझे लिया लगाई ॥१२॥
निज भेद सुनाय मेहर कीनी ।
निज चरन सरन की दात[5] दीनी ॥१३॥
मुझ दीन का काज खुद बनाया ।
घट में धुन सँग अधर चढ़ाया ॥१४॥

१—मछली । २—उत्पन्न किए, पैदा किए । ३—रास्ता । ४—सहायता ।
५—बख्शिश ।

गुन गाउँ मैं प्यारे गुरु के हरदम।
जपता रहूँ राधास्वामी दम दम ॥१५॥

॥ शब्द २ ॥

सुनी मैं महिमा सतसँग सार।
जगा मेरे हिये में गहिरा प्यार॥ १ ॥
खोजता आया गुरु के पास।
बचन सुन हुआ चरन विस्वास॥ २ ॥
दरस गुरु आनँद बरना न जाय।
सुरत मन छिन छिन रहे लुभाय॥ ३ ॥
कहूँ क्या सोभा सतसँग गाय।
प्रेम रहा सब के हिरदे छाय ॥ ४ ॥
निरख अस लीला उमँगा मन।
पड़ा अब निजकर गुरु चरनन ॥ ५ ॥
बचन गुरु लागे अति प्यारे।
मनन[1] कर सार[2] हिये धारे ॥ ६ ॥
प्रेम अब दिन दिन रहा उमँगाय।
हिये में नई परतीत जगाय ॥ ७ ॥
उठत अब हिये में नित्त उमंग।
करूँ मैं निस दिन सतगुरु संग ॥ ८ ॥

१—विचार करके। २—सारांश, तात्पर्य।

सेव गुरू करता उमँग जगाय।
गुरू परताप रहा हिये छाय ॥ ९ ॥
मेहर से दीना शब्द उपदेश।
सुनाया निज घर का संदेस ॥१०॥
सुरत मन धावत[1] घर की ओर।
पकड़ कर घट में धुन की डोर ॥११॥
ध्यान गुरू धरत मिला आनंद।
कटे सब करम भरम के फंद ॥१२॥
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार।
गुरू की मेहर लखूँ हर बार[2] ॥१३॥
शब्द रस पियत रहूँ घट माहिं।
बसूँ मैं गुरू चरनन की छाँह ॥१४॥
आरती[3] गुरू सन्मुख धारूँ।
चरन पर तन मन धन वारूँ[4] ॥१५॥
करी राधास्वामी मेहर बनाय।
दिया मेरा बेड़ा पार लगाय ॥१६॥
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार।
हुआ मोहि चरन सरन आधार ॥१७॥

१—दौड़ते। २—समय। ३—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। ४—निछावर करूँ।

॥ शब्द ३ ॥

परम गुरू राधास्वामी प्यारे,
जगत में देह धर आये,
शब्द का देके उपदेशा,
हंस जिव लीन मुकताये ॥ १ ॥
किया सतसंग नित जारी,
दया जीवों पै की भारी,
करम और भरम गये सारे[१],
जीव चरनों में घिर आये ॥ २ ॥
भक्ति का आप दे दाना,
दिया जीवन को सामाना,
देख हुआ काल हैराना[२],
रही माया भी मुरझाये ॥ ३ ॥
बढ़ा कर चरन में प्रीती,
दई घट शब्द परतीती,
काल और करम को जीती,
सुरत मन उलट कर धाये ॥ ४ ॥
जोत लख सूर निरखा[३] री,
परे सत शब्द परखा[४] री,
अलख और अगम पेखा[५] री,
चरन राधास्वामी परसाये ॥ ५ ॥

१—सभी । २—परेशान । ३—देखा । ४—पहचाना । ५—देखा ।

॥ शब्द ४ ॥

आज गुरू आये जीव उबारन ।
आरत[1] उनके सन्मुख वारन[2] ॥ १ ॥
दीन हीन हिये थाल सजावन ।
बिरह अनुराग की जोत जगावन ॥ २ ॥
चरन कँवल गुरू प्रेम बढ़ावन ।
दृढ़ परतीत हिये बिच लावन ॥ ३ ॥
सुरत शब्द में नित्त लगावन ।
नभ की ओर सुरत मन धावन ॥ ४ ॥
धुन घंटा और संख बजावन ।
अद्भुत रूप जोत दरसावन ॥ ५ ॥
त्रिकुटी जाय सुरत हुई पावन[3] ।
हंसन संग मानसर न्हावन ॥ ६ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन गावन ।
सतपुर सुनी धुन बीन सुहावन ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन धियावन ।
मेहर दया उन छिन छिन पावन ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५ ॥

नौ द्वारन में सब कोइ बरते ।
दसवाँ निरखे बिरला कोय ॥ १ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २ । २—करूँ । ३—पवित्र ।

जिनको मेहर से सतगुरु भेंटे।
तिन जाना यह मारग गोय ॥ २ ॥
भेद पाय उन जुगत कमाई।
निस दिन सूरत शब्द समोय ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनत घट चाली।
गरज मृदंग सुनी धुन दोय ॥ ४ ॥
माया काल बहु दाव चलाये।
गुरु बल लीनी सूरत धोय ॥ ५ ॥
निरमल होय गई दस द्वारे।
गुफा परे निरखा पद सोय ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्यारे दया करी अब।
चरनन में लई सुरत मिलोय ॥ ७ ॥

बचन १४—प्रेम लहर
भाग पहला

॥ शब्द १ ॥

ठुमक चढ़त सुरत अधर,
सुन सुन घट धुनियाँ ॥टेक॥
मन इंद्री सब उठे जाग,
सतगुरु के चरन लाग,
जगत भोग छोड़ राग,
गगन ओर चलियाँ ॥ १ ॥

श्याम कंज द्वार तोड़,
ऊपर को चली दौड़,
घंटा संख सुनत शोर,
जोत रूप लखियाँ ॥ २ ॥
गगन गरज सुनत चली,
ररंकार धुन सँग मिली,
बेद कतेब सब रहे तली,
काल करम दलियाँ ॥ ३ ॥
महासुन्न अंध घोर,
मुरली धुन करत शोर,
बीन सुनी सतपुर की ओर,
पुरुष गोद पलियाँ ॥ ४ ॥
वहाँ से भी गई पार,
अलख अगम धुन सम्हार,
राधास्वामी पद निहार,
चरन सरन रलियाँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

आज हुआ मन मगन मोर,
सुन सुन गुरु बतियाँ ॥टेक॥
राधास्वामी महिमा अपार ।
सुरत शब्द जुगत सार ।

करम धरम दिये निकार।
गुरू चरनन रतियाँ[1] ॥ १ ॥
गुरू सरूप लाय ध्यान।
धुन में सुत धरी तान।
मन के दिये तोड़ मान।
काल जाल कटियाँ ॥ २ ॥
मन और सूरत अधर धाय।
नभ द्वारा दिया तोड़ जाय।
जोत रूप रहा जगमगाय।
बंकनाल धसियाँ ॥ ३ ॥
त्रिकुटी मिरदँग बजाय।
सारँग सँग रही गाय।
मुरली धुन गुफा सुनाय।
सत्त रूप लखियाँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी सतगुरू दयाल।
कीना मोहि अब निहाल[2]।
अलख अगम के पार चाल।
चरन अंबु[3] छकियाँ[4] ॥ ५ ॥

१—लीन हुई। २—सरशार। ३—जल, अमृत। ४—पी कर तृप्त हुई।

॥ शब्द ३ ॥

बिरहन सुत तजत भोग।
गुरू चरनन रतियाँ[1] ॥टेक॥
सतसँग कर सुत उठी जाग,
जगत किरत[2] फीकी लाग,
परमारथ का मिला भाग,
धारा सत[3] मतियाँ[4] ॥ १ ॥
मन चित से हुई दीन,
गुरू सँग प्रेम भाव कीन,
सुरत शब्द जोग लीन,
सुनती गुरू बतियाँ ॥ २ ॥
सुन सुन धुन मगन होत,
घट में प्रगटी अलख जोत,
अमृत का खुला सोत[5],
पी पी तिरपतियाँ[6] ॥ ३ ॥
घुमड़ घुमड़ गरजत गगन,
मन माया होवत दमन[7],
सूर चाँद तारा खिलन,
निरखत हरखतियाँ ॥ ४ ॥

१—लीन। २—कारवाई। ३—सच्चा। ४—मत, मज़हब। ५—स्रोत, भंडार। ६—तृप्त हुई। ७—वश में।

सुन में स्रुत हुई सार,
महासुन मैदाँ निहार,
मुरली धुन गुफा सम्हार,
लख सत्तपुरुष गतियाँ ॥ ५ ॥
अलख अगम के पार देख,
राधास्वामी पद अलेख[1],
जहाँ नहिं रूप रंग रेख[2],
धुर पद परसतियाँ[3] ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रेमी स्रुत उमँग उमँग,
गुरु सनमुख आई ॥टेक॥
भाव भक्ति हिये धार,
करम धरम भरम टार[4],
भोग बासना तुरत जार[5],
ले सतगुरु सरनाई ॥ १ ॥
सतसँग में नित्त जाग,
गुरु चरनन बढ़त लाग[6],
परमारथ का जगत भाग,
गुरु की दया पाई ॥ २ ॥

१—अवर्णनीय । २—आकार । ३—स्पर्श किया, पहुँची । ४—हटा कर । ५—नाश करके । ६—प्रेम ।

शब्द जोग नित कमाय,
मन और सुरत अधर धाय,
घट में आनंद पाय।
दिन दिन मगनाई[1] ॥ ३ ॥
तिल का लिया ताला तोड़,
घट में अब मचा शोर,
काल करम का घटा ज़ोर।
गुरु पद[2] परसाई ॥ ४ ॥
बेनी[3] अश्नान कीन,
मुरली धुन सुनी बीन,
राधास्वामी चरन हुई दीन।
छिन छिन बल जाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रेमी जन बिकल मन,
गुरु दरशन चाहत ॥ टेक ॥
सुन सुन सतसँग बिलास।
चित में रहे नित उदास[4]।
माँगत गुरु सँग निवास।
बार बार धावत[5] ॥ १ ॥

१—प्रसन्न होता है। २—गुरु पद—त्रिकुटी। ३—त्रिवेणी। ४—उदासीन।
५—गुरु के संग के लिए दौड़ता है।

दरशन पाय मगन होत।
आनँद का मानो खुला सोत[1]।
कलमल[2] के सब दाग़ धोत।
प्रेम प्रीति लावत ॥ २ ॥
तन मन धन गुरू पै वार[3]।
भोग बासना तजत झाड़[4]।
शब्द भेद ले अपार।
गुरू गुन नित गावत ॥ ३ ॥
घट में दरशन सार पाय।
शब्द शोर सुनत जाय।
गुरू सतगुरू पद परस धाय।
मन में हरखावत ॥ ४ ॥
चढ़ चढ़ सुत हुई सार।
आगे को क़दम धार।
राधास्वामी पद सोभा अपार।
निरख निरख मुसक्यावत ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

खोजी जन सरस मन,
सुन सुन गुरू बचना ॥टेक॥
कुल मालिक की ख़बर पाय।
मारग का सब भेद गाय।

१—भंडार। २—काल के मैल के। ३—निछावर करके। ४—सभी।

सहज जुगत दई जनाय।
घट धुन में रचना[1] ॥ १ ॥
घट घट में सुरत सार।
शब्द ही सच्चा करतार।
दोऊ मिल उलट चढ़ें पार।
धुर पद जाय लखना ॥ २ ॥
सतसँग के बचन धार।
गुरू चरनन में लाय प्यार।
राधास्वामी सरन सम्हार।
जग से छिन छिन हटना ॥ ३ ॥
गुरू सरूप ध्यान लाय।
मन और सुरत अधर धाय।
शब्द शोर घट में सुनाय।
सहज सहज चलना ॥ ४ ॥
सतगुरू मोहि कीन्हा निहाल।
काल करम का काटा जाल।
राधास्वामी पद पूरन दयाल।
चढ़ चढ़ जाय मिलना ॥ ५ ॥

१—लीन होना।

॥ शब्द ७ ॥

चंचल चित चपल[1] मन,
नित जग में भरमावत ॥ टेक ॥
भक्ती की गहो[2] रीत ।
संतन का लेव सीत[3] ।
जग में कोइ नाहिं मीत[4] ।
धोखा क्यों खावत ॥ १ ॥
प्रेमी जन सँग मेल लाय ।
सतसँग में तुम बैठो जाय ।
छिन छिन राधास्वामी नाम गाय ।
अस करम नसावत[5] ॥ २ ॥
मानो गुरू सीख सार ।
चरनन में लाओ अधिक प्यार ।
गुरू ध्यान धरो चित सम्हार ।
छिन छिन रस पावत ॥ ३ ॥
शब्द का ले उपदेश सार ।
संशय भरम सब देव निकार ।
सूरत धुन सँग पियार ।
नित अधर चढ़ावत ॥ ४ ॥

१—चंचल । २—धारण करो । ३—प्रसाद । ४—मित्र । ५—नाश करो ।

नित नेम से करूँ भजन सार।
प्यारे राधास्वामी सरन सम्हार।
उन चरनन को रहूँ निहार।
दूजा[1] कोइ और न भावत[2]॥ ५॥

॥ शब्द ८ ॥

आओ रे जीव आओ आज,
गहो राधास्वामी सरना ॥ टेक ॥
आज ही निज करो काज।
छोड़ो कुल जग की लाज।
भक्ति भाव लाय साज[3]।
चरनन चित धरना ॥ १ ॥
सतसँग करो चित से चेत।
गुरू चरनन में लाओ हेत[4]।
राधास्वामी छिन छिन दया लेत।
सुत शब्द माहिं भरना ॥ २ ॥
मन और सुरत उठे जाग।
नभ द्वारे से निकल भाग।
घट में सुन सुन शब्द राग।
बहुर अधर चढ़ना ॥ ३ ॥

१—दूसरा। २—अच्छा लगता। ३—सामान। ४—प्रेम।

गगन ओर सुरत तान[१]।
त्रिकुटी धुन सुनी कान।
गुरू के चरन परस आन।
मन माया हरना[२] ॥ ४ ॥
तिरबेनी अश्नान कर।
मगन होय स्रुत चढ़ी अधर।
सत्त शब्द ध्यान धर।
भौसागर तरना ॥ ५ ॥
अलख अगम के पार जाय।
प्यारे राधास्वामी दरस पाय।
छिन छिन रह उन महिमा गाय।
चरन सरन पड़ना ॥ ६ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मन इंद्री आज घट में रोक,
गुरू मारग चलना ॥ टेक ॥
गुरू चरनन में लाय प्यार।
राधास्वामी धाम की आस धार[३]।
काल करम के बिघन टार[४]।
गुरू की गोद पलना ॥ १ ॥

१—खींच। २—दूर करना। ३—आस धार—आशा धारण करके, निशाना बाँध कर। ४—हटा कर।

सतसँग के बचन सार।
चेत सुनो और हिये में धार।
घट में चलो सतगुरु की लार[1]।
मन माया दलना ॥ २ ॥
जगत भाव और मोह त्याग।
भोगन में तजो राग[2]।
सँग सतगुरु तू खेल फाग।
क्यों जग भाटी जलना ॥ ३ ॥
शब्द जुगत नित कमाय।
गुरु सरूप ध्यान लाय।
राधास्वामी चरन सरन ध्याय।
गुरु चरनन रलना ॥ ४ ॥
श्याम सेत घाट पार।
सेत सूर लख उजार।
सत्त अलख अगम निहार।
राधास्वामी से मिलना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

मन इंद्री को घट में घेर,
गुरु जुगत कमावो ॥ टेक ॥
तीसर तिल में दृष्टि जोड़।
मन की गुनावन देव छोड़।

१—साथ। २—मोह।

घट में सुन शब्द शोर।
मन सुरत लगावो ॥ १ ॥
गुरु सरूप अगुआ[1] बनाय।
सहसकँवलदल पहुँचो धाय।
धुन घंटा और संख गाय।
गगन और धावो ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुन गरज धुन।
चंद्र रूप लख जाय सुन।
मुरली धुन पड़ी सरवन[2]।
सतपुरुष ध्यान लावो ॥ ३ ॥
राधास्वामी कीनी दया अपार।
काल और महाकाल रहे हार।
काट दिए सब करम झाड़।
हरदम उन गुन गावो ॥ ४ ॥
वहाँ से भी चली सुरत।
अलख अगम जाय किया निरत[3]।
चरनन पर सीस धरत।
राधास्वामी पद पावो ॥ ५ ॥

१—पथप्रदर्शक। २—कान में। ३—किया निरत—नृत्य किया यानी आनंद मनाया।

॥ शब्द ११ ॥

मनुआँ क्यों सोचे नाहिं,
जग में दुख भारी ॥ टेक ॥
जल्दी से उठ चेत जाग ।
सतसँग में तू जाव भाग ।
सतगुरु के चरन लाग ।
तज करम धरम सारी[1] ॥ १ ॥
जग में कोइ नाहिं मीत ।
सतसँग में धरो चीत ।
गुरु भक्ती की धार रीत ।
मत भरमे प्यारी ॥ २ ॥
सुरत शब्द उपदेश सार ।
गुरु से ले धर के प्यार ।
गुरु सरूप ध्यान धार ।
निरखो घट उजियारी ॥ ३ ॥
पिरथम लख जोत सार ।
निरखो फिर सूरज उजार ।
चंद्र रूप सुन में निहार ।
धुन मुरली धारी ॥ ४ ॥

१—सभी ।

सत्त अलख अगम निहार।
सूरत अब हुई सार[1]।
राधास्वामी पद निरखा अपार।
चरनन बलिहारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

प्यारी ज़रा कर बिचार,
यहाँ सदा नहीं रहना ॥ टेक ॥
इक दिन देह होत पात[2]।
छूटे कुल कुटुँब नात[3]।
आज ही सुन निज घर की बात।
क्यों जम के डंड सहना ॥ १ ॥
सतसँग में तुम बैठो जाय।
सतगुरु की सरन आय।
भक्ति भाव साज लाय।
सीस चरन देना ॥ २ ॥
सुरत शब्द जुगत धार।
गुरु चरनन में लाय प्यार।
निरखो घट में बहार।
नित रस ही लेना ॥ ३ ॥

१—श्रेष्ठ। २—नाश। ३—संबंध।

सेवा कर सतगुरु रिझाय।
मेहर दया उन परख आय।
घट में रहे नित हरख छाय।
सुरत शब्द गहना[1] ॥ ४ ॥
श्याम सेत के जाय पार।
सुन धुन मुरली बीन सार।
राधास्वामी प्रीतम चरन निहार।
सुनती निज बैना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मन रे क्यों माने नाहिं,
जग सँग क्या लेना ॥ टेक ॥
या जग के सकल[2] भोग।
जानो सब असाध[3] रोग।
स्थिर कोइ नाहिं होग।
गुरु चरनन चित देना ॥ १ ॥
धन सम्पति और कुल कुटुम्ब।
स्वारथ के सब ही संग।
भक्ती में करें भंग[4]।
इन सँग नहिं बहना[5] ॥ २ ॥

१—लेना। २—सभी। ३—असाध्य, कभी अच्छे न होने वाले। ४—विघ्न। ५—बह जाना।

सतसँग की क़दर जान।
सतगुरू सँग करो आन[१]।
सहज सहज कर पिछान[२]।
सीस चरन देना ॥ ३ ॥
शब्द जुगत यह सबका सार।
नित्त कमाओ धर के प्यार।
घट में लख बिमल बहार।
नित्त मगन[३] रहना ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन धार।
परखो उन दया अपार।
भौजल के जाव पार।
फिर दुख सुख नहिं सहना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मन रे चल गुरु के पास,
घर का भेद लीजे ॥ टेक ॥
यह जग है काल देस।
सच्चे सुख का नहीं लेस[४]।
घर चल धारो हंस भेस[५]।
प्रेम रंग भींजे ॥ १ ॥

१—आ कर। २—पहचान। ३—प्रसन्न। ४—अंश। ५—रूप।

वह घर है अगम अपार।
सतगुरु की चलो लार।
तन मन देव चरनों पै वार।
नित्त भक्ति कीजे ॥ २ ॥
अबहीं करो सतसंग सार।
भूल भरम सब देव निकार।
जल्दी कर नहिं देर धार।
नित काया छीजे ॥ ३ ॥
गुरु का आदि उपदेश मान।
चरनन में अब लाओ ध्यान।
सूरत घट धुन लगान।
अमृत रस पीजे ॥ ४ ॥
चढ़ चढ़ सुत गई पार।
बीन बाँसुरी धुन सम्हार।
पहुँची राधास्वामी धाम अपार।
हरख हरख रीझे ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

चल री सुत गुरु के देस,
धर हिये अनुरागा ॥ टेक ॥
सतगुरु के जाव पास।
देखो सतसँग बिलास।

छोड़ो अब जग की आस।
चित धर बैरागा ॥ १ ॥
शब्द का ले उपदेश सार।
घट में सुन धुन झनकार।
गुरु सरूप ध्यान धार।
काम क्रोध त्यागा ॥ २ ॥
लख जग का ब्योहार असार[1]।
स्वारथ के सबही यार[2]।
मन हुआ इनसे बेज़ार[3]।
गगन ओर भागा ॥ ३ ॥
नभ में लख जोत अजूब[4]।
त्रिकुटी गुरु का सरूप।
सुन में खिला चंदा अनूप।
सोहँग शब्द जागा ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष का दरस पाय।
अलख अगम को परसा जाय।
राधास्वामी धाम की ओर धाय।
चरन सरन लागा ॥ ५ ॥

१—झूठा। २—दोस्त। ३—नाराज, दुखी। ४—अद्भुत।

॥ शब्द १६ ॥

प्यारी क्यों सोच करे,
प्यारे राधास्वामी तेरे सहाई ॥टेक॥
जब से गुरू दरस पाय।
सतसँग में लगी धाय।
बचन रहे उन चित समाय।
गही राधास्वामी सरनाई ॥ १ ॥
सतसँग की निरखत बहार।
दिन दिन हिये में बढ़त प्यार।
करम धरम दिये निकार।
घट होत सफ़ाई ॥ २ ॥
सुरत शब्द अभ्यास सार।
नित्त कमावत यही कार[1]।
मन के गये सब बिकार[2]।
गुरू की दया पाई ॥ ३ ॥
सतगुरु हुए अब दयाल।
घट में सुनाई धुन रसाल[3]।
काल करम का काटा जाल।
सुरत अधर जाई ॥ ४ ॥

१—काररवाई। २—दोष। ३—रसीली।

बेनी[1] अश्नान कर।
सतपद लखा चढ़ अधर।
राधास्वामी चरनन ध्यान धर।
निज घर में आई ॥ ५ ॥

प्रेम लहर—भाग दूसरा

॥ शब्द १ ॥

चलो प्रेम सभा से मिलो री सखी।
जहाँ राधास्वामी गुन नित गाय रहे।टेक
भक्ती रीत जनाय खोल कर।
शब्द की महिमा सुनाय रहे ॥ १ ॥
प्रेमी जन जहाँ हिल मिल चालें।
गुरू चरनन चित लाय रहे ॥ २ ॥
तन मन धन गुरू चरनन वारत[2]।
नई नई उमँग जगाय रहे ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन।
नई नई सेवा लाय रहे ॥ ४ ॥
गुरू को पल पल मार्हि रिझावत[3]।
राधास्वामी चरन समाय रहे ॥ ५ ॥

१—त्रिवेणी। २—निछावर करते। ३—प्रसन्न करते।

॥ शब्द २ ॥

चलो घट में दौरा करो री सखी।
जहाँ अनहद बाजे बाज रहे ॥टेक॥
नैनन में तुम जाय बसो।
फिर पचरंगी[1] फुलवार लखो।
तिल खिड़की को खोल धसो[2]।
जहाँ घंटा संख नित गाज[3] रहे।१।
जोत उजार लखत सुत चाली।
बंक परे धुन गगन सम्हाली।
गुरु सरूप लख हुई निहाली[4]।
जहाँ सूर चंद बहु लाज रहे॥ २ ॥
सुन धुन में अब सुरत धरो।
जहाँ तिरबेनी अश्नान करो।
हंसन से चित हरख मिलो।
जहाँ अनेक अखाड़े साज रहे।३।
भँवरगुफा मुरली धुन गाओ।
सुन सुन बीन सत्तपुर धाओ।
हंसन संग आरती[5] लाओ।
जहाँ सतगुरु संत बिराज रहे।४॥

१—पाँच तत्वों के पाँच रंगों की। २—प्रवेश करो। ३—गरज। ४—सरशार।
५—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २।

राधास्वामी दया बना सब काजा।
पूरन भक्ति मिला अब साजा[1]।
काल और महाकाल रहे लाजा[2]।
करम धरम सब दाज[3] रहे॥ ५॥

॥ शब्द ३ ॥

निज घट में खोज पिया को सखी।
क्यों भरमे जगत उजाड़ा[4] री॥टेक॥
सतगुरु से ले घट भेद सही।
कर सतसँग उनका सारा री॥ १॥
तन मन और इंद्री रोक चलो।
धर सतगुरु चरनन प्यारा री॥ २॥
धुन घट में सुन सुन अधर चढ़ो।
जहाँ बहती निरमल धारा री॥ ३॥
कल[5] मल धोय हुई सुत निरमल।
लखती जोत उजारा री॥ ४॥
बंक पार धुन गगन सुनी।
सुन में जाय निरख बहारा री॥ ५॥
महासुन्न परे लख भँवरगुफा।
सतपुर सत दरस निहारा री॥ ६॥

१—सामान। २—लज्जित, शर्मिन्दा। ३—जल। ४—वीरान। ५—काल के।

अलख अगम के पार लखा।
राधास्वामी धाम नियारा[1] री॥ ७॥

॥ शब्द ४ ॥

सतगुरु के मुख सेहरा चमकीला।
अचरज शोभा देत सखी॥ १॥
फूल गूँथ कर प्रेमन लाई।
महक सुगँध सब लेत सखी॥ २॥
आरत[2] कर सब मगन[3] हुए।
अब तन मन देते भेंट सखी॥ ३॥
सूर किया गुरु खेत[4] जिताया।
काल को डाला रेत[5] सखी॥ ४॥
राधास्वामी दयाल दया की भारी।
सहज मिला पद सेत[6] सखी॥ ५॥

प्रेम लहर—भाग तीसरा

होली

॥ शब्द १ ॥

चल देखिये सतसँग में,
जहाँ निरमल फाग रचो री॥टेक॥
सतगुरु जहाँ बचन सुनावें।
प्रेमी जन सुन हरखावें।

१—अलहदा, अद्भुत। २—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। ३—प्रसन्न।
४—मन माया के साथ लड़ाई। ५—पीस। ६—निर्मल चेतन।

दरशन की शोभा निरखत।
मन में गुरु भाव[1] बढ़ो री॥ १॥
भक्ती रँग बरसत छिन छिन।
हिये प्रेम बढ़त अब दिन दिन।
गुरु पै सब वारत तन मन।
धन धन गुरु शोर मचो री॥ २॥
काल आपने खेल खिलावे।
जीवन को सद[2] भरमावे।
गुरु निकट न आने पावे।
घर इसका आज तजो री॥ ३॥
ले सुरत शब्द उपदेशा।
घट धुन में करो प्रवेशा।
अस छूटे काल कलेशा।
गुरु पद जाय दरस तको री। ४॥
सुन और महासुन पारा।
चढ़ी सुरत पकड़ धुन धारा।
राधास्वामी धाम निहारा।
जहाँ अचरज खेल खिलो री॥५॥

१—श्रद्धा। २—सदा।

॥ शब्द २ ॥

चलो आज गुरू दरबारा ।
जहाँ होवत सहज उधारा ॥टेक॥
मैं करम धरम भरमानी ।
भेषन[1] में रही भुलानी ।
गुरू महिमा नेक न जानी ।
जो करें जीव निस्तारा ॥ १ ॥
धुर दया हुई जब मुझ पर ।
गुरू भेदी मिलिया आकर ।
उन महिमा कही जना कर ।
गुरू चरन करो आधारा ॥ २ ॥
सतगुरू फिर किरपा धारी ।
दिया भेद मोहि निज सारी ।
सुत शब्द जुगत अति भारी ।
समझाई करके प्यारा ॥ ३ ॥
मन उमँग सहित घट लागा ।
सुन शब्द बढ़ा अनुरागा[2] ।
जग से हुआ चित बैरागा ।
गुरू रूप हिये में धारा ॥ ४ ॥

१—भेषधारी लोगों में । २—प्रेम ।

दरशन की उठी अभिलाषा ।
चल आई सतगुरु पासा ।
सतसँग का देख बिलासा ।
सुन सुन गुरु बचन सम्हारा ॥ ५ ॥
क्या महिमा सतसँग गाऊँ ।
या[1] सम[2] कोइ जतन न पाऊँ ।
मन के सब भरम हटाऊँ ।
गुरु अस्तुत करूँ सँवारा ॥ ६ ॥
गुरु निरख दीनता मेरी ।
करी मुझ पर मेहर घनेरी[3] ।
मैं हुई उन चरनन चेरी[4] ।
तन मन धन गुरु पर वारा ॥ ७ ॥
मन हुआ प्रेम रस माता[5] ।
गुरु सेव करत दिन राता ।
जग जीवन सँग नहिं भाता[6] ।
अब मिल गया सतसँग सारा ॥८॥
गुरु ध्यान धरत मन मगना[7] ।
धुन सुनत चढ़त सुत गगना ।
सतसँग में निस दिन जगना ।
मिला राधास्वामी सरन सहारा ९

१—इसके । २—समान । ३—बहुत । ४—दासी । ५—मतवाला ।
६—अच्छा लगता । ७—प्रसन्न ।

गुरू चरनन बिनती धारी।
मोहि लीजे बेग[1] सुधारी।
अपना कर दया बिचारी।
भौजल के पार उतारा ॥१०॥
बल काल करम का तोड़ो।
सूरत निज चरनन जोड़ो।
माया के परदे फोड़ो।
हरखूँ लख धाम नियारा ॥११॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे।
तुम गत मत अगम अपारे।
मैं जिऊँ तुम नाम अधारे।
दम दम तुम चरन निहारा।१२।

॥ शब्द ३ ॥

चलो सतगुरु घाट सखी री,
लेव मन और सुरत धुलाई ॥टेक॥
जहाँ प्रेम की बरखा भारी।
सतसँग जल नित ही जारी।
सब कल[2] मल[3] धोवत आ री।
घट द्वारा लेत खुलाई ॥ १ ॥

१—जल्दी। २—काल के। ३—मैल।

सतसँग कर करो गुरु सेवा।
लो उन से घट का भेवा।
छोड़ो सब देवी देवा।
इक राधास्वामी इष्ट बँधाई। २॥
सुत शब्द की धारो करनी।
मन सूरत धुन में धरनी।
या बिधि भौसागर तरनी।
नित सतगुरु रूप धियाई॥ ३॥
अस करो नित्त अभ्यासा।
मन सूरत चढ़ें अकाशा।
देखें वहाँ बिमल बिलासा।
निर्मलता होत सफ़ाई॥ ४॥
सतगुरु निज दया बिचारी।
जीवन का करें उपकारी।
राधास्वामी सरन सम्हारी।
नित राधास्वामी नाम जपाई।५॥

॥ शब्द ४ ॥

चल देखिये गुरु द्वारे।
जहाँ प्रेम समाज लगा री॥टेक॥
प्रेमी जन जुड़ मिल बैठे।
राधास्वामी महिमा कहते।

गुरु दरशन रस नित लेते।
इक इक का भाग जगा री॥ १॥
मैं नीच अधम नाकारा[1]।
सतसँग का लीन सहारा।
गुरु लेहैं मोहि सुधारा।
उन चरनन प्रीति पका[2] री॥ २॥
गुरु बचन सुनत मन मोहा।
तब भूल भरम सब खोया।
फिर करम धरम भी सोया।
यों माया काल ठगा री॥ ३॥
घट अंतर ध्यान लगाई।
सुन सुन धुन अति हरषाई।
मन सूरत अधर चढ़ाई।
गुरु अचरज दरस तका[3] री॥४॥
गगना में बजी बधाई।
बिरोधी सब रहे मुरझाई।
राधास्वामी की फिरी दुहाई।
उन महिमा छिन छिन गा री॥५॥

१—निकम्मा। २—पक्की करूँ। ३—देखा।

॥ शब्द ५ ॥

चल खेलिये सतगुरु से।
रँग होली आज सखी री ॥टेक॥
दरशन कर नैन निहारी।
गुरु शोभा आज लखी[1] री ॥ १ ॥
सतसँग के बचन सुहावन।
सुन सुन हिये प्रीति जगी री ॥ २ ॥
सुत शब्द जुगत अनमोला।
ले गुरु से आज तरी[2] री ॥ ३ ॥
खुल खेलूँ फाग नवीना।
गुरु चरनन सुरत धरी री ॥ ४ ॥
घट प्रेम रंग नित भरती।
गुरु चरनन छिड़क चली री ॥ ५ ॥
अस खेलत होली भारी।
नभ तज सुत गगन चढ़ी री ॥ ६ ॥
दस द्वारा खोलत चाली।
हंसन सँग उमँग मिली री ॥ ७ ॥
सतपुर सतगुरु से भेंटी।
राधास्वामी चरनन जाय बसी री ॥८॥

१—देखी। २—पार गई।

॥ शब्द ६ ॥

जग भाव तजो प्यारी मन से।
सतसँग में चित्त धरो री ॥ टेक ॥
सब करम धरम दुखदाई।
इन सँग क्यों भरम बहो री ॥ १ ॥
तज टेक पुरानी प्यारी।
राधास्वामी सरन गहो[1] री ॥ २ ॥
ले गुरु से शब्द उपदेशा।
सुत तिल में आज भरो[2] री ॥ ३ ॥
धुन सुन सुन होत मगन[3] मन।
गुरु चरनन भाव बढ़ो री ॥ ४ ॥
सुत उलटत नभ चढ़ झाँकी।
घंटा और संख सुनो री ॥ ५ ॥
चढ़ गगन अधर को धाई।
धुन मुरली बीन बजो री ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे।
उन चरनन जाय पड़ो री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहि दरस देव गुरु प्यारे।
क्यों एती[4] देर लगइयाँ ॥ १ ॥

१—लो। २—प्रवेश करो। ३—प्रसन्न। ४—इतनी।

मैं माँगत मागत थकियाँ ।
कोई जतन पेश नहिं जइयाँ ॥ २ ॥
बिन दया तुम्हारी दाता ।
यह जीव कहा कर सकियाँ[1] ॥ ३ ॥
अब परदा देव उठाई ।
तुम दरशन छिन छिन तकियाँ ॥ ४ ॥
मन इंद्री ज़ोर चलावत ।
जब तब मोहि नाच नचइयाँ ॥ ५ ॥
दूतन से बस नहिं चालत ।
मैं रहूँ नित्त मुरझइयाँ ॥ ६ ॥
निज मन से खूँट[2] छुड़ाओ ।
मेरी सूरत गगन चढ़इयाँ ॥ ७ ॥
सुन में लख चंद्र उजारा ।
हंसन सँग केल[3] करइयाँ ॥ ८ ॥
मुरली धुन गुफा सम्हालूँ ।
सतपुर जाय बीन बजइयाँ ॥ ९ ॥
लख अलख अगम दरबारा ।
राधास्वामी चरन समइयाँ ॥१०॥

१—सकता है । २—संबंध । ३—विलास ।

॥ शब्द ८ ॥

सतसँग की क़दर न जानी ।
मन बिरथा[1] बैस[2] गँवाई ॥ १ ॥
दुरलभ नरदेही पाई ।
याहि सुफल करो मेरे भाई ॥ २ ॥
गुरु चरन पकड़ दृढ़ आई ।
तब दया मेहर कुछ पाई ॥ ३ ॥
निज घर का देंहि सँदेसा ।
घट धुन में सुरत लगाई ॥ ४ ॥
जग भोग से कर बैरागा ।
गुरु चरनन प्रीति बढ़ाई ॥ ५ ॥
शब्दा रस तोहि पिला कर ।
मन सूरत अधर चढ़ाई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीन दयाला ।
भौसागर सहज लँघाई[3] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९ ॥

चरनन में चित्त लगाओ ।
जग आसा दूर हटाओ ॥ १ ॥
तब ध्यान रूप रस पाओ ।
धुन शब्द सुनत हरखाओ ॥ २ ॥

१—फ़ज़ूल । २—वयस, उम्र । ३—पार करावें ।

मन रस भोग घटाओ।
मन चंचल थीर[1] कराओ ॥ ३ ॥
गुरु चरनन प्रेम बढ़ाओ।
धुन सँग सुत अधर चढ़ाओ॥ ४ ॥
लख जोत सूर और चंदा।
धुन मुरली गुफा सुनाओ ॥ ५ ॥
सतपुर में बीन बजाओ।
फिर अलख अगम को धाओ॥ ६ ॥
ले मेहर दया सतगुरु की।
राधास्वामी चरन समाओ ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

तुम सोचो अपने मन में।
या जग में दुक्ख घनेरा[2] ॥ टेक ॥
यहाँ चार दिना का रहना।
फिर चलना छोड़ बखेड़ा ॥ १ ॥
सब स्वारथ सँग आय अटके।
कोइ साँचा संग न हेरा[3] ॥ २ ॥
गुरु हैं हितकारी तेरे।
उनके सँग करो निबेड़ा[4] ॥ ३ ॥

१—स्थिर। २—बहुत। ३—तलाश करता। ४—करो निबेड़ा—पार जाओ।

सतसँग कर उनका चित से।
ले उनसे जुगत सबेरा[1] ॥ ४ ॥
हित से करो नित्त अभ्यासा।
गुरु शब्द का बाँधो बेड़ा ॥ ५ ॥
चढ़ उतरो भौजल पारा।
सत शब्द सुनो धुन नेड़ा[2] ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारो।
छूटे सब मेरा तेरा ॥ ७ ॥

प्रेम लहर—भाग चौथा

॥ शब्द १ ॥

दरस देव प्यारे,
अब क्यों देर लगइयाँ हो ॥टेक॥
पिरथम जब मोहि दरशन दीने।
मन और बुद्धि मेरे हर लीने[3]।
बिरह अगिन हिये में धर दीने,
सुलगत नित्त तपइयाँ हो ॥ १ ॥
बचन सुना मेरी प्रीति बढ़ाई।
शब्द लखा परतीत दृढ़ाई।
करम भरम सब दूर हटाई।
घट में कार[4] कमइयाँ हो ॥ २ ॥

१—जल्दी। २—नज़दीक़। ३—हर लीने—मोहित कर लिए। ४—परमार्थी काररवाई।

शब्द रूप की सुन सुन महिमा।
घट में जागी उमँग नवीना।
रैन दिवस नहिं पाऊँ चैना[1]।
मीना[2] सम जल बिन तड़पइयाँ हो ३
राधास्वामी सतगुरु पिता हमारे।
जियत रहूँ उन चरन अधारे।
मेहर से लिया मोहि आप सम्हारे।
उन चरनन पर बलबल जइयाँ हो ४

॥ शब्द २ ॥

चलो घर प्यारे,
क्यों जग में नित्त फँसइयाँ हो ॥टेक॥
देह संग नित दुख सुख सहते।
मन इंद्री भोगन में बहते।
सतगुरु दया धार अब कहते।
चेतो तुम गहो[3] सरन गुसइयाँ[4] हो १
सतगुरु घर का भेद बतावें।
शब्द संग मन सुरत चढ़ावें।
काल करम से खूँट छुड़ावें।
उन सँग पार चलइयाँ हो ॥ २ ॥

१—आराम। २—मछली। ३—लो। ४—स्वामी की, मालिक की।

अधर धाम सतगुरु का डेरा[1],
पहुँचे वहाँ जिन धुन घट हेरा[2]।
सतगुरु दया सुरत ले घेरा।
प्यारे राधास्वामी चरन समइयाँ हो ३

॥ शब्द ३ ॥

गुरु बचन सम्हारो,
क्यों मन सँग भरमइयाँ हो ॥टेक॥
मन की कहन ज़रा मत मानो।
उस को पूरा बैरी जानो।
दृष्टि जोड़ सुत घट में तानो[3]।
अनहद शब्द सुनइयाँ हो॥ १ ॥
सतगुरु हैं तेरे साँचे मीता[4]।
उन सँग काल करम दोउ जीता।
शब्दारस नित घट में पीता।
चरनन सुरत धरइयाँ हो॥ २ ॥
राधास्वामी दाता हुए सहाई।
मेहर से मेरी सुरत जगाई।
चरनन में लिया जकड़ लगाई।
उन सँग काज बनइयाँ हो॥ ३ ॥

१—निवास। २—तलाश की। ३—लगाओ। ४—मित्र।

प्रेम लहर—भाग पाँचवाँ

॥ शब्द १ ॥

यह देश मुझे नहिं भावे।
यहाँ दुख सुख नित ही सहना।
कोइ भेद देव वा घर का।
जहाँ सदही आनँद लेना।
मैं उसके चरन पड़ूँ री ॥ १ ॥

सतगुरु घर भेद सुनावें।
चलने की जुगत लखावें।
जो सरनी उनकी आवें।
तिन[1] को ले धुर[2] पहुँचावें।
मैं उन मिल काज करूँ री ॥ २ ॥

मोहि मिल गये दाता प्यारे।
उन चरन सीस पर धारे।
सतसँग कर बचन सुना रे।
दरशन कर पाप कटा रे।
हिये में उन प्रेम भरूँ री ॥ ३ ॥

गुरु मेहर करी मो[3] पै भाई।
सुत शब्द जुगत बतलाई।

१—उन। २—सब से ऊँचे पद में। ३—मुझ।

यह देश काल का गाई।
मन सूरत अधर चढ़ाई।
घट में धुन शब्द सुनूँ री॥ ४॥
चढ़ चढ़ सुत ऊँचे चाली।
धुन सुन सुन हुइ मतवाली।
गुरु दृष्टि मेहर की डाली।
हुए दूर सकल[1] दुख साली[2]।
अब राधास्वामी चरन तकूँ री॥५॥

॥ शब्द २ ॥

हमें घर जाने दे।
मन क्यों तू बिघन कराय॥ टेक॥
जनम जनम जग में भरमाया।
भोगन संग रहा अटकाय॥ १॥
अब के तैं भल[3] औसर पाया।
गुरु चरनन में प्रीति लगाय॥ २॥
जो यह कहन न मानो मेरी।
बार बार चौरासी धाय॥ ३॥
बिषयन का तुम संग तियागो।
भोग बासना दूर हटाय॥ ४॥

१—सभी। २—कष्ट। ३—अच्छा।

गुरु की दया ले घट में चालो।
चढ़ो अधर तुम धुन रस पाय॥ ५॥
निरमल होय मिलै जाय गुरु से।
नित्त नवीन पिरेम जगाय॥ ६॥
सतगुरु संग चढ़त ऊँचे को।
सत्तलोक में आरत[1] लाय॥ ७॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर।
आज लिया निज काज बनाय॥ ८॥

॥ शब्द ३॥

भोग बासना मन में धरी।
मोसे सतसँग किया न जाय॥ टेक॥
मैं चाहूँ छोड़ूँ भोगन को।
देख भोग मन अति ललचाय॥ १॥
सतसँग बचन सुनूँ मैं कैसे।
मन रहे अनेक तरंग उठाय॥ २॥
चित चंचल मेरा चहुँ दिस धावे।
सुरत शब्द में नहिं ठहराय॥ ३॥
निरभय होय भरमे संसारा।
नई कामना नित्त जगाय॥ ४॥

१—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २।

बिन राधास्वामी अब कोइ नहिं मेरा।
जो यह बेड़ा पार लगाय ॥ ५ ॥

प्रेम लहर—भाग छठवाँ

॥ शब्द १ ॥

दया के सिंध[1] सतगुरू।
जीवन के हितकारी हो ॥ टेक ॥
चरनन में लगाय मोको।
दीनी भक्ति करारी[2] हो ॥ १ ॥
ओट[3] गही मैं उनकी अबके।
सहज मिला पद चारी हो ॥ २ ॥
मन इंद्री बहु बिघन लगाते।
देते दुख मोहि भारी हो ॥ ३ ॥
सतगुरू दया प्रबल[4] जब कीनी।
मन माया दोउ हारी हो ॥ ४ ॥
गहरी प्रीति बसी जब हिये में।
भोग लगे सब खारी[5] हो ॥ ५ ॥
सतगुरू रूप निरखती चाली।
शब्द में लागी तारी[6] हो ॥ ६ ॥
धुन घंटा और संख सुनाई।
निरखी जोत उजारी हो ॥ ७ ॥

१—सागर। २—तेज, ज़ोर की। ३—शरण। ४—ज़बरदस्त। ५—कड़वे।
६—लागी तारी—गहरा ध्यान लगा है।

गुरू पद जाय लखा त्रिकुटी में।
फिर अक्षर धुन धारी हो ॥ ८ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन पाई।
सतपुर बीन सम्हारी हो ॥ ९ ॥
अलख अगम के पार चढ़ाके।
हुई अब सब से न्यारी हो ॥१०॥
राधास्वामी दरशन पाये।
हुई उन चरनन प्यारी हो ॥११॥

॥ शब्द २ ॥

राधास्वामी दाता दीन दयाला।
किया भारी उपकारा हो ॥ टेक ॥
शब्द भेद दे जीव चितावें।
करें सहज छुटकारा हो ॥ १ ॥
सहज अभ्यास करें सब कोई।
जुगत कही निज सारा[1] हो ॥ १ ॥
चरन सरन दे जीव उबारें।
काटें करमन भारा हो ॥ ३ ॥
अपना बल दे कार[2] करावें।
देते गुप्त सहारा हो ॥ ४ ॥

१—असली। २—काररवाई।

कस कस महिमा गाऊँ उनकी।
कीनी दया अपारा हो ॥ ५ ॥
मैं अति नीच निकाम अनाड़ी[1]।
आन पड़ी उन द्वारा हो ॥ ६ ॥
दया मेहर से बचन सुनाए।
लीना मोहि सुधारा हो ॥ ७ ॥
ध्यान धरूँ नित घट में उनका।
देखूँ रूप पियारा हो ॥ ८ ॥
सुरत लगाय शब्द सँग धाऊँ।
निरखूँ जोत उजारा हो ॥ ९ ॥
त्रिकुटी होय चढ़ी ऊँचे को।
न्हाई बेनी[2] धारा हो ॥१०॥
भँवरगुफा का लखा उजारा।
महासुन्न के पारा हो ॥११॥
आगे चढ़ कर सुनी बीन धुन।
सत्तपुरुष दरबारा हो ॥१२॥
आरत[3] कर कर मगन हुई अब।
लखा वार और पारा[4] हो ॥१३॥
ले दुरबीन चली आगे को।
राधास्वामी दरस निहारा हो ॥१४॥

१—मूर्ख। २—त्रिवेणी। ३—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। ४—वार और पारा—ओर छोर।

दया मेहर उन क्या करूँ बरनन।
मैं चरनन बलिहारा हो ॥१५॥

॥ शब्द ३ ॥

प्रेम भक्ति गुरु धार हिये में,
आया सेवक प्यारा हो ॥ टेक ॥
उमँग उमँग करतन मन धन को।
गुरु चरनन पर वारा हो ॥ १ ॥
गुरु दरशन कर बिगसत[1] मन में।
रूप हिये में धारा हो ॥ २ ॥
आठ पहर गुरु संग रहावे।
जग से रहता न्यारा हो ॥ ३ ॥
मन माया को आँख दिखावे।
गुरु बल सूर[2] करारा[3] हो ॥ ४ ॥
शब्द डोर गह[4] चढ़ता घट में।
पहुँचा गगन मँझारा[5] हो ॥ ५ ॥
आगे चल सुनी सारँग किंगरी।
मुरली बीन सितारा हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से दीना।
निज पद अगम अपारा हो ॥ ७ ॥

१—प्रसन्न होता। २—बहादुर। ३—जबरदस्त। ४—पकड़ कर। ५—में।

॥ शब्द ४ ॥

जीव उबारन जग में आए।
राधास्वामी दीन दयाला हो ॥टेक॥
दरशन दे हिये प्रीति जगाई।
सबको किया निहाला[1] हो ॥ १ ॥
सतसँग में निज भेद सुनाया।
सुरत शब्द मत आला[2] हो ॥ २ ॥
जुगत बताय लगाया घट में।
बोल सुनाया बाला[3] हो ॥ ३ ॥
मन और सुरत समेटे तिल में।
खोला घट का ताला हो ॥ ४ ॥
घट में प्रेम बढ़ावत दिन दिन।
काटा माया जाला हो ॥ ५ ॥
करम धरम सब दूर हटाए।
सबहि बिकार निकाला हो ॥ ६ ॥
पाँचों दूत रहे मुरझाई।
हारा काल कराला[4] हो ॥ ७ ॥
निरमल होय चढ़ी सुत घट में।
झाँका गगन शिवाला[5] हो ॥ ८ ॥

१—सरशार। २—श्रेष्ठ। ३—ऊपर के धामों का। ४—भयंकर। ५—मंदिर।

मगन होय सुत धुन रस लेती।
पीती प्रेम पियाला हो ॥ ९ ॥
सुन में जाय मानसर न्हाई।
धारा रूप मराला[1] हो ॥१०॥
महासुन्न में थक कर बैठा।
महाकाल मतवाला हो ॥११॥
भँवरगुफा में धस गइ सूरत।
सोहं शब्द सम्हाला हो ॥१२॥
सत्तलोक में चढ़ कर पहुँची।
निरखा पुरुष निराला हो ॥१३॥
अलख अगम गुरु मेहर कराई।
आगे मारग[2] चाला हो ॥१४॥
मगन हुई निज दरशन पाये।
राधास्वामी महा किरपाला हो ॥१५॥

॥ शब्द ५ ॥

राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती।
जल्दी दरस दिखाओ हो ॥टेक॥
तड़प रही मैं बहुत दिनों से।
अब घट द्वार खुलाओ हो ॥ १ ॥

१—हंस। २—रास्ता।

तुम समरथ क्यों देर लगाई।
जल्दी मेहर कराओ हो ॥ २ ॥
मैं अति दीन पड़ी तुम द्वारे।
तुम बिन कोइ न सहारो हो॥ ३ ॥
सारी बैस[1] आस में बीती।
अब तो दया बिचारो हो ॥ ४ ॥
बिन दरशन निज रूप अपारा।
नहिं मेरा होत उधारो हो ॥ ५ ॥
जब लग सुरत चढ़े नहिं घट में।
मन से नहिं छुटकारो हो ॥ ६ ॥
चढ़ कर पहुँचूँ दसवें द्वारा।
निरखूँ भँवर उजारो हो ॥ ७ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस[2] के।
निज घर जाय सिहारो[3] हो ॥ ८ ॥
परम शांति में जाय समाऊँ।
सबसे होय नियारो हो ॥ ९ ॥
तब आसा पूरन होय मोरी।
तुम्हरे चरन बलिहारो हो ॥१०॥
राधास्वामी प्यारे दया उमँगाओ।
कीजे मम उपकारो हो ॥११॥

१—उम्र। २—स्पर्श करके। ३—पहुँचूँ।

प्रेम लहर—भाग सातवाँ

॥ शब्द १ ॥

स्वामी प्यारे क्यों नहिं दरशन देत।टेक
पिरथम दया मोपै कीन्ही भारी।
दिया चरनन में हेत[1] ॥ १ ॥
अब तकसीर[2] बनी क्या मोसे।
नेक सुद्ध नहिं लेत ॥ २ ॥
मैं बलि जाउँ चरन पर तुम्हरे।
डारूँ तन मन रेत[3] ॥ ३ ॥
तुम्हरी दया होय जब न्यारी।
काल करम रहें खेत[4] ॥ ४ ॥
करूँ पुकार सुनो मेरे प्यारे।
सुरत चढ़ाओ आज पद सेत[5] ॥ ५ ॥
वहीं मोहि दरस देव स्वामी प्यारे।
जहाँ राधास्वामी की अचरज नेत।६।

॥ शब्द २ ॥

भक्ति कर लीजिये जग जीवन थोड़ा ॥टेक॥
चार दिनों का खेल यह, देह तजना ज़रूरी।
सतगुरु का सतसंग कर, तज मान ग़रूरी[6] ॥

१—प्रेम। २—क़सूर। ३—पीस। ४—रहें खेत—हार जावें। ५—निर्मल चेतन। ६—अहंकार।

हिये में आज बसाय ले, तू चरन हज़ूरी ।
अंतर दृष्टि खुलाय कर, लखना सत नूरी[1] ॥
सतगुरु सँग तू बाँध ले प्यारी अब के जोड़ा।१।
बंध छुड़ावन आइया, सतगुरु संसारा ।
आज्ञा उनकी मानिये, हिये धर कर प्यारा ॥
शब्द की जुगत कमाय कर, कीजे निरवारा[2] ।
नाम बिना सब जीव, बहे चौरासी धारा॥
भाग जगा मोहि मिल गये गुरु बंदीछोड़ा[3]।२।
दया करी गुरु प्रीतमा, मोहि संग लगाई ।
घर का भेद सुनाय कर, सुत अधर चढ़ाई ॥
घंटा संख सुनाय कर, फिर जोत लखाई ।
वहाँ से गगन चढ़ाय कर, धुन गरज सुनाई॥
चंद्र रूप लख काल से अब नाता तोड़ा।३।
भँवरगुफा में जाय कर, सुनी मुरली प्यारी ।
सत्तलोक में पुरुष का, जाय रूप निहारी॥
अलख अगम का रूप लख, सुत चढ़ गई पारी।
मेहर दया गुरु पाय कर, हुई सबसे न्यारी॥
राधास्वामीदर्शनपायकर सुतहोगईपोढ़ा[4]४

१—प्रकाश । २—छुटकारा । ३—बंधन छुड़ाने वाले । ४—मज़बूत ।

॥ शब्द ३ ॥

गगन में बाजत आज बधाई ॥टेक॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे।
संत रूप धर आए।
जगत में भक्ती रीति चलाई॥ १ ॥
निज घर का स्वामी भेद सुनाया।
सुरत शब्द मारग समझाया।
जिन माना तिन चरन लगाई। २ ॥
प्रेम बढ़ा करनी करवाई।
करनी कर बहु मेहर बढ़ाई।
काल करम से खूँट[1] छुड़ाई॥ ३ ॥
चरन सरन दे लिया अपनाई।
प्रीति प्रतीति जिव हृदे बसाई।
शब्द संग सुत अधर चढ़ाई॥ ४ ॥
गगन मार्हि गुरु पद दरसाया।
सतपुर सतगुरु रूप लखाया।
राधास्वामी धाम दिया पहुँचाई ५

बचन १५—बिनती और प्रार्थना

॥ शब्द १ ॥

हे मेरे प्यारे सतगुरु।
मोहि दरशन दीजे ॥ १ ॥

१—संबंध।

हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
मोहि अपना कीजे ॥ २ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
मेरा मन हर लीजे[1] ॥ ३ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
तन छिन छिन छीजे[2] ॥ ४ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
मेरा कारज जल्दी कीजे। ५ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
मेरी सुरत शब्द सँग सीजे[3]।६।
प्यारे राधास्वामी दीनदयाला।
मेरी आसा पूरन कीजे॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
तुम दाता अपर अपारा ॥ १ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
मोहि नाम देव निज सारा ॥ २ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
मैं अधम नीच नाकारा[4] ॥ ३ ॥

१—हर लीजे—अपनी तरफ़ खींच लीजिए। २—कमज़ोर होता जाता है।
३—एक रूप हो जावे। ४—निकम्मा।

हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
किरपा कर लेव उबारा ॥ ४ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
तुम समरथ दीन दयारा ॥ ५ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
मोहि जग से कीजे न्यारा ॥ ६ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
दिखलाओ गुरू दरबारा ॥ ७ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
तुम बिन नहि और सहारा ॥ ८ ॥
हे मेरे प्यारे सतगुरू ।
अपना कर लेव उबारा ॥ ९ ॥
प्यारे राधास्वामी परम दयाला ।
मुझ दीन का करो गुज़ारा ॥१०॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरू धरा सीस पर हाथ ।
मन क्यों सोच करे ॥ १ ॥
गुरू रक्षा हरदम संग ।
क्यों नहि धीर धरे ॥ २ ॥

गुरु राखें[1] राखनहार ।
उनसे काज सरे[2] ॥ ३ ॥
तेरी करें पच्छ[3] कर प्यार ।
बैरी दूर पड़े ॥ ४ ॥
गुरु दाता दीन दयार ।
चरन लग जगत तरे ॥ ५ ॥
उन महिमा अकह अपार ।
बरनन कौन करे ॥ ६ ॥
सोइ चाखे अमी रस सार ।
चरनन सुरत धरे ॥ ७ ॥
घट बाजे अनहद सार ।
सुन सुन अधर चढ़े ॥ ८ ॥
गुरु देवें बिघन हटाय ।
उनसे काल डरे ॥ ९ ॥
माया दल मारें आय ।
मोह मद[4] अगिन जरे ॥१०॥
बिन राधास्वामी गुरु समरत्थ ।
को अस दया करे ॥११॥
वही है बड़भागी जीव ।
जो उन सरन पड़े ॥१२॥

१—रक्षा करें । २—बने । ३—तरफ़दारी । ४—अहंकार ।

धर हिये में गहिरी प्रीति।
सँग में आन पड़े[1] ॥१३॥
मेरा जागा अस बड़ भाग।
जग जिव अचरज करे ॥१४॥
गुरु कीन्ही मेहर अपार।
बैरी जल जल मरे ॥१५॥
मेरे मात पिता गुरु देव।
महिमा कौन करे ॥१६॥
प्यारे राधास्वामी दीनदयाल।
छिन छिन सार[2] करें ॥१७॥

॥ शब्द ४ ॥

बिनती करूँ चरन में आज।
बेग[3] सँवारो मेरा काज ॥ १ ॥
तुम सतगुरु मेरे परम उदार[4]।
मुझ ग़रीब को लेव सुधार ॥ २ ॥
तन मन मेरा बँधा जगत में।
बीती जात उमर खटपट में ॥ ३ ॥
भजन ध्यान कुछ बन नहिं आवत।
छिन छिन मन भोगन में धावत[5] ॥ ४ ॥

१—ठहर गए। २—रक्षा। ३—जलदी। ४—दयालु। ५—दौड़ कर जाता है।

क्योंकर रोकूँ मन को तन में।
न्यारा[1] होय सुनूँ कस धुन मैं॥ ५॥
बिन तुम दया नहीं कुछ होई।
राधास्वामी करो मेहर अब सोई॥६॥
मैं अति निरबल चरन अधीना।
तुम सतगुरु मेरे अति परबीना[2]॥ ७॥
मैं हूँ छिन छिन भूलनहार।
तुम्हरी सरन गही[3] अब हार॥ ८॥
बख़्शो भूल और चूक हमारी।
भौसागर से लेव उबारी॥ ९॥
गुन गाऊँ तुम चरन धियाऊँ।
राधास्वामी सरन समाऊँ॥१०॥

॥ शब्द ५ ॥

सुनो बीनती स्वामी महाराज।
अपना कर मेरी राखो लाज॥ १॥
मन इन्द्री मोहि अति भरमावत।
चित चंचल मेरा थिर[4] न रहावत॥२॥
दया तुम्हार निरख रहा दम दम।
फिर भी यह मन धावत हर दम॥ ३॥

१—अलग। २—प्रवीण, चतुर। ३—ली। ४—स्थिर।

रोक रोक याहि चरन लगाता ।
चुप नहिं रहे फिरे मद माता[1] ॥ ४ ॥
अनेक गुनावन रहे उठाई ।
तरह तरह के रंग दिखाई ॥ ५ ॥
कोइ बिधि सुरत न लगने पावे ।
धुन रस ले मन नहिं त्रिपतावे[2] । ६ ।
बहु दिन अस खटपट में बीते ।
काल करम अब तक नहिं जीते ॥ ७ ॥
मैं नहिं जानूँ मौज तुम्हारी ।
क्यों नहिं इनको मार निकारी ॥ ८ ॥
मैं निर्बल क्या लड़ने जोगा[3] ।
दया करो काटो यह रोगा ॥ ९ ॥
निरमल होय मन बैठे घर में ।
सुरत बिहंगम[4] चढ़े अधर में ॥१०॥
साँची प्रीति लगे घट धुन में ।
अमृत रस पीवे चढ़ सुन में ॥११॥
निर्भय होय जगत को त्यागे ।
मान मनी[5] तज घर को भागे ॥१२॥
निस दिन रहूँ आनँद में चूर[6] ।
प्रेम दात दीजे भरपूर ॥१३॥

१—मद माता—अहंकार के कारण पागल । २—संतुष्ट होता । ३—योग्य, लायक़ । ४—पक्षी । ५—मानमनी—मन का अहंकार । ६—मतवाला ।

दृढ़ कर पकड़े चरन तुम्हारे ।
तुम बिन नहिं कोइ और अधारे[1] ।१४
जल्दी करो देर क्यों धारी ।
राधास्वामी अब मोहि लेव सम्हारी१५

॥ शब्द ६ ॥

चरन में बिनती करूँ बनाय ।
सुरत मेरी दीजे आज चढ़ाय ॥ १ ॥
होय मन धुन रस में सरशार[2] ।
जगत के सबही ख़्याल निकार ॥ २ ॥
काल और करम मिटाऊँ झार[3] ।
गगन चढ़ देखूँ बिमल बहार ॥ ३ ॥
होय वहाँ निरभय करूँ बिलास ।
चरन में गुरु के रह कर पास ॥ ४ ॥
सुनूँ फिर चढ़ कर धुन रारंग ।
मानसर न्हाऊँ हंसन संग ॥ ५ ॥
बिना तुम मेहर नहीं कुछ होय ।
जतन[4] मेरा काम न आवे कोय ॥ ६ ॥
दया बिन कैसे यह पद पाय ।
मेहर मो पै पूरी करो बनाय ॥ ७ ॥

१—सहारा । २—लीन । ३—सभी । ४—उपाय ।

जाऊँ फिर वहाँ से महासुन पार।
भँवर का देखूँ सेत उजार[१] ॥ ८ ॥
परस फिर सत्तपुरुष चरना।
अलख और अगम सुरत भरना। ९।
लखूँ फिर धाम अनामी जाय।
परम गुरु राधास्वामी दरशन पाय।१०
चरन में बिनती करूँ अनंत[२]।
मिलेमोहिराधास्वामी प्यारे कंत११
सरन गह बैठूँ होय निर्चित।
दया से राधास्वामी भाग जगंत[३]।१२।

॥ शब्द ७ ॥

चरन में राधास्वामी करूँ पुकार।
सरन दे लीजे मोहि उबार ॥ १ ॥
बहुत दिन भटकी भरमन में।
नेष्टा[४] धारी करमन में ॥ २ ॥
सुमिर रही बहु दिन किरतम[५] नाम।
भेद बिन सरा[६] न कोई काम ॥ ३ ॥
दया हुई चरनन में आई।
भेद निज घट का यहाँ पाई ॥४॥

१—प्रकाश। २—बेअंत, अनगिनत। ३—उदय हो जावें। ४—श्रद्धा। ५—कृत्रिम, नक़ली। ६—बना।

प्रीति मेरी सेवा में लागी।
शब्द धुन सुन सूरत जागी ॥ ५ ॥
परख[1] कर तोड़ जगत की प्रीत।
करूँ नित सतसँग धर परतीत ॥ ६ ॥
दया ले मन इंद्री रोकूँ।
शब्द सुन मन सूरत पोखूँ[2] ॥ ७ ॥
टेक राधास्वामी हिरदे धार।
आस सब जग की देउँ निकार ॥ ८ ॥
भजन कर मगन रहूँ मन में।
नाम गुरु सुमिरूँ छिन छिन में ॥ ९ ॥
दया कर राधास्वामी परम उदार।
करें मेरा बेड़ा इक दिन पार ॥१०॥

॥ शब्द ८ ॥

राधास्वामी दीन दयाला।
मोहि दरशन दीजे ॥
मेरे प्यारे गुरु दातारा।
निज किरपा कीजे ॥ १ ॥
मेरे सतगुरु समरथ साईं।
क्यों देर लगाई ॥

१—जाँच। २—पोषण करूँ।

मैं तरसूँ तड़पूँ निस दिन।
सुत जल्दी देव चढ़ाई ॥ २ ॥
मैं औगुनहारा भारी।
धर छिमा करो उपकारी ॥
तुम अपनी ओर निहारो।
मैं बालक सरन तुम्हारी ॥ ३ ॥
मेरा काज करो अब बिधि[1] से।
तुम राधास्वामी अपर अपारी॥
मैं दीन ग़रीब भिखारी।
तुम द्वारे आन पड़ा री ॥ ४ ॥
अब मेहर हिये उमँगाओ।
जल्दी निज रूप दिखाओ ॥
मेरे घट में प्रेम बढ़ाओ।
तब तन मन शांति धराओ॥ ५ ॥
तुम मात पिता गुरु दाता।
मैं नीच विषय मद माता[2] ॥
मन चरनन रस रहे राता[3]।
नित राधास्वामी महिमा गाता ६

१—तरकीब। २—मद माता—अहंकार से पागल। ३—रँगा हुआ, मगन।

मुझ से कुछ बन नहिं आई ।
क्योंकर मेरा काज बनाई ॥
तुम राधास्वामी होव सहाई ।
तब सभी बात बन आई ॥ ७ ॥

बचन १६—बसंत और होली

अंग पहला—बसंत

॥ शब्द १ ॥

आज आई बहार बसंत[1] ।
उमँग मन गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥
दया धार गुरु जग में आए ।
भक्ती की फुलवार खिलाय ॥ २ ॥
प्रेम बदरिया बरषा लाई ।
नइ नइ धुन घट शब्द सुनाय ॥ ३ ॥
सभी सुहागिन खेलन आईं ।
गुरु सँग अचरज फाग रचाय ॥ ४ ॥
तन मन धन की धूल उड़ावत ।
प्रेम प्रीति का रंग घुलाय ॥ ५ ॥
गुरु चरनन पर बारम्बारा ।
डार डार रँग हिये हरखाय ॥ ६ ॥

१—वह ऋतु या समय जब संसार में बसने या निवास का अंत होने वाला है । इसके अतिरिक्त बसंत ऋतु सारी ऋतुओं में सर्वोत्तम है । इसी प्रकार मनुष्य शरीर भी और सारे जीवधारियों से श्रेष्ठ है । इसलिए बसंत ऋतु से प्रयोजन मनुष्य शरीर से भी लिया जाता है ।

भक्ति दान फगुआ लिया गुरु से।
इक इक अपना काज बनाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दीनदयाल कृपाला।
सब को लिया निज चरन लगाय ॥८॥

॥ शब्द २ ॥

चेतो[1] चेतो सखी ऋतु आई बसंत[2]।
खोजो सतगुरु प्यारे कंत[3] ॥ १ ॥
अब तन मन अरपो[4] चरन संत।
सुरत शब्द का पाओ पंथ[5] ॥ २ ॥
राग भोग मन से तजंत।
चरन सरन गुरु दृढ़ करंत ॥ ३ ॥
गुरु मूरत हिये में बसंत।
शब्द डोर ले नभ चढ़ंत ॥ ४ ॥
शब्द शब्द का कर बृतंत[6]।
पहुँची चढ़ कर देश संत ॥ ५ ॥
सत्तलोक सतगुरु मिलंत।
बाजन लागीं धुन अनंत ॥ ६ ॥
अलख अगम के पार परंत[7]।
राधास्वामी धाम मिला बेअंत[8]॥ ७ ॥

१—होश में आओ। २—देखिए पृष्ठ २८१ नोट नं० १। ३—स्वामी। ४—भेंट करो। ५—मार्ग। ६—वर्णन। ७—जावे। ८—अनंत।

महिमा राधास्वामी कस कहंत।
राधास्वामी दीना पूरा मंत[1] ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

ऋतु बसंत[2] आये सतगुरु जग में।
चलो चरनन पर सीस धरो री ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति करो उन चरनन में।
अपने जीव का काज करो री ॥ २ ॥
काल करम दोउ अति बलवाना।
बचो इनसे गुरु सरन गहो री ॥ ३ ॥
मन इंद्री सँग बहुत ठगाई।
भूल भरम तज होश करो री ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन सुनो धर काना।
मान मनी[3] तज संग रलो[4] री ॥ ५ ॥
उमँग अंग ले कर गुरु सेवा।
दीन अधीन होय चरन पड़ो री ॥ ६ ॥
मेहर करें वे भेद लखावें।
तब घट में धुन शब्द सुनो री ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल परम हितकारी।
जीव काज निज धाम तजो री ॥ ८ ॥

१—मंत्र। २—देखिए पृष्ठ २८१ नोट नं० १। ३—मान मनी—मन का अहंकार। ४—मिलो।

मेहर करी मोहि चरन लगाया।
अचरज भाग जगाय दियो री ॥ ९ ॥
पियत रहूँ नित धुन रस घट में।
मन सूरत मेरे गगन चढ़ो री ॥१०॥
गुरु पद परस चढ़त ऊँचे को।
सत्तलोक सतपुरुष मिलो री ॥११॥
अलख अगम का दरशन करके।
प्यारे राधास्वामी धाम बसो री ॥१२॥

॥ शब्द ४ ॥

ऋतु बसंत[1] फूली जग माहीं।
मिल सतगुरु घट खोज करो री ॥ १ ॥
दीन अधीन होय चरनन में।
प्रेम उमँग हिये बीच धरो री ॥ २ ॥
सुरत शब्द मारग दरसावें।
शब्द माहि अब सुरत भरो[2] री ॥ ३ ॥
दृढ़[3] परतीत धार हिये अंतर।
दया मेहर ले गगन चढ़ो री ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी।
हित चित से उन सरन पड़ो री ॥ ५ ॥

१—देखिए पृष्ठ २८१ नोट नं० १। २—प्रवेश करो। ३—मज़बूत, पक्की।

राधास्वामी नाम सुमिर निस दिन में।
मन इंद्री के भोग तजो री ॥ ६ ॥
काज करें तेरा पूरा छिन में।
भौसागर से आज तरो री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५ ॥

ऋतु बसंत[1] फूली जग माहीं।
मन और सुरत चेत हरखाईं ॥ १ ॥
दया मेहर राधास्वामी की परखी[2]।
कँवल कियारी अंतर निरखी ॥ २ ॥
धुन फुलवार खिली घट घट में।
काल करम रहे थक खटपट में ॥ ३ ॥
मन चख रहा अमी रस प्याला।
मगन हुआ घट खोला ताला ॥ ४ ॥
सुरत चली घर को अब दौड़ी।
नभ पर चढ़ी पकड़ धुन डोरी ॥ ५ ॥
आगे चढ़ गुरु दरशन पाई।
गरज गरज धुन मेघ[3] सुनाई ॥ ६ ॥
सुन में जा धुन अक्षर पाई।
मानसरोवर तीरथ न्हाई ॥ ७ ॥

१—देखिए पृष्ठ २८१ नोट नं० १। २—पहचानी। ३—बादल की।

राधास्वामी दयाल मिले मोहि आई।
आगे की फिर गैल[1] लखाई ॥ ८ ॥
महाकाल का तोड़ा नाका[2]।
भँवरगुफा तक सतपुर झाँका ॥ ९ ॥
सत्तपुरुष के दरशन पाये।
सत्त शब्द धुन बीन सुनाये ॥१०॥
अलख अगम के पार अनामी।
अमी सिंध में जाय समानी ॥११॥
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई।
दया करी मोहि अंग लगाई ॥१२॥
चरन कँवल में बासा दीन्हा।
न्यारा कर अपना कर लीन्हा ॥१३॥
छिन छिन आरत करूँ बनाई।
चरन सरन मैं दृढ़ कर पाई ॥१४॥

॥ शब्द ६ ॥

निरखो निरखो सखी ऋतु आई बसंत[3]।
खोज करो घर आदि[4] अंत[5] ॥ १ ॥
देखो देखो सखी यह जग लबार[6]।
धोखा दे रहा मन गँवार[7] ॥ २ ॥

१—रास्ता। २—गढ़, क़िलेबन्दी। ३—देखिए पृष्ठ २८१ नोट नं० १। ४—सबका आदि। ५—सब से अंत का यानी सबसे ऊँचा। ६—झूठा। ७—मूर्ख।

खोजो खोजो सखी सतगुरु दयार।
करम भरम सब दें निकार ॥ ३ ॥
पकड़ो पकड़ो सखी तुम उनकी बाँह।
उन बिन रक्षक नहिं जग माहिं ॥ ४ ॥
धारो धारो सखी तुम उनकी सरन।
सुरत शब्द ले भौ तरन ॥ ५ ॥
धाओ धाओ सखी सुन सुन्न की धुन।
छिन में मिट जायँ पाप और पुन्न ॥ ६ ॥
चलो चलो सखी सतगुरु की लार[1]।
पहुँचो राधास्वामी पद दयार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ७ ॥

आज आया बसंत[2] नवीन।
सखी री खेलो गुरु सँग फाग[3] रचाय ॥ १ ॥
भाँति भाँति[4] के फूल खिलाने।
नई नई डाल डाल लहराय ॥ २ ॥
जहाँ तहाँ खिल रही नई बहारा।
पीत[5] रंग रहा चहुँ दिस छाय ॥ ३ ॥
सखियाँ सब जुड़ मिल कर आईं।
सतगुरु चरनन प्रेम जगाय ॥ ४ ॥

१—साथ। २—देखिए पृष्ठ २८१ नोट नं० १। ३—होली। ४—तरह तरह ५—पीला।

पीत रंग बस्तर पहिनाये।
चमक दमक सँग साज सजाय ॥ ५ ॥
दरशन कर हिये में हरखाई।
अद्भुत शोभा बरनी न जाय ॥ ६ ॥
सतगुरु मुखड़ा छिन छिन निरखत।
बार बार चरनन बल जाय ॥ ७ ॥
उमँग उमँग गुरु चरनन लागी।
हिये में नया नया भाव धराय ॥ ८ ॥
प्रेम भरी मुख आरत गावत।
तन मन को सब सुधि[1] बिसराय ॥ ९ ॥
समाँ बँधा इस औसर ऐसा।
हंस हंसनी रहे लुभाय ॥१०॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर।
सब को लीना चरन लगाय ॥११॥
प्रेम दात दे हरख हरख कर।
इक इक का दिया भाग बढ़ाय ॥१२॥
राधास्वामी महिमा को सके गाई।
बेद कतेब रहे शरमाय ॥१३॥
जोगी ज्ञानी कहन न जानें।
जोत निरंजन भेद न पाय ॥१४॥

१—याद।

प्यारे राधास्वामी परम दयाला।
हम नीचन को लिया अपनाय ॥१५॥

अंग दूसरा—होली

॥ शब्द १ ॥

होली खेलूँगी सतगुरु साथ।
सुरत मन चरन लगाई ॥ १ ॥
करम जाल को जार[1]।
भरम की धूल उड़ाई ॥ ॥ २ ॥
गुनन[2] गुलाल उड़ाय।
शब्द का रंग बहाई ॥ ३ ॥
प्रेम नशे में चूर[3]।
चरन गुरु रहूँ लिपटाई ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन पुकार।
जगत में धूम मचाई ॥ ५ ॥
राधास्वामी महिमा गाय।
सरन में निस दिन धाई ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम सुनाय।
काल से जीव बचाई ॥ ७ ॥

१—जला कर। २—अच्छे गुणों का। ३—मतवाली।

॥ शब्द २ ॥

आज मेरे आनँद बजत बधाई,
नइ होली खेलन मन भाई[1] ॥टेक॥
ऋतु बसंत आये सतगुरू प्यारे।
तन मन धन सब उन पर वारे।
या से रीझें[2] पुरुष बिदेही[3]।
जगत बिच धूम मचाई ॥ १ ॥
घट घट प्रेम रंग भरवावें।
अबीर गुलाल घोल घुलवावें।
अटक भटक सबही तुड़वावें।
काल दुष्ट को मार गिरावें।
बोल राधास्वामी की दुहाई ॥ २ ॥
कुमकुम[4] बरषा चहुँ दिस[5] होई।
हरषत उमँगत मन सुत दोई।
सतगुरु पर रँग डारत सोई।
भींजत बिगसत[6] सज्जन लोई[7]।
प्रेम रँग धार बहाई ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु सब धूल उड़ावें।
करम भरम के धक्के खावें।

१—अच्छी लगी। २—प्रसन्न होते हैं। ३—रूप रेखा से रहित। ४—लाख के बने हुए रँग से भरे हुए छोटे गोले। ५—तरफ़। ६—प्रसन्न होते हैं। ७—लोग।

जम के दूत नित अधिक सतावें।
बार बार मुख गारी लावें।
चौरासी में जाय खपाई[1] ॥ ४ ॥
हमको सतगुरु लिया अपनाई।
करम भरम सब फूँक जलाई।
दृढ़ परतीत और प्रीति जगाई।
धुर घर का निज भेद लखाई।
सुरत मन अधर चढ़ाई ॥ ५ ॥
उमँग मेरे हिये में उठत करारी[2]।
लखूँ गुरु दरशन शोभा भारी।
मोहनी छबि[3] पर जाउँ बलिहारी।
करूँ मैं सेवा इक इक न्यारी।
चरन में हित चित से गठियाई[4] ॥ ६ ॥
दया मेरे मन में अधिक समाई।
यही जग जीवन आख[5] सुनाई।
बचा चाहो दुक्खन से जो भाई।
आओ राधास्वामी की सरनाई।
जतन कोइ और पेश नहि जाई ॥ ७ ॥
खेल फिर सतगुरु सँग तू होली।
सुनो और परखो घट की बोली[6]।

१—परेशान होता रहता है। २—तेज़। ३—शोभा। ४—बाँध कर।
५—कह कर। ६—शब्द।

काल के बिघन डाल सब रोली[1]।
दया गुरू मारो माया पोली[2]।
हिये में छिन छिन राधास्वामी गाई ।८।

॥ शब्द ३ ॥

आज सँग सतगुरू खेलूँगी होरी।
मेरे हिये बिच उठत हिलोरी[3] ॥ १ ॥
सुरत अबीर मलूँ चरनन पर।
प्रेम रंग पिचकारी छोड़ी ॥ २ ॥
धुन धधकार शब्द की बरषा।
गुनन[4] गुलाल उड़ो री ॥ ३ ॥
काम क्रोध अहंकार ईरषा।
मुख इनका अब जात जलो री ॥ ४ ॥
राधास्वामी महिमा सब मिल गावें।
गावत गावत बचन थको री ॥ ५ ॥
काल करम दोउ मार बिडारे[5]।
भाग गई माया घर छोड़ी ॥ ६ ॥
ऐसे समरथ राधास्वामी पाए।
लाग रहूँ चरनन चित जोड़ी ॥ ७ ॥

१—डाल रोली—रगड़ दे यानी नाश कर दे। २—निस्सार। ३—उमंग।
४—शुभ गुणों का। ५—भगा दिये।

॥ शब्द ४ ॥

फागुन[1] की ऋतु आई सखी।
मिल सतगुरू खेलो री होरी॥ १ ॥
अनहद शब्द सुनो घट अंतर।
घंटा संख बजो री ॥ २ ॥
झाँझ मृदंग बाँसरी बाजे।
मधुर मधुर धुन बीन सुनो री॥ ३ ॥
जगत जाल यह काल बिछाया।
बिरह प्रेम बल तोड़ चलो री॥ ४ ॥
मान मनी[2] की धूल उड़ाओ।
चरनन में चित जोड़ रहो री॥ ५ ॥
ऐसा औसर फिर न मिलेगा।
हित चित से अब संग करो री॥ ६ ॥
दृढ़ परतीत और प्रीति सम्हारो।
जैसे चंद्र चकोरी[3] ॥ ७ ॥
प्रेम रंग सतगुरू बरसावें।
भींज रही सखियाँ सरबोरी[4]॥ ८ ॥
ऐसी होली खेल सतगुरू सँग।
राधास्वामी चरनन जाय मिलो री ९

१—मनुष्य शरीर से प्रयोजन है। २—मान मनी—मन के अहंकार।
३—चकोर पक्षी। ४—पूरी तरह से।

॥ शब्द ५ ॥

सखी री ऐसी होली खेल।
जा में प्रेम का रंग बहे री ॥ १ ॥
सतगुरु दया फोड़ नभ द्वारा।
जोत सरूप लखे री ॥ २ ॥
बंकनाल धस गढ़ त्रिकुटी पर।
मन और सुरत चढ़ें री ॥ ३ ॥
घंटा संख मृदंग कींगरी।
मुरली बीन बजे री ॥ ४ ॥
कोटि सूर और चंद्र प्रकाशा।
सतगुरु मुखड़ा जाय लखे री ॥ ५ ॥
काल करम सब दूर निकारे।
ज़ोर[1] इनका अब कौन सहे[2] री ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल ऐसी होली खिलावें।
उन महिमा कौन कहे री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

होली खेलन ऋतु आई सखी री।
क्या भूल रही संसारी ॥ १ ॥
काम क्रोध और मोह नशे में।
लोभ संग मतवारी[3] ॥ २ ॥

१—अत्याचार। २—बरदाश्त करे। ३—पागल।

नर देही फिर हाथ न आवे।
धरमराय करे ख़्वारी[1] ॥ ३ ॥
याते समझो बूझो अब ही।
सतगुरु सरन उबारी ॥ ४ ॥
खोज लगाय पड़ो उन चरनन।
प्रीति प्रतीति सम्हारी ॥ ५ ॥
माया की फिर धूल उड़ाओ।
देखो घट उजियारी ॥ ६ ॥
सुरत अबीर मलो गुरु चरनन।
प्रेम का रंग बहा री ॥ ७ ॥
गुनन गुलाल उड़ाय सुनो धुन।
मिरदँग बीन बजा री ॥ ८ ॥
जगमग जोत सूर चमका री।
झलक चंद्र और नूर[2] निहारी ॥ ९ ॥
गुरु दयाल काटें जम जाला।
कर दें तुम छुटकारी ॥१०॥
मगन होय जाओ घर अपने।
राधास्वामी चरन सिहारी[3] ॥११॥

१—बेइज्जती। २—प्रकाश। ३—प्राप्त हुई।

॥ शब्द ७ ॥

होली के दिन आये सखी।
उठ खेलो फाग नई ॥ १ ॥
दया धार आये सतगुरु प्यारे।
प्रेम का रंग बही ॥ २ ॥
भक्ति दान फगुआ दिया सब को।
प्रीति जगाय दई ॥ ३ ॥
बिरह गुलाल अबीर तड़प[1] का।
मन पर डाल दई ॥ ४ ॥
उमँग रंग भर भर अब घट में।
गुरु पर छिड़क दई ॥ ५ ॥
आओ सखी अब सोच न कीजे।
चरनन लिपट रही ॥ ६ ॥
दया दृष्टि अब सतगुरु डारी।
अंतर भींज रही ॥ ७ ॥
दरशन करत हुई मतवारी।
सुध बुध[2] बिसर[3] गई ॥ ८ ॥
नैनन की पिचकार छुड़ावत।
तिल में उलट गई ॥ ९ ॥

१—दर्शन के लिए तड़प। २—सुध बुध—होश हवास। ३—भूल।

सहसकँवल चढ़ जोत जगाई।
संख बजाय रही ॥१०॥
लाल गुलाल रूप गुरु देखा।
त्रिकुटी जाय रही ॥११॥
चंद्र रूप लख[1] निरखी गुफा।
जहाँ मुरली बाज रही ॥१२॥
सत्तलोक जाय पुरुष रूप लख।
अचरज कौन कही ॥१३॥
हंसन से मिल खेली होली।
बीन बजाय रही ॥१४॥
प्रेम रंग की बरषा कीनी।
अमृत धार बही ॥१५॥
अलख अगम से भेंटा करके।
राधास्वामी चरन पई[2] ॥१६॥
अचरज रूप निरख हिये दिरगन[3]।
छिन छिन रीझ[4] रही ॥१७॥
अद्भुत शोभा रूप अनूपा।
निरखत मगन भई ॥१८॥
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई।
हिया जिया[5] वार रही ॥१९॥

१—देखकर। २—पड़ी, गिरी। ३—हिये दिरगन—अंतर की आँख से।
४—प्रसन्न हो। ५—हिया जिया—जान प्रान।

ऐसी होली खेल राधास्वामी से।
अचल सुहाग लई ॥ २० ॥

॥ शब्द ८ ॥

होली खेल न जाने बावरिया[1]
सतगुरु कों दोष लगावे ॥ १ ॥
जगत लाज मरजाद[2] में अटकी।
घूँघट खोल न आवे ॥ २ ॥
प्रेम रंग घट भरन न जाने।
भरम गुलाल घुलावे ॥ ३ ॥
डगमग भक्ती चाल अनेड़ी[3]।
जग सँग झोके खावे ॥ ४ ॥
निंदा धूल से उड़ उड़ भागे।
सतसँग निकट न आवे ॥ ५ ॥
पाँच दुष्ट का रँग ले साथा।
नित पिचकार छुड़ावे ॥ ६ ॥
आदर मान भरा मन भीतर।
दीन अंग नहिं लावे ॥ ७ ॥
बचन सुने पर चित न समावे।
छिन छिन काल भुलावे ॥ ८ ॥

१—पगली। २—मर्यादा, प्रतिष्ठा। ३—उलटी सीधी, गलत।

मन माया ने जाल बिछाया।
सब जिव नाच नचावे ॥ ६ ॥
दया करें सतगुरु मन मोड़ें।
तो घर की राह पावे ॥१०॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन।
राधास्वामी चरन समावे ॥११॥

॥ शब्द ६ ॥

होली खेलन आये सतगुरु जग में।
हिल मिल के अब सरन पड़ो री ॥१॥
नरदेही तुम दुरलभ पाई।
जैसे बने तैसे काज करो री ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति धरो चरनन में।
हित चित से गुरु बचन सुनो री ॥३॥
गुरु का ध्यान धरो हिये अंतर।
शब्द भेद ले गगन चढ़ो री ॥ ४ ॥
सतगुरु रूप निरख मन[1] माहीं।
प्रेम गुलाल अब जाय मलो री ॥ ५ ॥
पँच इंद्री पिचकारी छोड़ो।
तन मन चरनन वार धरो[2] री ॥ ६ ॥

१—अंतर। २—वार धरो—निछावर कर दो।

निरमल होय चढ़ो ऊँचे को।
राधास्वामी चरनन लाग रहो री॥७॥

॥ शब्द १० ॥

प्रेम रंग बरसावत चहुँ दिस।
होली खेलन आई सूरत प्यारी॥१॥
लिपट रही गुरु चरनन हित[1] से।
भींज रही घट अंतर सारी॥२॥
गुनन गुलाल उड़ावत मग[2] में।
पँच इंद्री छोड़ी पिचकारी॥३॥
भर भर सुरत अबीर झुकावत।
गुरु सन्मुख अब कुमकुम मारी॥४॥
जगत भोग की धूल उड़ाई।
लाज कान[3] कुल की तज डारी॥५॥
काल करम सिर धौल[4] मार कर।
माया नटनी की चादर फाड़ी॥६॥
काम क्रोध और लोभ बिकारी।
मान ईरखा चित से टारी[5]॥७॥
प्रेम भरी सखियन को सँग ले।
तन मन धन सब गुरु पर वारी॥८॥

१—प्यार। २—रास्ते। ३—शर्म। ४—चपत। ५—हटा दी।

बाचक जोगी ज्ञानी करमी।
स्वाँग बना मोहे नर नारी ॥ ९ ॥
पंडित भेख शेख़ रोज़गारी।
जम दूतन के धक्के खा री ॥१०॥
मेरा भाग जगा गुरू किरपा।
पाय गई निज सरन अधारी॥११॥
प्रेम दान दीन्हा निज घर से।
राधास्वामी चरनन हुई दुलारी ॥१२॥

॥ शब्द ११ ॥

उलट पलट कर खेली होली।
अनहद धुन घट अंतर बोली[1] ॥ १ ॥
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का।
गुरू पर डाला भर भर झोली॥ २ ॥
मन और सुरत चढ़े गगना पर।
माया ममता घट से डोली[2]॥ ३ ॥
गुरू दरशन कर हुइ मगनानी।
अब नहिं देत काल झकझोली[3]॥४ ॥
आगे चढ़ पहुँची दस द्वारे।
सुन्न शहर की धुन लई तोली[4]॥ ५ ॥

१—प्रकट हुई। २—दूर हो गई। ३—झटके। ४—जाँची।

भँवरगुफा सतलोक अटारी।
चढ़ के चली अब शब्द खटोली[1] ॥६॥
अलख अगम के पार चढ़ाई।
राधास्वामी चरन अब मिले अमोली[2]।७

॥ शब्द १२ ॥

सुरत रँगीली खेलत होरी।
प्रेम लगन गुरु चरनन जोड़ी ॥ १ ॥
केसर रंग प्रीति भर घट में।
बार बार पिचकारी छोड़ी ॥ २ ॥
भींज रहे सतगुरु सतसंगी।
उमँग बढ़त धुन शोर मचो री ॥ ३ ॥
अबीर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस।
शब्द संग मन नाच नचो री ॥ ४ ॥
गुरु दरशन अद्भुत हिये निरखत।
सुरत हुई मस्तानी बौरी[3] ॥ ५ ॥
अजब बिलास लखा घट माहीं।
सुफल जन्म मेरा आज भयो री ॥ ६ ॥
माया नार रही शरमाई।
काल करम बल आज थको[4] री ॥ ७ ॥

१—सवारी। २—अनमोल। ३—पागल। ४—समाप्त हो गया।

आरत कर गुरु प्रेम बढ़ाती।
चरन सरन गुरु धार रहो री ॥ ८ ॥
ऐसा फाग भाग से पइये।
जन्म मरन सब दूर भयो री ॥ ९ ॥
धन धन भाग मेरे अब जागे।
राधास्वामी मोहि निज दान दियो री १०
प्रेम अंग प्यारी सुरत नवेली[1]।
राधास्वामी प्यारे से आज मिलो री।११

॥ शब्द १३ ॥

होली खेलत सतगुरु नाल[2]।
पिरेमी सुरत रँगीली ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति की केसर घोली।
गुरु पै सन्मुख डाल ॥ २ ॥
बरषत रँग भींजत स्रुत संगी।
चढ़त गगन पर हाल[3] ॥ ३ ॥
काल कला[4] सब थकित हुई[5] अब।
काटा माया जाल ॥ ४ ॥
गुनन गुलाल उड़ावत मग में।
सुरत अबीर भर थाल ॥ ५ ॥

१—नई। २—साथ। ३—तुरंत ही। ४—चालबाज़ी, होशियारी।
५—थकित हुई—समाप्त हो गई।

गुरु बल सुरत छुड़ी[1] घर चाली।
पहुँची हंसन ताल[2] ॥ ६ ॥
परम पुरुष के दरशन पाये।
सत्त शब्द पाया धन माल॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ धारी।
मुझ पर हुए हैं दयाल ॥ ८ ॥
भक्ति दान मोहि फगुआ दीन्हा।
मेटे सब दुख साल[3] ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

आज मैं गुरु सँग खेलूँगी होरी ॥टेक॥
भाग जगे गुरु सतगुरु पाये।
मन बिच हरख बढ़ो री ॥ १ ॥
बिरह अनुराग रंग घट भरिया।
गुरु पर छिड़क रहूँ री ॥ २ ॥
उमँग अबीर गुलाल प्रेम का।
गुरु चरनन पर आन मलूँ री ॥ ३ ॥
प्रेम दान बिनती कर माँगूँ।
तन मन धन सब वार धरूँ री॥ ४ ॥
शब्द रूप प्यारे राधास्वामी का।
घट में दरस करूँ री ॥ ५ ॥

१—जो सबसे अलहदा हो चुकी है। २—हंसन ताल—मानसरोवर। ३—कष्ट।

॥ शब्द १५ ॥

फागुन की ऋतु आई सखी।
आज गुरू सँग फाग रचो री॥ १ ॥
ऐसा समा[1] मिले नहिं कबहीं।
मनुआँ उमँग रहो री ॥ २ ॥
दृष्टि जोड़ ताको[2] गुरू मूरत।
अद्भुत रूप लखो री ॥ ३ ॥
सुरत अबीर की भर भर झोली।
घट घट रंग भरो री ॥ ४ ॥
गुरू सँग खेल आज नई होली।
जग बिच धूम मचो री ॥ ५ ॥
ऐसी होली खेलो मेरे भाई।
करम भरम सब दूर करो री ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन ध्यान धर हिये में।
जग से आज तरो[3] री ॥ ७ ॥
होय निहाल[4] जाय जग पारा।
चरनन सुरत धरो री ॥ ८ ॥

॥ शब्द १६ ॥

मैं तो होली खेलन को ठाड़ी।
स्वामी प्यारे झटपट खोलो किवाड़ी॥१

१—अवसर। २—देखो। ३—पार चलो। ४—पूर्ण संतुष्ट।

प्रेम रंग की बरषा कीजे।
भींजे सुरत हमारी ॥ २ ॥
देर देर बहु देर भई है।
कहाँ लग करूँ पुकारी ॥ ३ ॥
तड़प तड़प जिया तड़प रहा है।
दरशन देव दिखा री ॥ ४ ॥
सुन्दर रूप लखूँ अद्भुत छबि।
होवे घट उजियारी ॥ ५ ॥
ऋतु फागुन अब आय मिली है।
नई नई फाग खिला री ॥ ६ ॥
राधास्वामी परम दयाला।
चरनन लेव मिला री ॥ ७ ॥
बिनती करूँ दोऊ कर जोड़ी।
कर लो प्रेम दुलारी ॥ ८ ॥

॥ शब्द १७ ॥

होली खेलत सतगुरु संग।
पिरेमन रंग[1] भरी ॥ १ ॥
अबीर गुलाल उड़ावत चहुँ दिस।
भर भर डालत रंग ॥ २ ॥

१—प्रेम।

पाँच तत्त पिचकारी छोड़ी।
गुन तीनों हुए तंग ॥ ३ ॥
मन इंद्री को नाच नचा कर।
करत काल से जंग[1] ॥ ४ ॥
सतगुरु प्रेम धार हिये अंतर।
गुरु का सीखी ढंग ॥ ५ ॥
मेहर करी गुरु चरन लगाया।
फूल रही अँग अंग ॥ ६ ॥
राधास्वामी महिमा नित हिय जिय से।
गावत उमँग उमंग ॥ ७ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सुरत आज खेलत फाग नई ॥टेक॥
शब्द रूप हिरदे धर अपने।
गुरु रँग राच[2] रही ॥ १ ॥
धुन की डोर पकड़ घट चढ़ती।
मान ईरषा सकल[3] दही[4] ॥ २ ॥
राधास्वामी बचन लगें अति प्यारे।
चरनन लाग रही ॥ ३ ॥
खेलत खेलत गुरु पद पहुँची।
रंग गुलाल बही ॥ ४ ॥

१—लड़ाई। २—रँग। ३—सब। ४—जल गए, नाश हो गए।

सुन्न शिखर चढ़ भँवरगुफा पर।
सत्तनाम की मेहर लई ॥ ५ ॥
हंसन साथ मिली अब रँग से।
अलख अगम के पार गई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल दया निज धारी।
प्रेम का दान दई ॥ ७ ॥

॥ शब्द १९ ॥

सुरत प्यारी खेलन आई फाग।
धार गुरु चरनन में अनुराग[1] ॥ १ ॥
प्रेम रंग भर भर लई पिचकार।
छोड़ती चहुँ दिस उमँग सम्हार ॥ २ ॥
सुरत का लाई अबीर गुलाल।
चरन गुरु कुमकुम[2] भर भर डाल ॥ ३ ॥
काम और क्रोध उड़ाई धूर।
करम और भरम किये सब दूर ॥ ४ ॥
गाल[3] दे काल हटाया हाल[4]।
दया ले काटा माया जाल ॥ ५ ॥
सुरत अब चढ़ती गगन मँझार[5]।
करत वहाँ गुरु से हेत पियार ॥ ६ ॥

१—प्रेम। २—रंग से भरे हुए लाख के बने गोले। ३—गाली। ४—कौरन। ५—में।

मिली सतगुरु से जा सतलोक।
अलख और अगम का पाया जोग[1] ॥७॥
चरन राधास्वामी कीना प्यार।
प्रेम का फगुआ लीना सार ॥ ८ ॥

॥ शब्द २० ॥

क्या सोय रही उठ जाग सखी।
आज गुरु सँग खेलो री होरी ॥ १ ॥
मोह नींद में बहु दिन बीते।
जागन चौंप[2] धरो री ॥ २ ॥
सरधा भाव अबीर संग ले।
घट बिच रंग भरो री ॥ ३ ॥
बिरह भाव के बान चला कर।
मन से आज लड़ो री ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग ले गुरु से।
धुन सँग गगन चढ़ो री ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन।
सुन्न में सुरत भरो[3] री ॥ ६ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर।
सतपुर जाय बसो री ॥ ७ ॥

१—मेल। २—उमंग, शौक़। ३—प्रवेश करो।

॥ शब्द २१ ॥

गुरू सँग खेलन फाग चली।
खिलत मेरे घट में कँवल कली॥ १॥
जोत की लई पिचकार सम्हार।
शब्द रँग बरषा होत अपार॥ २॥
चाँद और सूरज कुमकुम[1] लाय।
बिमल[2] घट त्रिकुटी रंग भराय॥ ३॥
सुन्न में भरती सुरत अबीर।
महासुन चढ़ती धर कर धीर॥ ४॥
भँवर चढ़ मुरली बीन बजाय।
सत्तपुर होली खेली जाय॥ ५॥
आरती गाई हंसन संग।
धारिया सत्तपुरुष का रंग॥ ६॥
उमँग कर राधास्वामी धाम चली।
सरन गह राधास्वामी चरन रली[3]॥ ७॥

॥ शब्द २२ ॥

सखी चल फाग की देख बहार॥टेक॥
सखियाँ जुड़ मिल खेलन आईं।
गुरु सँग हिये धर प्यार॥ १॥

१—लाख के बने हुए रंग से भरे गोले। २—निर्मल। ३—मिल गई।

अबीर गुलाल उड़त चहुँ दिस में।
कुमकुम[1] भर भर मार ॥ २ ॥
प्रेम रंग की बरषा गहरी।
भींज रहे नर नार ॥ ३ ॥
कली कली हिये कँवल खिलानी।
फूल रही फुलवार ॥ ४ ॥
लिपट लिपट गुरु चरनन हित[2] से।
तन मन सुद्ध बिसार ॥ ५ ॥
गावत राग रागनी रस[3] से।
होत शब्द झनकार ॥ ६ ॥
समा बँधा आनँद अति बाढ़ा।
राधास्वामी फाग खिलाया सार।७

॥ शब्द २३ ॥

खेल ले सतगुरु सँग तू फाग।
सखी री तेरा भला बना है दाव[4] ॥१॥
ऋतु फागुन भागन[5] से आई।
छोड़ सोवना तू उठ जाग ॥ २ ॥
इंद्री भोग चुरावत चित को।
सहज सहज उनको तज भाग ॥ ३ ॥

१—रंग से भरे लाख के गोले। २—प्रेम। ३—प्रेम। ४—मौक़ा। ५—सौभाग्य।

सुरत अबीर गुलाल शब्द का।
प्रेम रंग ले गुरू पद लाग ॥ ४ ॥
वहाँ से चल पहुँची दस द्वारे।
करम भरम सब दीने त्याग ॥ ५ ॥
भँवरगुफा होय पहुँची सतपुर।
मुरली बीन सुनावत राग ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन परस[1] हिलमिल कर।
गावत मंगल राग ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

आज गुरु खेलन आये होरी।
जग जीवन का भाग जगो री ॥ १ ॥
प्रेम घटा अब बरसन लागीं।
धारा रंग बहो री ॥ २ ॥
सुरत अबीर घुमँड़ रहा चहुँ दिस।
मनुआँ उमँग रहो री ॥ ३ ॥
घंटा संख मृदंग बाँसरी।
सारँग बीन बजो री ॥ ४ ॥
हरख हरख सब गिरते चरनन।
प्रेम भक्ति गुरु दान दियो री ॥ ५ ॥

१—छू कर।

काल करम का दाव[1] चुकाया।
खोल दई माया की चोरी ॥ ६ ॥
करम भरम तज जीव सुखारी।
पकड़ शब्द निज घर को दौड़ी ॥ ७ ॥
अस लीला कहो कौन दिखावे।
राधास्वामी दाता दया करो री ॥ ८ ॥

॥ शब्द २५ ॥

होली खेले सयानी[2]।
गुरू के रंग रँगानी ॥ टेक ॥
प्रेम प्रीति का रँग घट भर कर।
गुरु पर दिया छिड़कानी ॥ १ ॥
दृढ़ विश्वास धार गुरु चरनन।
करम और भरम भुलानी ॥ २ ॥
जग ब्योहार लगा सब झूठा।
सब से हुई अलगानी ॥ ३ ॥
ममत[3] माया और दुबिधा[4] छोड़ी।
गुरु चरनन लिपटानी ॥ ४ ॥
जगत भोग तज चरन अमीरस।
पीवत रहत अघानी[5] ॥ ५ ॥

१—कर्ज़ा। २—चतुर। ३—ममता, मोह। ४—संशय। ५—संतुष्ट।

राधास्वामी सतगुरू मिले रँगीले।
उन सँग फाग खिलानी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २६ ॥

सुरत सिरोमन[1] फाग रचाया।
सब जुड़ मिल आज खेलो री होरी ॥टेक॥
सखी सहेली घूमत आईं।
अबीर गुलाल रंग भर लाईं।
गुरू दरशन को घूमत धाईं।
देख रूप झूमत[2] मुसक्याईं।
मान मनी[3] की मटकी फोड़ी ॥ १ ॥
सतगुरू परम उदार कृपाला।
देख दीनता हुए दयाला।
बचन सुनाये अजब रसाला[4]।
दया दृष्टि से किया निहाला।
अटक भटक सब अब दई तोड़ी ॥ २ ॥
गुरू चरनन में प्रेम बढ़ावत।
रूप अनूप हिये में ध्यावत।
उमँग उमँग गुरू आरत गावत।
शब्द भेद ले जुगत कमावत।
चढ़त अधर गह धुन की डोरी ॥ ३ ॥

१—शिरोमणि, सर्वश्रेष्ठ। २—मतवाली होकर। ३—मान मनी—मन का अहंकार। ४—रसीले, प्रेम भरे।

धूम मची अब धरन गगन में।
राधास्वामी खेलत फाग अधर में।
भींज रहे सब प्रेम रंग में।
सुध[1] बिसरी[2] रच रही[3] धुनन में।
आज अनोखा फाग रचो री ॥ ४ ॥

॥ शब्द २७ ॥

सोइ तो सुरत पिया की प्यारी।
जो भींज रही गुरु रँग सारी ॥ १ ॥
सतगुरु प्रेम रहे मद माती[4]।
अटल भक्ति का प्रन[5] धारी ॥ २ ॥
जगत भाव तज गुरु चरनन में।
प्रीति नई नई बिस्तारी ॥ ३ ॥
मगन होय गुरु आज्ञा माने।
माया मन रहे दोउ हारी ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई।
मेहर करी गुरु अति भारी ॥ ५ ॥
घंटा संख लगे घट बजने।
सुन्न शिखर गई भौ पारी ॥ ६ ॥
मधुर मधुर धुन गुफा सुनाई।
अमर लोक गई गुरु लारी[6] ॥ ७ ॥

१—याद। २—भूल गई। ३—रच रही—रँग रही। ४—मद माती—मतवाली
५—प्रण, प्रतिज्ञा। ६—साथ।

सत्तपुरुष से फगुआ लीन्हा।
अलख अगम जा पग[1] धारी॥ ८॥
राधास्वामी दीन दयाला।
गोद लिया मोहि बैठा री॥ ९॥

॥ शब्द २८ ॥

सुरत सिरोमन फाग रचाया।
जग बिच धूम मची री॥ १॥
बिरह भाव और प्रेम दिवानी।
गुरु के रंग रची[2] री॥ २॥
जग भय भाव लाज तज डारी।
भक्ती नाच नची री॥ ३॥
छब बल कपट छोड़ कर बरते।
खेलत फाग सची री॥ ४॥
प्रीति प्रतीति हिये में धारत।
राधास्वामी चरनन सरन पकी री॥५॥
काल करम दोउ रहे झख मारत[3]।
माया निज बल हार थकी री॥६॥
राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला।
उन चरनन में जाय बसी री॥ ७॥

१—पैर। २—रँगी। ३—रहे झख मारत—परेशान होते रहे।

॥ शब्द २९ ॥

होली खेलत सुरत रँगीली,
गुरू सँग प्रीति बढ़ाई ॥ टेक ॥
सुरत अबीर मलत चरनन पर।
प्रेम रंग बरसाई।
गुनन गुलाल उड़ावत चहुँ दिस।
शब्द सुनत हरखाई।
गगन पर करत चढ़ाई ॥ १ ॥
बिरह उमँगाय चढ़त ऊँचे को।
गुरु पद सुरत लगाई।
धुन धधकार सुनत मन सरसा[1]।
हिये नया प्रेम जगाई।
काल दल रहा मुरझाई ॥ २ ॥
गुरु मूरत निरखत मगनानी।
लाल रूप सुत पाई।
सुन्न सिखर जाय फाग रचाया।
अमृत धार बहाई।
भींज रहे गुरु बहिन और गुरु भाई ३
महासुन्न होय चढ़त गुफा पर।
सोहँग मुरली बजाई।

१—प्रसन्न हुआ।

सतपुर जाय मिली सतगुरु से।
मधुर बीन धुन आई।
चरन में राधास्वामी जाय समाई॥४

॥ शब्द ३० ॥

आज सखी गुरु सँग खेलो री होरी।
तेरा सुन्दर ब्योंत बनो[1] री॥ १॥
सतगुरु भेंटे सतसँग मिलिया।
अचरज भाग जगो री॥ २॥
ऐसा दुरलभ औसर पाया।
नर देह सुफल करो री॥ ३॥
अब नहिं चेतो तो फिर कब चेतो।
फिर नहिं ऐसा समा[2] मिलो री॥ ४॥
जैसे बने तैसे अब ही चेतो।
गुरु सँग प्रीति धरो री॥ ५॥
प्रेम गुलाल घोल अट अंतर।
गुरु पर ले छिड़को री॥ ६॥
सुरत अबीर भरो हिये थाला।
गुरु चरनन पर आन मलो री॥ ७॥
प्रेम भरी सखियाँ सँग ले कर।
भक्ति रंग बरसत भींजो री॥ ८॥

१—ब्योंत बनो—अद्भुत अवसर मिला। २—अवसर।

अस आरत गुरू चरनन कीजे ।
धुन रस ले मन गगन चढ़ो री ॥ ६ ॥
परम गुरू राधास्वामी दयाला ।
उन चरनन में सुरत भरो[1] री ॥१०॥

॥ शब्द ३१ ॥

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
आज जग जीव उबार कराय रहे री॥१॥
चार लोक में बजी है बधाई ।
मिल हंस सभा गुन गाय रहे री ॥ २ ॥
घन गरज गरज बजा दया का नगारा।
काल करम मुरझाय रहे री ॥ ३ ॥
अमृत धार लगी घट झिरने ।
धुन घंटा संख सुनाय रहे री ॥ ४ ॥
धन धन भाग जगा जीवन का ।
जो गुरू दरशन पाय रहे री ॥ ५ ॥
कर सतसंग मिला रस[2] भारी ।
प्रीति प्रतीति बढ़ाय रहे री ॥ ६ ॥
सुरत शब्द का दे उपदेशा ।
घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ७ ॥

१—पूरी तरह से लगाओ। २—आनन्द।

आरत कर गुरु लीन रिझाई।
तन मन धन सब वार रहे री ॥ ८ ॥
हुए प्रसन्न राधास्वामी गुरु प्यारे।
उन सतलोक पठाय रहे री ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सखी री मैं निस दिन रहूँ घबरानी ॥टेक॥
मन इंद्री की चाल निरख कर।
बहु बिधि रहूँ पछतानी।
भोग बासना छोड़त नाहीं।
उन सँग रहे अटकानी।
दरद कस कहूँ बखानी ॥ १ ॥
बहु बिधि याहि समझौती दीन्ही।
नेक[1] कहन नहिं मानी।
मैं तो हार हार अब बैठी।
गुरु बिन कौन बचानी।
कहो मेरी कहा बसानी ॥ २ ॥
सुमिरन ध्यान में ठहरे नाहीं।
थोथा[2] भजन करानी।

१—जरा भी। २—व्यर्थ का, झूठा।

बहु बिधि अपना ज़ोर लगाऊँ।
छोड़े न भरम कहानी ॥
क्षीर[1] तज पीवे पानी ॥ ३ ॥
गुरू दयाल की मेहर परखती।
तौ भी धुन में प्रीति न आनी[2] ॥
घट में चंचल नेक न ठहरे।
चिंता में रहे नित्त भुलानी ॥
कहो कस जुगत कमानी ॥ ४ ॥
अब थक कर मैं करूँ बीनती।
हे गुरू दृष्टि मेहर की आनी[3] ॥
छिमा करो और दया उमँगाओ।
हे राधास्वामी पुरुष सुजानी॥
प्रेम का देवो दानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

प्रेम रंग ले खेलो री गुरू से।
आज पड़ा तेरा दाव[4] री ॥ १ ॥
गुरू को सब बिधि समरथ जानो।
लाओ पूरन भाव[5] री ॥ २ ॥
दया करें तुझ पर वे छिन छिन।
दे दे मन को ताव री ॥ ३ ॥

१—दूध। २—की। ३—करो। ४—दाव पड़ा—मौक़ा मिला।
५—श्रद्धा, विश्वास।

अस्तुत कर महिमा कर उनकी।
नित्त बढ़ाओ चाव[1] री ॥ ४ ॥
गुरू से रोस करो मत कबही।
छिन छिन प्रेम बढ़ाव री ॥ ५ ॥
मौज निहार रज़ा[2] में बरतो।
मन मत दूर हटाव री ॥ ६ ॥
सुरत जगाय उमँग नई धारो।
राधास्वामी चरन समाव री ॥ ७ ॥

॥ बचन १७ ॥

सावन लावनी और बारहमासा

॥ शब्द १ ॥

॥ सावन ॥

सावन मास मेघ घिर आये।
गरज गरज धुन शब्द सुनाये ॥ १ ॥
रिमझिम बरषा होवत भारी।
हिये बिच लागी बिरह[3] कटारी ॥ २ ॥
प्रीतम छाय रहे परदेसा।
बूझत रही[4] नहिं मिला सँदेसा ॥ ३ ॥
रैन दिवस रहूँ अति घबराती।
कसक कसक मेरी कसके[5] छाती ॥ ४ ॥

१—शौक़, प्रेम। २—मर्ज़ी। ३—वियोग की पीड़ा। ४—बूझत रही—पता लगाती रही। ५—तेज़ पीड़ा होती है।

कासे कहूँ कोइ दरद न बूझे।
बिन पिया दरस नहीं कुछ सूझे॥ ५॥
चमके बीज[1] तड़प उठे भारी।
कस पाऊँ पिया प्रान अधारी॥ ६॥
रोवत बीते दिन और राती।
दरद उठत हिये में बहु भाँती[2]॥ ७॥
ढूँढ़त ढूँढ़त बन बन डोली।
तब राधास्वामी की सुन पाई बोली। ८॥
प्रीतम प्यारे का दिया सँदेसा।
शब्द पकड़ जाओ उस देसा॥ ९॥
सुरत शब्द मारग दरसाया।
मन और सुरत अधर चढ़वाया॥१०॥
कर सतसंग खुले हिये नैना।
प्रीतम प्यारे के सुने वहीं बैना॥११॥
जब पहिचान मेहर से पाई।
प्रीतम आप[3] गुरू बन आई॥१२॥
दया करी मोहि अंग लगाया।
दुक्ख दरद सब दूर हटाया॥१३॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ।
तन मन वारूँ[4] बल बल जाऊँ॥१४॥

१—बिजली। २—तरह। ३—स्वयं, खुद। ४—निछावर करूँ।

भाग जगे गुरु चरन निहारे।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी प्यारे।१५।

॥ शब्द २ ॥

॥ दिवाली ॥

दिवाला पूजें जीव अजान।
भरमते फिरते चारों खान[१] ॥ १ ॥
दिवाली संतन घर जागी।
प्रेम रस मन सूरत पागी[२] ॥ २ ॥
खिला अब चमन नूर हिये में।
बढ़ी अब प्रीति गुरु जिये में ॥ ३ ॥
साफ़ मैं कीन्हा मन दरपन[३]।
किया तन मन धन गुरु अरपन[४]। ४।
लगाई बाज़ी गुरु के संग।
हार कर तन मन लिया गुरु रंग। ५।
बाल[५] जिव मूरत में अटके।
जुगन जुग सहते जम झटके ॥ ६ ॥
खिलौने खेल गये घर भूल।
पकड़ कर साखा[६] तज दिया मूल[७]।७॥
जुए में नर देही हारी।
देत जम धिरकारी[८] भारी ॥ ८ ॥

१—पैदाइश की चार क़िस्में—अंडज, जेरज, स्वेदज, उद्भिज। २—लीन। ३—आईना। ४—भेंट। ५—बच्चों जैसी बुद्धि वाले। ६—डाल। ७—जड़। ८—धिक्कार।

अभागी जीव न मानें बात।
भरमते नित तम[1] चक्कर साथ ॥ ९ ॥
रैन ज्यों मावस[2] अँधियारी।
रही कल[3] धारा घट जारी ॥१०॥
जगा जिन जीवन धुर भागा।
लगा गुरू चरनन अनुरागा ॥११॥
सुरत मन नित घट में चढ़ते।
सरन गुरू छिन छिन दृढ़[4] करते ॥१२॥
देखते दीप दान[5] घट में।
निरखते जोत रूप पट[6] में ॥१३॥
गगन चढ़ देखत उगता सूर।
सुन्न में निरखत चाँदन पूर[7] ॥१४॥
भँवर में झलका अद्भुत नूर।
परे तिस सत्तनाम भरपूर ॥१५॥
लखा फिर अलख अगम घर दूर।
हुई राधास्वामी चरनन धूर ॥१६॥
करे जहाँ आरत सेवक सूर।
मेहर गुरू पाया आनँद पूर ॥१७॥

१—अंधकार में। २—अमावस की। ३—काल की। ४—पक्की। ५—दीप दान—दीपक जला कर इष्टदेव की पूजा। ६—परदे। ७—पूर्ण चंद्रमा।

॥ शब्द ३ ॥

॥ लावनी ॥

तड़पत रही बेहाल,
दरस बिन मन नहिं माने।
कासे कहूँ बिथाय[1],
दरद मेरा कोइ नहिं जाने॥१॥

निस दिन हर बार,
सोच यही मोहि सतावत।
गुरु से कैसे मिलूँ,
जतन कोइ बन नहिं आवत॥२॥

बिन अंतर दीदार[2],
मोर मन शांति न लावे।
जग के भोग बिलास,
नहीं मोहि नेक[3] सुहावे॥ ३॥

छिन छिन घटत शरीर,
उमर यों ही बीती जावे।
कस पाऊँ दीदार,
सोच यही मन में आवे॥ ४॥

बिन सतगुरु की मेहर,
बने नहिं कोइ काजा।

१—व्यथा, पीड़ा। २—दर्शन। ३—जरा भी।

याते करूँ पुकार,
दया का दीजे साजा[1] ॥ ५ ॥
राधास्वामी सुनो पुकार,
पाट[2] घट खोल दिखाओ ।
दरशन देकर आज,
हिये की तपन[3] बुझाओ ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४ ॥
॥ लावनी ॥

बिन सतगुरु की भक्ति,
जनम बिरथा[4] नारी ।
गुरु ज्ञान बिना संसार,
अँधेरा भारी ॥ टेक ॥
क्या जन्मे जग में आय,
शब्द का खोज न कीना ।
अटके देवी देव,
संत का मरम न चीना ॥
दुख सुख भोगें सदा,
करम का यह फल लीना,
भोगन में रहे लिपटाय,
विषय[5] रस नित ही पीना ॥

१—सामान । २—परदा । ३—जलन । ४—व्यर्थ, फ़जूल । ५—भोगों का ।

जनम मरन नहिं छुटे,
करम का चक्कर भारी।
बिन सतगुरु की भक्ति,
जनम बिरथा नर नारी॥ १॥

वे बड़भागी जीव,
मिले जिन सतगुरु प्यारे।
कर उनका सतसंग,
चरन उन सिर पर धारे॥

सार[1] बचन उर[2] धार,
हुए करमन से न्यारे।
सोमत[3] लीना चीन,
भरम तज दीने सारे॥

बिन गुरु कौन सुनाय,
जुगत यह सबसे न्यारी।
बिन सतगुरु की भक्ति,
जनम बिरथा नर नारी॥ २॥

प्रीति बढ़त गुरु चरन,
दिनों दिन आनँद भारा।
मेहर से दिया गुरु भेद,
शब्द का अगम अपारा॥

१—सार वस्तु को वर्णन करने वाले। २—हृदय में। ३—सुमति, सुबुद्धि।

ध्यान धरत गुरु रूप,
हुआ घट में उजियारा।
निस दिन सुरत लगाय,
सुनत अनहद झनकारा॥
बिन गुरु कैसे लगे,
सुरत की घट में तारी[1]।
बिन सतगुरु की भक्ति,
जनम बिरथा नर नारी॥ ३॥
तिल का द्वारा फोड़,
लखा घट जोत उजारा।
सुन धुन घंटा संख,
गगन में बजा नगारा[2]॥
गुरु का दरशन पाय,
हुआ तन मन से न्यारा।
करम जाल कट गया,
जूझ[3] कर काल भी हारा॥
बिन सतगुरु की सरन,
नहीं अस होय उबारी[4]।
बिन सतगुरु की भक्ति,
जनम बिरथा नर नारी॥४॥

१—लगे तारी—गहरा संबंध क़ायम हो। २—डंका। ३—परेशान होकर।
४—उद्धार।

सुन धुन ऊपर चढ़ी,
करी हंसन सँग यारी[1]।
महासुन्न के पार,
सुनी मुरली धुन न्यारी॥
सतपुर पहुँची धाय,
लगी बीना धुन प्यारी।
लख अलख अगम का रूप,
हुई सूरत सुखियारी॥
राधास्वामी चरनन मिली,
हुआ आनँद अति भारी।
बिन सतगुरु की भक्ति,
जनम बिरथा नर नारी॥ ५॥

॥ शब्द ५॥

बारहमासा

आया मास असाढ़ बिरह के बादल घट छाये
नैनन झड़ता नीर[2] मेघ ज्यों रिमझिम बरखाये
अन्न और पानी नहिं भावे।
हर दम पिया की याद,
बिकल[3] चित चहुँ दिस को धावे[4]॥

१—मित्रता। २—आँसू। ३—व्याकुल, परेशान। ४—दौड़ता है।

खटक दरशन की हिये साले।
बिनप्रीतम दीदार नहींमनकोइ बिधिकरमाने
लागा सावन मास घुमँड़ घन चहुँ दिस
रहा बरखाय।
सुन सुन पपिहा बोल बिरहनी रही
जिये में घबराय॥
तपन हिये में उठती भारी।
ढूँढ़त रही पिया धाम,
खोज कर बैठी थक हारी॥
भेख और पंडित जग भरमान।
निजघर सुद्धनलायरहेसबमायासँगअटकान
तीजा भादों मास बिरह की दौं लागी भारी।
देखत असअस हालपियाआयेसंतरूपधारी
सहज में मोहि दरशन दीन्हा।
घर का भेद बताय,
दया कर मोहि अपना कीन्हा।
शब्द की घट में राह लखाय।
सतगुरु चरन अधार सुरत मन धुन सँग
देत चढ़ाय॥ ३॥
आयामास कुआर सुरत गुरुचरनन में लागी।
दिनदिन सेवा करत प्रीति हियेअंतर मेंजागी।

रूप गुरू लागे अति प्यारा ।
सुनती चित से बचन,
अमी की ज्यों बरसे धारा ॥
हिये के मैल भरम निकसे ।
मगन हुई मन माहिं फूल की कलियाँ
ज्यों बिगसे ॥ ४ ॥

कातिक काया ताक सुरत मन घर की सुध धारी
गुरुसरूप धर ध्यान शब्द धुन सुनती झनकारी
निरख घट अंतर उजियारी ।
अचरज लीला देख,
होत अब तन मन सुखियारी ।
गुरू की बढ़ती नित परतीत ।
छिन छिन दया निहार उमँगती नइ नइ
भक्ती रीत ॥ ५ ॥

अघहन अघ सब कटे सुरत मन निरमल
होय आये ।
मेहर करी गुरु देव तोड़ तिल नभ ऊपर धाये॥
सुनी वहाँ घंटा संख पुकार ।
सहसकँवल के माहिं,
निरख रही निरमल जोत उजार ॥

हिये से गुरु महिमा गाती ।
निरखत दया अपार चरन पर नित
बल बल जाती ॥ ६ ॥

माया जाड़ा लाग पूस में मुरझाया काला ।
सुन धुन गगना पूर सुरत मन झट चढ़ गये बाला
मेघ जहाँ गरजत घोरमघोर ।
बाजत धुन मिरदंग,
कालदल धर भागा घर छोड़ ॥
सुरत गुरु दरशन कर हरखाय ।
छूटे करम कलेश दया गुरु छिन २ रही गुन गाय
माघ महीना लाग खिलत रही चहुँ दिस
फुलवारी ।
बेनी तीर चढ़ाय सुरत गई तिरलोकी पारी ॥
खेल रही हंसन सँग कर प्यार ।
मानसरोवर न्हाय,
सुनत रही किंगरी सारँग सार ॥
शिखर चढ़ गई महासुन पार ।
सिंह नाग को टार भँवर गढ़ पहुँची
सतगुरु लार ॥ ८ ॥

फागुन फाग रचाय पुरुष सँग खेलत सुत होरी
मुरली बीन बजाय काल से कुल नाता तोड़ी ॥

मची सतपुर में अचरज धूम ।
जुड़ मिल आये हंस,
हरख कर आरत गावें घूम ।
प्रेम रँग भींज रहे सब कोय ।
अचरज शोभा पुरुष निहारत चरनन
सुरत समोय ॥ ९ ॥

चैत महीना चेत अधर की सुध ले सुत चाली।
पुरुष दई दुरबीन अलखपुर पहुँची दरहाली।
मगन हुई दरस अलख पुर्ष पाय ।
अरबन रबि उजियार,
पुरुष के इक इक रोम लजाय ।
ख़बर ले ऊपर को धाई ।
अगम पुरुष दरबार निरख छबि अद्भुत
हरखाई ॥१०॥

आया मास बैसाख चित्त में बाढ़ा अनुरागा ।
अगम लोक के पार ध्यान राधास्वामी
चरनन लागा ॥
सुरत चली धारे से पग धार ।
निरखा अजब प्रकाश,
द्वार पर रबि शशि नहीं शुमार ॥

लखा जाय हैरत रूप अनाम ।
अकह अपार अनंत परम गुरु संतन का
निज धाम ॥११॥

सबसे जेठा[1] धाम आदि में वहीं से सुत आई
काल जालकी फाँसफँसी तनमनसँग दुख पाई
मिलें कोई सतगुरु परम उदार[2] ।
कर उनका सतसंग प्रेम से,
तब होवे निरबार[3] ॥
दीन दिल चरन सरन धारे ।
सुरत शब्द की राह अधर घर चढ़ जावे पारे १२
बारह मास पुकार संत की निज महिमा गाई
सूरत शब्द लगाय मिलन का रस्ता बतलाई ॥
भाग बढ़ अपना क्या गाऊँ ।
मिल गये राधास्वामी दयाल,
दई मोहि निज चरनन ठाऊँ[4] ॥
जिऊँ में राधास्वामी आधारे ।
चरनन सुरत लगाय गाऊँ मैं धन धन
स्वामी प्यारे ॥१३॥

१—ऊँचा । २—दयालु । ३—छुटकारा । ४—स्थान ।

बचन १८—मिश्रित अंग

॥ शब्द १ ॥

क्या भूल रही जग माहिं।
घर को जाना है ॥ १ ॥
यह देश तुम्हारा नाहिं।
काल का थाना[1] है ॥ २ ॥
संग त्यागो पंडित भेष[2]।
भरम भुलाना है ॥ ३ ॥
जो घट का देवे भेद।
वही गुरू स्याना[3] है ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का भेद बताय।
घर पहुँचाना है ॥ ५ ॥
तू कर चरनन प्रीति।
रूप उन ध्याना है ॥ ६ ॥
सुन घट में धुन झनकार।
शब्द निशाना[4] है ॥ ७ ॥
धुन डोरी गह मज़बूत।
सुरत चढ़ाना है ॥ ८ ॥
सुन घंटा संख पुकार।
मृदंग बजाना है ॥ ९ ॥

१—स्थान। २—भेषधारियों का। ३—चतुर। ४—लक्ष्य।

सुन किंगरी सारँग सार।
भँवर धुन गाना है ॥१०॥
धर अमर लोक पुर्ष ध्यान।
दरशन पाना है ॥११॥
लख[1] अलख पुरुष पद पार।
अगम ठिकाना है ॥१२॥
राधास्वामी धाम निहार।
दरस दिवाना[2] है ॥१३॥
गति[3] पूरी पाई आज।
चरन समाना है ॥१४॥

॥ शब्द २ ॥

ऐसी गहरी पिरेमन नार।
गुरू को लीन रिझाई[4] ॥ १ ॥
सेवा करत प्रेम से निस दिन।
तन मन दीन चढ़ाई ॥ २ ॥
गुरु दरशन बिन कल[5] न पड़त है।
छिन छिन मन अकुलाई ॥ ३ ॥
जब गुरु दरशन करत मगन होय।
फूली तन न समाई ॥ ४ ॥

१—देख कर। २—मतवाला। ३—अवस्था। ४—लीन रिझाई—प्रसन्न कर लिया। ५—चैन।

आरत[1] कर कर प्रेम बढ़ावत।
गुरु छबि पर बल[2] जाई ॥ ५ ॥
सुरत लगाय शब्द सँग धावत।
नभ तज गगन चढ़ाई ॥ ६ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा लख।
अमर लोक धस जाई ॥ ७ ॥
अलख अगम से मेला कर के।
राधास्वामी चरन समाई ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मनुआँ हठीला कहन न माने।
भोगन में रस लेत ॥ १ ॥
गली गली में भरमत डोले।
करे न गुरु सँग हेत[3] ॥ २ ॥
सतगुरु दाता भेद बतावें।
सुरत शब्द रस देत ॥ ३ ॥
यह मूरख भरमन में अटका[4]।
निस दिन रहे अचेत[5] ॥ ४ ॥
माया सँग नित रहत भुलाना।
कस पावे पद सेत[6] ॥ ५ ॥

१—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। २—बलिहार, निछावर। ३—प्रेम।
४—फँसा। ५—ग़ाफ़िल। ६—निर्मल चेतन।

कुटुँब जगत की प्रीति न छोड़े।
मर मर होय पिरेत[1] ॥ ६ ॥
राधास्वामी जब निज दया बिचारें।
तब छूटे जम[2] खेत[3] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अमी की बरखा हुई भारी।
भींज रही अंतर सुत प्यारी ॥ १ ॥
सजी जहँ तहँ कँवलन क्यारी।
शब्द गुल[4] फूली फुलवारी ॥ २ ॥
बासना त्यागी संसारी।
मगन होय चढ़त अधर प्यारी ॥ ३ ॥
गगन गुरु दरशन कीना री।
हुआ मन चरन अधीना री ॥ ४ ॥
सुन्न चढ़ निरखी उजियारी।
मिली हंसन सँग कर यारी ॥ ५ ॥
भँवर धुन लाग रही तारी[5]।
मिला फिर सत्त शब्द सारी ॥ ६ ॥
दया राधास्वामी की भारी।
सरन दे चरन लगाया री ॥ ७ ॥

१—मरने के बाद लिंग शरीर में रहने वाला जीव। २—काल का। ३—क्षेत्र, देश। ४—फूल। ५—लाग रही तारी—लीन हो गई है।

॥ शब्द ५ ॥

सरन गुरू मोहि मिला भेवा[1] ।
उमँग कर करती गुरू सेवा ॥ १ ॥
नित्त मैं सतसँग करूँ बनाय ।
चरन गुरू राखूँ हिये बसाय ॥ २ ॥
सुमिरत रहूँ मैं नित गुरू नाम ।
चरन गुरू ध्याय रहूँ निहकाम[2] । ३ ॥
चरन में प्रीति बढ़ाय रहूँ ।
नित्त नई उमँग जगाय रहूँ ॥ ४ ॥
धार गुरू चरनन में विश्वास ।
जगत की त्यागूँ सब ही आस ॥ ५ ॥
भेद गुरू दीना मोहि बताय ।
शब्द में राखूँ सुरत लगाय ॥ ६ ॥
मेहर[3] गुरू जोत रूप झाँकूँ ।
गगन चढ़ गुरू मूरत ताकूँ[4] ॥ ७ ॥
दसम दर झाँकूँ पाट[5] खुलाय ।
महासुन चढ़ूँ गुरू सँग धाय ॥ ८ ॥
गुफा धुन सुनी बाँसुरी सार ।
अमरपुर दरशन पुरुष निहार ॥ ९ ।

१—भेद । २—कामना यानी बासना रहित । ३—दया से । ४-देखूँ । ५-परदा ।

अलख और अगम के पार ठिकान।
धरूँ राधास्वामी चरनन ध्यान।१०॥
गाऊँ मैं आरत प्रेम भरी।
चरन राधास्वामी पकड़ धरी ॥११॥
उमँग कर राधास्वामी गुन गाऊँ।
मेहर गुरु परशादी पाऊँ ॥१२॥

॥ शब्द ६ ॥

चलो री सखी सुनो अगम सँदेसा।
छोड़ देव अब जगत अँदेसा[1] ॥ १ ॥
जग बिच नित दुख सुख सहना री।
जनम मरन से नहिं बचना री ॥ २ ॥
जग जीवन की प्रीति न साँची।
चाल ढाल[2] उन सब है काँची[3] ॥ ३ ॥
मन मग़रूर[4] जगत में फंदे।
धन और नामवरी के बंदे[5] ॥ ४ ॥
परमारथ की सार[6] न जानें।
मान मनी[7] घट माहिं बिराजे ॥ ५ ॥
उनसे प्रीति करत दुख पावे।
गुरु चरनन में चित्त न आवे ॥ ६ ॥

१—डर, भय। २—चाल ढाल—रहन सहन। ३—झूठी। ४—घमंडी। ५—गुलाम। ६—असलियत। ७—मान मनी—मन का अहंकार।

जो तुम चाहो अपन उधारा।
तज[1] उन संग गहो गुरु द्वारा॥ ७॥
भाग तुम्हारा नित नित जागे।
काम किरोध मोह मद भागे॥ ८॥
परमारथ के बचन सम्हारो।
मन से जग का भाव[2] निकारो॥ ९॥
करो प्रतीति प्रीति चरनन में।
राधास्वामी नाम पुकारो छिन में।१०।
राधास्वामी रूप अनूप[3] अपारा।
चित्त बसाओ हिये धर प्यारा॥११॥
छिन छिन झाँक रहो हिये अंतर।
राधास्वामी नाम सुनो गुरु मंतर[4]।१२।
सुनो प्रेम से सतगुरु बानी।
दया मेहर की परख निशानी॥१३॥
गुरु दयाल नित दया बिचारें।
छिन छिन मन को आप सम्हारें।१४।
जगत भोग में रहे मलीना।
माया का रहे सदा अधीना[5]॥१५॥
सतसँग जल से साफ़ करावें।
प्रेम दात दे चरन लगावें॥१६॥

१—छोड़ कर। २—श्रद्धा। ३—अनुपम, अद्भुत। ४—मंत्र। ५—दीन।

बिरह बिना यह काज[1] न होई ।
मेहनत करे फल पावे सोई ॥१७॥
या ते सतसँग सतगुरू धारो ।
बचन सुनो हिये माहिं बिचारो ॥१८॥
दिन दिन चरनन प्रीति बढ़ाओ ।
करम भरम सब दूर हटाओ ॥१९॥
मोह जगत तज चित को जोड़ो ।
मन और सुरत शब्द सँग मोड़ो ॥२०॥
ऐसे कोइ दिन करो कमाई ।
जग दुख सुख सब जायँ नसाई[2] ॥२१॥
सुमिरन ध्यान भजन रस पाई ।
भाग आपना लेव सराही ॥२२॥
चित से यह उपदेश सम्हारो ।
राधास्वामी आरत[3] नित प्रति धारो २३
गुन गाओ तुम राधास्वामी निस दिन ।
सरन सम्हार गिरो उन चरनन ॥२४॥
राधास्वामी सब बिधि[4] करिहैं काज ।
सरन पड़े की राखें लाज ॥२५॥

१—काम । २—जायँ नसाई—नष्ट हो जावें । ३—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २ । ४—तरह ।

॥ शब्द ७ ॥

भूल भरम में जग अटकाना ।
दूर दूर घर से भटकाना ॥ १ ॥
जल पखान[1] पूजन ठहराया ।
कोइ कोइ जिव विद्या भरमाया ॥ २ ॥
निज घर का कोइ खोज न करता ।
जीव काज का सोच न धरता ॥ ३ ॥
निज घर भेद बतावें संता ।
पीव[2] मिलन का लखावें पंथा[3] ॥ ४ ॥
उनका बचन न कोई माने ।
काल जाल में रहे भुलाने ॥ ५ ॥
मेरा जागा भाग सुहावन[4] ।
संत चरन परतीत दिलावन ॥ ६ ॥
अचरज बचन सुने जब काना ।
उमँग बढ़ी और प्रीति समाना ॥ ७ ॥
प्रीति सहित करता सतसंगा ।
धारा हिये में सतगुरु रंगा[5] ॥ ८ ॥
सुरत शब्द का मारग साँचा ।
और[6] रीत परमारथ[7] काँचा[8] ॥ ९ ॥

१—पाषाण, मूर्त्ति । २—प्रियतम, मालिक । ३—रास्ता । ४—मनोहर, उत्तम ।
५—प्रेम । ६—दूसरी । ७—रीत परमारथ—परमार्थ की युक्ति । ८—झूठी ।

धर विश्वास लिया उपदेशा ।
संतन का अति ऊँचा देशा ॥१०॥
ध्यान धरत सुत मन सिमटाओ।
सतगुरु शब्द अधर घर धाओ॥११॥
यह संतन की जुगत अमोला ।
दीन चित्त कोइ बिरले तोला[1] ॥१२॥
मथ मथ[2] शब्द लखे परकाशा ।
घट में पावे अगम बिलासा ॥१३॥
मैं अति दीन पड़ा गुरु चरना।
प्रेम सहित धारी हिये सरना ॥१४॥
मेहर हुई निज भाग जगाई ।
नित्त करूँ गुरु आरत[3] आई ॥१५॥
राधास्वामी नाम जपूँ निस[4] बास[5]।
पाऊँ राधास्वामी चरन निवास॥१६॥

॥ शब्द ८ ॥

देख जग का व्योहार असार[6]।
करत रहा मन में नित्त बिचार ॥ १ ॥
कौन घर से यह जिव आया ।
कौन याहि जग में भरमाया ॥ २ ॥

१—परखता है। २—मथ मथ—छान बीन करके। ३—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। ४—रात। ५—बासर, दिन। ६—झूठा।

छोड़ जग फिर कहाँ जावेगा।
करम का फल कहाँ पावेगा ॥ ३ ॥
कौन है प्रेरक[1] घट घट में।
रहा छिप दीखे नहिं पट[2] में ॥ ४ ॥
कौन बिधि होय मालिक राज़ी।
कौन बिधि मन इंद्री साधी[3] ॥ ५ ॥
खोज मैं कीना बहु भाँती।
न आई मन को कहीं शांती ॥ ६ ॥
भरम में फँस रहे पंडित भेष।
बाँध रहे सब मिल पिछली टेक ॥ ७ ॥
कोइ कोइ बिद्या में भरमान।
करत पुरुषारथ[4] आपा ठान[5] ॥ ८ ॥
न जानें को है निज करतार।
रूप अपने का करत बिचार ॥ ९ ॥
खोज उसका भी कुछ नहिं कीन।
धारना पिंड रिदे[6] में कीन ॥१०॥
रहे अस मन आकाश[7] समाय।
पता निज घर का कोइ नहिं पाय ॥११॥
हुआ मन मेरा अधिक उदास।
न आया उन बचनन विश्वास ॥१२॥

१—प्रेरणा करने वाला। २—परदे। ३—रोके जावें। ४—प्रयत्न, कोशिश। ५—आपा ठान—अपने बल पर। ६—हृदय। ७—मन आकाश—मनाकाश।

भाग से प्रेमी जन मिले आय।
पता गुरु संगत दीन बताय ॥१३॥
उमँग कर सतसँग में आया।
भेद निज घर का वहाँ पाया ॥१४॥
सुरत और शब्द जोग की रीत।
लखी[1] और मन में भई परतीत ॥१५॥
प्रेम सँग करता नित अभ्यास।
देखता घट में परम बिलास[2] ॥१६॥
सुरत सतपुर से यहाँ आई।
काल ने जग में भरमाई ॥१७॥
शब्द की डोरी गह[3] कर हाथ।
उलट घर जावे सतगुरु साथ ॥१८॥
होय कर जनम मरन से न्यार।
अमर घर पावे सुक्ख अपार ॥१९॥
चरन में गुरु के धर परतीत।
बढ़ावे छिन छिन घट में प्रीत ॥२०॥
नाम राधास्वामी हिरदे धार।
कमावे सुरत शब्द की कार[4] ॥२१॥
कोई दिन अस करनी बन आय।
मगन होय सुरत चरन रस पाय ॥२२॥

१—देखी। २—आनन्द। ३—ले। ४—कारगुजारी।

चरन में बिनय करूँ हर बार[१]।
लेव मन सूरत मोर[२] सुधार ॥२३॥
दूत[३] सँग भरमत दिन और रात।
उठावत नित नित नये उतपात[४] ॥२४॥
दया की दृष्टी मो पर डाल।
काट दो मन माया का जाल ॥२५॥
हुआ मेरे मन में निश्चय आज।
करें मेरा राधास्वामी पूरन काज ॥२६॥
जगाया राधास्वामी मेरा भाग।
दिया मोहि चरन सरन अनुराग ॥२७॥
उमँग कर आरत[५] उन गाऊँ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ॥२८॥

॥ शब्द ९ ॥

सिध[६] से आई सूरत नार।
पिंड में आन फँसी नौ द्वार ॥ १ ॥
भोग इंद्रियन सँग करत बिलास।
जगत में कीन्हा सत[७] विश्वास ॥ २ ॥
दुक्ख सुख भोगत मन के माहिं।
अहँग बुध[८] धारी तन के माहिं ॥ ३ ॥

१—समय। २—मेरे। ३—काम क्रोध इत्यादि। ४—झंझट। ५—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। ६—चैतन्यता के समुद्र, मालिक। ७—सच्चा, पूरा। ८—अहँग बुध—अहंकार की बुद्धि।

करम और धरम रही भरमाय।
गुनन[1] सँग निस दिन चक्कर खाय ॥ ४ ॥
भूल गई यहाँ आय निज घर बार।
न जाने को है सत करतार ॥ ५ ॥
पूजते किरतम[2] देव अनित्त।
भरमते जग बिच धर कर चित्त ॥ ६ ॥
भेष और पंडित आप भुलाय।
दिया सब जीवन को भरमाय ॥ ७ ॥
संत सतगुरु बिन नहीं उबार[3]।
दयाल घर वही पहुँचावनहार ॥ ८ ॥
भाग बढ़ हम सबका जागा।
सूत[4] राधास्वामी चरनन लागा ॥ ९ ॥
जुड़ा राधास्वामी संगत से नात[5]।
बचन सुन मन बुधि पाई शांत ॥१०॥
संत मत महिमा जान पड़ी।
सुरत गुरु चरनन आन धरी ॥११॥
शब्द का लिया उपदेश सम्हार।
सुरत मन झाँकत मोक्ष दुआर ॥१२॥
दया राधास्वामी लेकर संग।
करम और भरम किये सब भंग[6] ॥१३॥

१—तीन गुन यानी सतोगुन, रजोगुन व तमोगुन। २—नक़ली। ३—उद्धार।
४—गहरा संबंध। ५—संबंध। ६—नाश।

बरत और तीरथ दिये उड़ाय ।
मोह जग मन से दिया हटाय ॥१४॥
प्रीति गुरू चरनन नित्त बढ़ाय ।
सुरत मन घट में अधर चढ़ाय ॥१५॥
सहसदल देखा जोत उजार ।
गगन चढ़ निरखा सूर अकार[1] ॥१६॥
सुन्न चढ़ लखी चाँदनी सार ।
भँवर में सेत सूर उजियार ॥१७॥
अमरपुर कोटन सूर उजास[2] ।
पाइया सतगुरू चरन निवास ॥१८॥
अलख और अगम का देख बिलास ।
अनामी धाम लखा परकास ॥१९॥
अजब गति राधास्वामी निरख निहार ।
मिला अब राधास्वामी सरन अधार २०
आरती[3] करती उमँग जगाय ।
चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥२१॥

॥ शब्द १० ॥

उमर सारी बीत गई जग में ।
भरम मेरे धस रहे रग रग[4] में ॥ १ ॥

१—रूप । २—प्रकाश । ३—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २ । ४—रग रग—अंग अंग ।

ज्ञान मत धार रहा कोइ काल[1]।
शांति नहिं पाई रहा बेहाल[2] ॥ २ ॥
भाग से गुरू भक्त मिलिया आय।
संत मत भेद दिया दरसाय ॥ ३ ॥
समझ में आई सत[3] मत[4] रीत।
चरन गुरू धारी हिये परतीत ॥ ४ ॥
उमँग कर दरशन को धाया।
देख सतसंगत हरखाया ॥ ५ ॥
अजब गति राधास्वामी मत जानी।
शब्द की महिमा मन मानी[5] ॥ ६ ॥
करम और भरम किये सब दूर।
जगत के सब मत देखे कूड़ ॥ ७ ॥
शब्द बिन सब जग रहा अंधा।
संत बिन को काटे फंदा ॥ ८ ॥
भाग मोहि निरबल का जागा।
चरन में गुरू के मन लागा ॥ ९ ॥
सुरत और शब्द जुगत धारी।
पिरेमी जन सँग की यारी ॥१०॥
हुआ मेरे मन अस विश्वासा।
करें गुरू पूरन मम[6] आसा ॥११॥

१—समय तक। २—परेशान। ३—सच्चे। ४—मज़हब की। ५—ठीक लगी। ६—मेरी।

रहूँ नित गुरु चरनन दासा।
चरन में राधास्वामी पाऊँ बासा॥१२॥

॥ शब्द ११ ॥

प्रेम घटा[1] घट छाय रही॥ टेक॥
धुन झनकार शब्द की धारा।
अमृत रस बरसाय रही॥ १॥
भींज रही सुत नार रँगीली[2]।
रसक[3] रसक गुन गाय रही॥ २॥
प्रिय राधास्वामी चरन धर हिये में।
उमँग उमँग लिपटाय रही॥ ३॥
अधर चढ़त सुन धुन सुत प्यारी।
सुन्न सरोवर न्हाय रही॥ ४॥
हंसन संग नवीन बिलासा।
निरख निरख मगनाय[4] रही॥ ५॥
सुनत अधर में मधुर धुन मुरली।
भँवरगुफा पर छाय[5] रही॥ ६॥
सत्तपुरुष का दरशन करके।
प्रेम नवीन जगाय रही॥ ७॥
अलख अगम का दरस निहारत।
अचरज भाग सराह रही॥ ८॥

१—बादलों का जमघट। २—प्रेम से भरी हुई। ३—प्रेम में मतवाली होकर। ४—प्रसन्न हो। ५—ठहर।

राधास्वामी चरन सिहारत[1]।
हरख हरख मुसकाय रही ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२ ॥

मेरा जिया न माने सजनी[2]।
जाऊँगी गुरु दरबार ॥ १ ॥
सेवा करूँ बचन उर[3] धारूँ।
नित्त बढ़ाऊँ प्यार ॥ २ ॥
गुरु छबि देख मगन हिये होती।
मैं तो छिन छिन जाउँ बलिहार ॥ ३ ॥
चरन सरन प्रीतम दृढ़ करती।
वोही हैं सत करतार ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का जोग कमाऊँ।
भौसागर उतरूँ पार ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ी अब हिये में।
काल करम रहे हार ॥ ६ ॥
जग जीवन को आख[4] सुनाऊँ।
मेरे गुरु का करो दीदार[5] ॥ ७ ॥
तीरथ मूरत ब्रत आचारा।
त्यागो भोग बिकार[6] ॥ ८ ॥

१—पकड़ कर। २—सखी। ३—हृदय में। ४—पुकार कर। ५—दर्शन। ६—दोष।

प्रीति प्रतीति धरो चरनन में।
जो चाहो उद्धार ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम पुकारो।
छोड़ो जगत लबार[1] ॥१०॥
आस भरोस धरो उन चरनन।
घट में देख बहार ॥११॥

॥ शब्द १३ ॥

मनुआँ सिपाही चरनन लागा।
घट परतीत पकाय ॥ १ ॥
नाम तेग़[2] धारत कर[3] अपने।
काल का सीस कटाय ॥ २ ॥
परम पुरुष राधास्वामी बल हिये धर।
चोरन मार हटाय ॥ ३ ॥
इन्द्रियन सँग नित करत लड़ाई।
ठगियन दूर पराय[4] ॥ ४ ॥
करम भरम सब दूर निकारे।
भक्ती लीन्ह जगाय ॥ ५ ॥
सुरत शब्द गुरु मत घट धारा।
मन मत दूर बहाय[5] ॥ ६ ॥

१—झूठा। २—तलवार। ३—हाथ। ४—भगा देता है। ५—हटा देता है।

काल मते में जगत फँसाना।
करम धरम अटकाय ॥ ७ ॥
कुमत अधीन जीव सब भरमत।
नित चौरासी धाय ॥ ८ ॥
मेरा भाग जगा गुरु किरपा।
सूरत शब्द लगाय ॥ ९ ॥
सुन सुन धुन हरखत रहूँ मन में।
निस दिन गुरु गुन गाय ॥१०॥
राधास्वामी नाम जपूँ नित हिये में।
चरनन ध्यान लगाय ॥११॥
गुरु छबि देख मगन हिये माहीं।
अचरज भाग सराय ॥१२॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ।
गत मत बरनी न जाय ॥१३॥
मैं तो नीच अधम नाकारा[1]।
कीन्ही मेहर बनाय ॥१४॥
चरन सरन दे पार उतारा।
राधास्वामी हुए हैं सहाय ॥१५॥
उमँग उमँग गुरु आरत[2] गाऊँ।
तन मन भेंट चढ़ाय ॥१६॥

१—निकम्मा। २—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २।

राधास्वामी चरनन पर बल जाऊँ।
रहूँ नित सरन समाय ॥१७॥

॥ शब्द १४ ॥

मेरे लगी प्रेम की चोट।
बिकल मन अति घबरावे॥
कोइ कछू कहे समझाय।
चित्त में नेक[1] न आवे ॥ १ ॥
मात पिता बहु कहें।
बहन और भाई भतीजे॥
मूरख हैं सब लोग।
प्रीति उन दिन दिन छीजे[2] ॥ २ ॥
मैं सतगुरु बल धार।
चरन में प्रीति बढ़ाता ॥
जग से होय निरास।
रूप गुरु निस दिन ध्याता ॥ ३ ॥
दया करी गुरु देव।
सुरत अब धुन में लागी ॥
घट में देख बिलास।
सरन में दृढ़ कर पागी[3] ॥ ४ ॥

१—जरा भी। २—कम होती जाती है। ३—लीन हो गई।

राधास्वामी दीन दयाल ।
दया कर मोहि अपनाया ॥
करम भरम को काट ।
त्रिकुटी पार पहुँचाया ॥ ५ ॥
सुन्न महासुन होय ।
गई सुत सोहँग पासा ॥
आगे सत पद परस[1] ।
अलख लख अगम निवासा । ६ ।
पहुँची राधास्वामी धाम ।
मेहर से सतगुरु केरी[2] ॥
दरशन राधास्वामी पाय ।
दया उन छिन छिन हेरी[3] ॥ ७ ॥

॥ शब्द १५ ॥

दास हुआ चरनन में लौलीन ।
ध्यान गुरु लाय ताड़ी ॥ १ ॥
जगत की दई बासना त्याग ।
देख घट उजियारी ॥ २ ॥
सुरत मन मगन होत सुन सुन ।
शब्द धुन झनकारी ॥ ३ ॥

१—पहुँच कर । २—की । ३—देखी ।

काम और क्रोध गये घर छोड़ ।
हुआ तन सुखियारी ॥ ४ ॥
करम और भरम हुए सब दूर ।
हुई जग से न्यारी[1] ॥ ५ ॥
काल और करम रहे सब हार ।
थकी माया नारी ॥ ६ ॥
सुरत मन हो गये अब निरबंध ।
चढ़त नभ के पारी ॥ ७ ॥
निरख गुरु दरशन त्रिकुटी माहिं ।
चरन पर जाऊँ वारी[2] ॥ ८ ॥
सुन्न और महासुन्न के पार ।
सुनी बंसी प्यारी ॥ ९ ॥
अमरपुर निरख पुरुष का रूप ।
अजब गत स्रुत धारी ॥१०॥
अधर चढ़ निरखा राधास्वामी धाम ।
मेहर उन करी भारी ॥११॥
करूँ क्या अस्तुत उनकी गाय ।
चरन पर बलिहारी ॥१२॥

१—अलहदा । २—निछावर ।

॥ शब्द १६ ॥

गुरू नैन रसीले निरखे ।
मेरे सिमट गये मन प्रान ॥ १ ॥
पुरुष अंस मेरी निरमल सूरत ।
बसी काल घर आन ॥ २ ॥
बिना दया सतगुरू पूरे के ।
कस उलटे घर जान ॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे मिले परम गुरू ।
उन दीना पता निशान ॥ ४ ॥
दृष्टि करी भरपूर मेहर की ।
पहुँची अधर ठिकान ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

राधास्वामी सतगुरू पूरे ।
मैं आया सरन हज़ूरे ॥ १ ॥
मैं औगुनहारा भारी ।
तुम बख़्शो[1] भूल हमारी ॥ २ ॥
मैं जग में बहु भरमाया ।
कहीं घर का पता न पाया ॥ ३ ॥
तुम कीनी दात अपारी ।
निज घर का भेद दिया री ॥ ४ ॥

१—माफ़ करो ।

स्रुत शब्द जुगत समझाई ।
सुमिरन और ध्यान बताई । ५ ॥
जो करे कमाई हित[1] से ।
और बचन सुने जो चित से ॥ ६ ॥
वह छिन छिन घट में धावे ।
और शब्द अमीरस पावे ॥ ७ ॥
गुरु मेरा भाग जगाया ।
मन सूरत शब्द लगाया ॥ ८ ॥
अब मन में रहूँ मगन[2] मैं ।
शब्दारस पिऊँ अपन[3] में ॥ ९ ॥
गुरु बचन लगे मोहि प्यारे ।
सुन सुन हुआ जग से न्यारे ॥१०॥
मेरे औगुन चित न बिचारे ।
गुरु कीनी दात अपारे ॥११॥
सतसंगत में जब रलिया[4] ।
गुरु प्रेमी जन सँग मिलिया ॥१२॥
गुरु भक्ती रीत पिछानी[5] ।
निश्चय कर मन में मानी ॥१३॥
सोई जन है बड़भागी ।
जिन हिरदे भक्ती जागी ॥१४॥

१—प्रेम । २—प्रसन्न । ३—अंतर । ४—हिलमिल गया । ५—पहचानी ।

राधास्वामी से करूँ पुकारी।
मोहि दीजे भक्ति करारी[1] ॥१५॥
नित सुरत शब्द में भरना[2]।
चित रहे तुम्हारे चरना ॥१६॥
माया से लेव बचाई।
राधास्वामी नाम धियाई ॥१७॥
गुरु आरत निस दिन गाऊँ।
राधास्वामी चरन समाऊँ ॥१८॥

॥ शब्द १८ ॥

काहे को[3] डरपे[4] मन नादान।
रहो छिप कँवल कली में आन ॥ १ ॥
पकड़ ले गुरु की ओट[5] सम्हार।
करम और काल रहें तब हार ॥ २ ॥
शब्द का मारग ले कर सार।
धुनन की सुन घट में झनकार ॥ ३ ॥
खेल रहा बालक सम जग माहिं।
जकड़ कर पकड़त नहिं गुरु बाँह ॥४॥
इसी से होत भरम भारी।
गुरू का बल हिये नहिं धारी ॥ ५ ॥

१—तेज। २—प्रवेश करना। ३—काहे को—क्यों। ४—डरता है। ५—शरण।

चेत कर करो आज सतसंग ।
चित्त में धारो ढंग उमंग ॥ ६ ॥
बसाओ घट में राधास्वामी प्रीत।
चलो निज घर को भौजल जीत। ७ ॥

॥ शब्द १९ ॥

पूरन भक्ति देव गुरु दाता ।
सुरत रहे तुम चरनन साथा ॥ १ ॥
मन बिच प्रीति बढ़ाओ दिन दिन।
गुन गाऊँ राधास्वामी छिन छिन। २ ॥
जग बिच दुख पाये बहुतेरे ।
हार पड़ा होय चरनन चेरे[1] ॥ ३ ॥
काल करम मोहि नित भरमावत।
मन इंद्री भोगन सँग धावत ॥ ४ ॥
तुम बिन और न रक्षक मेरा ।
लीजे मोहि बचाय सबेरा[2] ॥ ५ ॥
भेद तुम्हारा अगम अपारा ।
सुरत शब्द मारग अति सारा ॥ ६ ॥
सो किरपा कर दिया मोहि दाना।
घट में पाया नाम निशाना ॥ ७ ॥

१—दास। २—जल्दी।

अब यह बिनय सुनो मेरे साईं।
राखो मन चरनन की छाईं[1] ॥ ८ ॥
कर जल्दी खोलो घट द्वारा।
देखूँ नभ में जोत उजारा ॥ ९ ॥
बंकनाल धस त्रिकुटी फोड़ूँ।
काल करम का बल सब तोड़ूँ ॥१०॥
सुन्न सिखर चढ़ तन मन वारूँ[2]।
चन्द्र चाँदनी चौक निहारूँ ॥११॥
गुरु बल जाउँ महासुन पारा।
सुनूँ गुफा धुन सोहँग सारा ॥१२॥
सतपुर दरस पुरुष का पाऊँ।
अलख अगम के पार चढ़ाऊँ ॥१३॥
राधास्वामी चरन निहारूँ।
उमँग सहित उन आरत[3] धारूँ ॥१४॥
पूरन सरन प्रसादी पाऊँ।
प्रेम सहित नित चरन धियाऊँ ॥१५॥
उलट जगत में फिर चल आऊँ।
जीवन को निज नाम सुनाऊँ ॥१६॥
चरन ओट[4] ले राधास्वामी गाओ।
भाग आपना आज जगाओ ॥१७॥

१—ओट। २—निछावर करूँ। ३—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। ४—शरण।

फिर औसर ऐसा नहिं पाओ ।
चौरासी का फेर[1] बचाओ ॥१८॥
जो कहना नहिं मानो मेरा ।
जन्म जन्म दुख सहो घनेरा[2] ॥१९॥
या से आजहि काज बनाओ ।
राधास्वामी २ छिन छिन गाओ ॥२०॥
बड़े भाग पाई राधास्वामी सरना ।
भौसागर से सहजहि तरना ॥२१॥

॥ शब्द २० ॥

राधास्वामी चरनन आओ रे मना ।
भाग अपना लेव जगाय रे मना ॥ १ ॥
तन मन धन सँग तुम लाओ रे मना ।
गुरु चरनन भेंट चढ़ाओ रे मना ॥ २ ॥
अब काम क्रोध तज आओ रे मना ।
तब राधास्वामी किरपा पाओ रे मना ॥३॥
सतसँग कर भाव[3] बढ़ाओ रे मना ।
गुरु चरनन सुरत लगाओ रे मना ॥ ४ ॥
शब्दारस घट में पाओ रे मना ।
गुरुमहिमा छिन छिन गाओ रे मना ॥ ५ ॥

१—चक्कर । २—बहुत । ३—श्रद्धा ।

वहाँ अनहद तूर[1] बजाओ रे मना।
दसवाँ दर[2] सहज खुलाओ रे मना॥ ६॥
सुत खैंच अधर को चढ़ाओ रे मना।
धुन मुरली बीन सुनाओ रे मना॥ ७॥
वहाँ से भी क़दम बढ़ाओ रे मना।
राधास्वामी चरन समाओ रे मना॥ ८॥

॥ शब्द २१ ॥

ऐसी चौपड़[3] खेलो जग में।
लाल[4] होय पहुँचो गुरु पद में॥ १॥
माया काल से बाज़ी लाग।
होय हुशियार जगत से भाग॥ २॥
सुरत गोट चौपड़ में अटकी।
बिन सतगुरु चौरासी भटकी॥ ३॥
पूरे गुरु से मिल धर प्रीत।
जुग[5] बाँधो कर दृढ़ परतीत॥ ४॥
प्रेम सहित उन सँग घर चलना।
चोट न खाओ काल बल दलना॥ ५॥
काल दूत जो बिघन करावें।
मार कूट उन तुरत हटावें॥ ६॥

१—शब्द। २—द्वार। ३—चौसर। इस खेल में चार पट्टियों पर खाने बने रहते हैं। पाँसा फेंक कर संख्या के अनुसार गोटियाँ उन खानों में चलाते हैं। ४—सब खानों में होती हुई जो गोट बीच के बड़े खाने में पहुँच जाती है, उसे लाल कहते हैं। ५—जोड़ा। अगर दो गोटें जुग बाँध कर चलती हैं, तो मारी नहीं जातीं।

खेत जिताय चढ़ावें रंग।
दूर करावें सब बदरंग[1] ॥ ७ ॥
तीन धार[2] के पासे डाले।
सुखमन होय सुरत घर चाले ॥ ८ ॥
दाव पड़ा मेरा अबके भारी।
सतगुरु मिल मोहि आप सम्हारी ॥ ९ ॥
ऐसा औसर फिर नहिं मिलही।
जम को कूट पार घर चलही ॥१०॥
गुरु सँग जुग सीधा घर जावे।
रस्ते में कोइ बिघन न आवे ॥११॥
गुरु पद परस लाल हो जावे।
सतपुर जाय सेत पद पावे ॥१२॥
धुन मुरली और बीन सुनावे।
सतगुरु चरन परस हरखावे ॥१३॥
अलख अगम घर निरख निहारे।
धाम अनामी अधर सिधारे ॥१४॥
राधास्वामी चरन धार परतीती।
काल और महाकाल दल जीती ॥१५॥
अस चौपड़ राधास्वामी खिलाई।
सुरत जीत कर निज घर आई ॥१६॥

१—बुरा रंग। २—इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना।

॥ शब्द २२ ॥

जो जन राधास्वामी सरना पड़े।
उनके जागे भाग बड़े ॥ १ ॥
कर सतसँग उन प्रीति बढ़ाई।
मान मोह तज न्यारे[1] खड़े ॥ २ ॥
जग भय भाव लाज तज दीन्ही।
सतसँग में नित रहत अड़े ॥ ३ ॥
धर परतीत गहे गुरु चरना।
सहज सहज भौसिंधु[2] तरे ॥ ४ ॥
गुरु बल जीत लिया मैदाना।
मन माया से ख़ूब लड़े ॥ ५ ॥
काम क्रोध अहंकार लबारा[3]।
लोभ मोह सब मार धरे ॥ ६ ॥
राधास्वामी काज किया सब पूरा।
उन बिन को अस दया करे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २३ ॥

मन रे सतसँग गुरु का करो।
प्रीति प्रतीति निज हिये धरो ॥ १ ॥
उनका सँग कर समझ सम्हारो[4]।
घट अँधियारा दूर करो ॥ २ ॥

१—सबसे अलग। २—भवसागर। ३—झूठे। ४—ग्रहण करो।

सुरत शब्द मारग ले उनसे।
सुरत शब्द में नित्त भरो ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर छिन २ में।
गुरु सरूप का ध्यान धरो ॥ ४ ॥
सेवा करो प्रीति से गुरु की।
दीन होय उन चरन पड़ो ॥ ५ ॥
दया लेव हरदम तुम उनकी।
तब यह भौजल सहज तरो ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा।
काल करम से नाहिं डरो ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

रागी जन माया के पाले पड़े ॥टेक॥
नित प्रति[1] उसके धक्के खावें।
त्रिय तापन[2] की अगिन जरे ॥ १ ॥
गुरु दरशन में भाव न लावें।
धन वालों के द्वारे खड़े ॥ २ ॥
जो गुरु बचन सुनावें उनको।
नेक न मानें मान[3] भरे ॥ ३ ॥
निंदा कर सिर भार चढ़ावें।
नरकन में सहें दुक्ख बड़े ॥ ४ ॥

१—नित प्रति—नित्य प्रति, हर रोज़। २—त्रिय तापन—आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक कष्ट। ३—अहंकार।

राधास्वामी मेहर से खैंच चरन में।
यह जिव भी भौ पार करे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

मन रे क्यों न धरे गुरु ध्याना।
तज[1] मान मोह अज्ञाना ॥ १ ॥
गुरु सँग प्रीति करो तुम ऐसी।
जस बालक माता लिपटाना ॥ २ ॥
गुरु स्वरूप लागे अस प्यारा।
जस तिरिया[2] सँग पति हरखाना ॥३॥
जब लग[3] घट में प्रेम न होवे।
ध्यान धरत मन रस नहिं पाना ॥४ ॥
दया मेहर सतगुरु की सँग ले।
दीन होय चित भजन समाना ॥ ५ ॥
मन को रोक सुनो धुन घट में।
सहज सहज तन से अलगाना ॥ ६ ॥
इस बिधि कार[4] करो तुम निस दिन।
पाओ राधास्वामी चरन ठिकाना ॥७॥

॥ शब्द २६ ॥

हंसनी क्यों न सुने गुरु बानी।
जग सँग रहत मिलानी ॥ १ ॥

१—छोड़ कर। २—स्त्री। ३—तक। ४—कमाई।

वक़्त अमोल जाय योंही बीता ।
परमारथ की सार[1] न जानी ॥ २ ॥
सोच बिचार करो अब मन में ।
नहिं तो बहुत होय तेरी हानी[2] ॥ ३ ॥
भोग जगत के त्यागो मन से ।
क्यों तू इन सँग भूल भुलानी ॥ ४ ॥
सतसँग कर परतीत बढ़ाओ ।
प्रीति चरन में गुरु के आनी[3] ॥ ५ ॥
घट का भेद लेव तुम उन से ।
सुरत शब्द में नित्त लगानी ॥ ६ ॥
राधास्वामी काज करें तेरा पूरा ।
उनके चरन में सुरत समानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

अरे मन क्यों नहिं धारे गुरु ज्ञान ॥टेक॥
सत[4] चेतन घट माहिं बिराजे ।
तू बाहर जड़ सँग भरमान ॥ १ ॥
निज घर तेरा अगम अपारा ।
तू रहा जग सँग यहाँ भुलान ॥ २ ॥
धन और मान पाय बहु फूला ।
तिरिया सुत सँग मेल मिलान ॥ ३ ॥

१—असलियत । २—हानि, नुक़सान । ३—लाओ । ४—सच्चा ।

जग की हालत नित उठ देखे।
कोई न ठहरे सभी चलान ॥ ४ ॥
फिर फिर बिरधी[1] चाहे यहाँ की।
ऐसा मूरख समझ न लान ॥ ५ ॥
कभी जाग्रत कभी सुपन अवस्था।
गहिरी नींद में कभी सुलान ॥ ६ ॥
इन हालों में नित प्रति बरते।
परख न लावे अजब सुजान[2] ॥ ७ ॥
मद माता[3] भोगन में राता[4]।
मोह जाल में रहा फँसान ॥ ८ ॥
करता की रचना नित देखे।
तौ भी उसका खोज न आन ॥ ९ ॥
परगट है कुदरत का खेला।
यह पोथी कभी पढ़ी न पढ़ान ॥१०॥
खान पान में बैस[5] बितावत।
मरने की कभी सुद्ध न लान ॥११॥
काम क्रोध और लोभ लहर में।
बहत रहे निस दिन अनजान ॥१२॥
जो कोइ बचन चितावन कारन।
कहे तो उससे रूसे[6] आन ॥१३॥

१—वृद्धि, बढ़ती, उन्नति। २—चतुर। ३—मतवाला। ४—लीन। ५—वयस, उम्र। ६—नाराज होता है।

साध संत हुए जिव हितकारी ।
परमारथ की राह लखान ॥१४॥
शब्द भेद दे जुगत बतावें ।
सुरत चढ़ावें अधर ठिकान ॥१५॥
जनम मरन की फाँसी काटें ।
काल करम से सहज बचान ॥१६॥
तिनका बचन सुने नहिं चित दे ।
सोचे न अपनी लाभ और हान ॥१७॥
संत संग नाता[1] नहिं जोड़े ।
सतसँग में नहिं बैठे आन ॥१८॥
कुटँब जगत का मोह न छोड़े ।
क्योंकर पावे नाम निशान ॥१९॥
जीव हुआ लाचार जगत में ।
निरबल निरधन निपट[2] अजान[3] ॥२०॥
जब लग मेहर न होवे धुर की ।
संत मता कस माने आन ॥२१॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर ।
संत चरन में वही लगान ॥२२॥
प्रीति लाय नित करे साध सँग ।
सुरत शब्द की कार[4] कमान ॥२३॥

१—संबंध । २—बिलकुल । ३—मूर्ख । ४—काररवाई ।

शब्द शब्द रस पिये अधर चढ़ ।
सतगुरु का हिये धर कर ध्यान ॥२४॥
दया हुई कारज हुआ पूरा ।
राधास्वामी चरन समान ॥२५॥

॥ शब्द २८ ॥

गुरु सँग प्रीति न कोई करे ।
चरनन में नहिं भाव[1] धरे ॥ १ ॥
जो सतसंगी बचन सुनावें ।
मूरखता कर उनसे लड़े ॥ २ ॥
जगत भोग में गया भुलाई ।
जम धक्के नित खाता फिरे ॥ ३ ॥
माया संग रहा अटकाई ।
भौसागर कहो कैसे तरे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करें जब अपनी ।
इन जीवन की बिपता[2] टरे[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

राधास्वामी सेव करत धर प्यारा ।
बिजन[4] अनेक कीन तैयारा ॥ १ ॥

१—विश्वास । २—कष्ट । ३—दूर होवे । ४—स्वादिष्ट पदार्थ ।

भर भर थाल धरे स्वामी आगे ।
सर्व पदारथ अमी रस पागे ॥ २ ॥
प्रेम सहित स्वामी ध्यान सम्हारा ।
गगन मँडल धुन शब्द पुकारा ॥ ३ ॥
अधर चढ़त निरखा जाय सतपुर ।
रूप सुहावन राधास्वामी सतगुरु ।४।
दया करी स्वामी भोग लगाया ।
अमीरस स्वाद दीन बरखाया ॥ ५ ॥
उमँग उमँग सतसंगी मिल कर ।
ले परशादी हिये भाव धर ॥ ६ ॥
प्रेम बढ़त अब घट में तिल तिल[1] ।
राधास्वामी गुन गावें सब मिल मिल ७।

बचन १९—ग़ज़ल और मसनवी

॥ ग़ज़ल १ ॥

हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ।
मन से बेज़ार[2] सुरत वार के दीवाना हुआ ।१।
इक नज़र ने तेरी ऐ जाँ मुझे बेहाल किया ।
लैला के इश्क़ में मजनूँ सा परेशान किया ।२।
मैं हूँ बीमार मेरे दर्द का नहिं और इलाज ।
मेरे दिलजख़्मकामरहम तेरी बोली है इलाज ३

१—तिल तिल—धीरे धीरे । २—दुखी ।

तेरे मुखड़े की चमक ने किया मन को नूराँ[१]।
सूरज और चाँद हज़ारों हुए उससे ख़िजलाँ[२]४
जग में इस चक्र ज़माने का यह दस्तूर[३] हुआ।
प्रेमी प्रीतम के चरन लाग के मशहूर हुआ।५।
हिर्स[४] दुनियाँ की मेरे दिल से हुई है सब दूर।
तेरे दरशन की लगन मन में रही है भरपूर।६।
वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन सुर्त मिली।
चंद्र मंडल को वहीं फोड़ के गगना में पिली।७।
राग और रागनी मैंने सुने अंतर जाकर।
मेरे नज़दीक हुए हिन्दू मुसलमाँ काफ़िर[५]।८।

॥ ग़ज़ल २ ॥

अर्श पर पहुँच कर मैं देखा नूर।
काल को मार कर मैं फूँका सूर[६]॥ १ ॥
देह की सुधि गई जो सुर्त चढ़ी।
जाके बैठी जहाँ कि पहले थी ॥ २ ॥
निज गली यार के जो आशिक़ हैं।
भीड़ से अब एकांत लाऊँ मैं ॥ ३ ॥
जो कहूँ मैं सो कान देके सुनो।
सुर्त खैंचो चढ़ाओ धुन को सुनो॥ ४ ॥

१—प्रकाशमान। २—शर्मिन्दा। ३—रिवाज। ४—हवस। ५—लामज़हब।
६—प्रलय यानी क़यामात का बाजा। फूँका सूर—बाजा बजाया।

सिर में है तेरे बाग़ और सतसंग।
सैर कर जल्द ले गुरू का रंग ॥ ५ ॥
तान पुतली को आँख को मत खोल।
चढ़ के आकाश का दुआरा खोल ॥ ६ ॥
जब चढ़े सुर्त तेरी अंदर यार।
देह की सैर कर व देख बहार ॥ ७ ॥
अचरजी सैर है तेरे बीचे[1]।
पिरथी ऊपर है आस्माँ नीचे ॥ ८ ॥
बंकनाल होके आगे सुर्त चली।
त्रिकुटी पहुँच कर गुरू से मिली ॥ ९ ॥
रूप सूरज का लाल क्या बरनूँ।
सहस सूरज हैं उसके इक रोमूँ ॥१०॥
आगे चल सुर्त सुन्न में पहुँची।
धुन किंगरी व सारँगी की सुनी ॥११॥
कुंड अमृत भरे नज़र आये।
हंस रूप होय मोती चुन खाये ॥१२॥
सुन्न को छोड़ कर चली आगे।
पहुँची महासुन जहाँ सोहँग जागे[2] ॥१३॥
हाल वहाँ का मैं क्या कहूँ क्या है।
जानता है वही जो पहुँचा है ॥१४॥

१—अंतर में। २—प्रकट है, सोहं शब्द होता है।

रास्ते में वहाँ अँधेरा है।
सतगुरू संग ही निबेड़ा है ॥१५॥
सतगुरू संग तें किया मैदाँ।
काल देख उनको हो गया हैराँ ॥१६॥
सुर्त चढ़ कर गुफ़ा में पहुँची धाय।
धुन सोहँग सुनी मुक़ाम को पाय ॥१७॥
इस मुक़ाम अचरजी को पाय मिली।
खोल खिड़की को अंदरून चली ॥१८॥
आगे चल सत्तलोक पहुँची धाय।
और अमी का अहार दम दम खाय।१९।
आगे इसके अलख अगम है मुक़ाम।
तिस परे हैगा राधास्वामी नाम ॥२०॥
यह मुक़ाम है अकह अपार अनाम।
संत बिन कौन पा सके यह धाम ॥२१॥
भेद सब इस जगह तमाम हुआ।
सब हुए चुप्प मैं भी चुप्प हुआ ॥२२॥

॥ गज़ल ३ ॥

निज रूप पूरे सतगुरू का
प्रेम मन में छा रहा।
बचन अमृत धार उनके
सुन अमी में न्हा रहा ॥ १ ॥

जब से चरनों में लगा
और धूर चरनों की लई।
मन के अंतर का अँधेरा
मैल सब जाता रहा॥ २॥

मुखड़ा सुहावन क़द्द सीधा
चाल अति शोभा भरी।
तेज रोशन सीने अंदर
मन को घायल कर रहा॥ ३॥

जो किया सतसंग सतगुरु
और बचन पूरे सुने।
दीन दुनिया झूठी लागी
और न उनका ग़म[1] रहा॥ ४॥

पिंड का सब भेद पोशीदा[2]
मुझे ज़ाहिर हुआ।
मेहर से पूरे गुरू के
काम मेरा बन रहा॥ ५॥

सुर्त ने जब धुन को पकड़ा
आस्माँ पर चढ़ गई।
हो गई क़ाबिल[3] वहाँ पर
फिर न कोई ग़म रहा॥ ६॥

१—अफ़सोस। २—गुप्त, छिपा हुआ। ३—योग्य।

॥ वज़न २ ॥

सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई ।
नभ पर पहुँची व जानकार हुई ॥ ७ ॥
देखी वहाँ पर अजब नवीन बहार।
और अनुभव जगा[1] हुई सरशार[2] ॥ ८ ॥
दुक्ख जन्म और मरन की तकलीफ़ात।
हो गई दूर और गई आफ़ात ॥ ९ ॥
भेद अन्तर का मुझपै हाल खुला।
जब कि सतगुरु से मैं सवाल किया ॥१०॥
देह को ख़ाक की मैं छोड़ गया।
काल भी थक के मुझसे बाज़[3] रहा ॥११॥
सुर्त आकाश पर चढ़ी इक बार।
कर्म कारज गए हुई करतार ॥१२॥
मेरे सतगुरु ने जब करी किरपा।
पद से जाकर मिली बियोग[4] गया ॥१३॥
करमी[5] शरई[6] नमाज़ी[7] क्या जानें।
भेद अभ्यासी आप पहिचानें ॥१४॥
बिद्यावान सब रहे मूरख ।
अंतरी भेद को न जानें कुछ ॥१५॥

१—प्रकट हुआ, प्राप्त हुआ। २—निहाल, पूर्ण संतुष्ट। ३—हार। ४—जुदाई।
५—कर्मकांडी। ६—शरीअ़त पर चलने वाले। ७—नमाज़ करने वाले।

संशय में सब जगत रहा कूड़ा।
रहा बाचक[1] न पाया गुरू पूरा ॥१६॥
पाये सतगुरू उसी का जागा भाग।
बाक़ी बाद और बिबाद[2] में रहे लाग॥१७
राधास्वामी गुरू ने की किरपा।
भाग जागा है मेरा अब धुर का[3] ॥१८॥

॥ ग़ज़ल १० ॥

यह सतसंग और राधास्वामी है नाम।
सरन आओ हे करमियों तुम तमाम।१॥
जो सतगुरू से चाहो दया की नज़र।
सुरत और मन और मत भेंट कर॥ २ ॥
ख़राब हैगी हालत सभों की यहाँ।
बचा चाहो सतगुरू सरन लो मियाँ॥ ३ ॥
हटा करके संसे सरन में तू आ।
प्रीति और परतीत दृढ़ कर सदा॥ ४ ॥
तू सतगुरू के दरवाज़े पर कर पुकार।
और उनके भक्तों का रस्ता बुहार[4] ॥ ५ ॥
पतंगा सा सतगुरू पै आपे को वार[5]।
सिंघासन की धूल अपने पलकों से झाड़ ६

१—बाचक ज्ञानी, बातों में लीन। २—बाद और बिबाद—बहस मुबाहसा।
३—धुर का—पूरा, उत्तम। ४—झाड़, साफ़ कर। ५—निछावर कर।

कभी मेहर से शहद देवें तुझे।
मुनासिब समझ ज़हर देवें तुझे॥ ७॥
तु चुप होके ले और सिर पर चढ़ा।
तू ख़ुश होके पी और कह यह सदा[1]॥८॥
कि धन २ हैं धन धन हैं सतगुरु मेरे।
उतारेंगे भौजल से बेशक परे[2]॥ ९॥

॥ अशआर सतगुरु महिमा ॥

संत बचन हिरदे में धरना।
उनसे मुख मोड़न नहिं करना॥ १॥
मीठा कड़ुवा बोल सुहाई।
मत को तरे देहैं पकाई॥ २॥
गरम सरद का सोच न लाना।
नरक अगिन से तोहि बचाना॥ ३॥
तेरी समझ है किनके[3] माहीं।
गुरु पूरा खोजो जग माहीं॥ ४॥
उन सँग किनका पावे ज्ञान।
मार लेय तू मन शैतान॥ ५॥
गुरु पूरा कस्तूर[4] समान।
बाहर ख़ूँ[5] घट मुश्क बसान॥ ६॥

१—पुकार। २—पार। ३—जरें। ४—कस्तूरी, मुश्क। ५—खून, लहू।

जब वे घट का भेद सुनावें।
नभ की ओर सुरत मन धावें ॥ ७ ॥
अँधे को शीशा दिखलाना।
ऐसे हरि पत्थर में जाना ॥ ८ ॥
गुरु बिन घट में राह न चलना।
डर और बिघन अनेकन मिलना ॥ ९ ॥
गुरु रक्षा जाके सँग नाहीं।
उसको काल करम भरमाहीं ॥१०॥
याते सतगुरु ओट[1] पकड़ना।
झूठे गुरु से काज न सरना ॥११॥
गिर[2] समान उन छाया जग में।
सुरत बिहंगम[3] रहत अधर में ॥१२॥
जो मन करड़ा पत्थर होवे।
गुरु से मिलत जवाहिर होवे ॥१३॥
बँदगी भजन करे सौ बरसा।
गुरु का संग दुघड़िया[4] बढ़का ॥१४॥
जो मालिक का चहे दीदार[5]।
जा तू बैठ गुरू दरबार ॥१५॥
मालिक का बालक गुरु पूर।
मालिक का हरदम मंज़ूर ॥१६॥

१—शरण। २—पहाड़। ३—पक्षी। ४—दो घड़ी का भी। ५—दर्शन।

गुरु पूरे को समरथ जान।
करम बान उलटावें आन ॥१७॥
जो मालिक का सुनता बोल।
उसका बचन सही कर तोल ॥१८॥
जो तू घट में चालनहार।
चलने वाला सँग ले यार ॥१९॥
हिन्दू चाहे मुसलमाँ होवे।
अरबी होय तुरक चाहे होवे ॥२०॥
रूप रंग उसका मत देख।
सरधा भाव निशाना पेख[1] ॥२१॥
जिनके है मालिक का प्यार।
हिन्दू और तुरक दोउ यार[2] ॥२२॥
जो हैं माते[3] मन के केल[4]।
दो हिन्दू का होय न मेल ॥२३॥
भान[5] रूप मालिक सुन भाई।
नर देही में रहा छिपाई ॥२४॥
फूल खिलैं गुलनारी[6] जबही।
बाग़ सुहावन लागे तबही ॥२५॥
अस[7] गुरु संग करे जो कोई।
पूरे सँग पूरा होय सोई ॥२६॥

१—देख। २—दोस्त। ३—मतवाले। ४—खेल में। ५—सूर्य। ६—गहरे लाल रंग के। ७—ऐसे।

गुरु पूरे का सेवक बरतर[1] ।
क्या जो हुकम करे राजों पर ॥२७॥
हर दम सुरत चढ़े ऊँचे को ।
मालिक ताज ख़ास दिया उसको ॥२८॥
गुरु की गति परखो अन्तर में ।
बे परखे मत मानो मन में ॥२९॥
जो गुरु परख न पावे घट में ।
तो मत जाय अकेला बट[2] में ॥३०॥
रस्ते में है काल का घेरा ।
शब्द सुना दुख देहै घनेरा[3] ॥३१॥
अभ्यासी को कहे पुकारी ।
शब्द सुनो आओ सरन हमारी ॥३२॥
जो कोई काल शब्द में रचिया ।
घर नहि जाय राह में पचिया[4] ॥३३॥
धावत जाय काल के घर को ।
भिड़ा शेर खा जावें उसको ॥३४॥
काल शब्द की यह पहिचान ।
मन चाहे धन आदर मान[5] ॥३५॥
काल शब्द में चित्त न लाओ ।
तब निज घर का भेद खुलाओ ॥३६॥

१—अच्छा । २—रास्ते । ३—बहुत । ४—परेशान होता है । ५—इज्ज़त ।

जिस घट परघट सत का नूर[1]।
उसको पूजें देव और हूर[2] ॥३७॥
साध का निरखो आँख और माथा।
सत्त का नूर रहे जिस साथा ॥३८॥
यह चिन्ह देख करें पहिचान।
गुरु पद का जिन हिरदे ज्ञान ॥३९॥
परम पुरुष सम[3] गुरु को जान।
बिन जिभ्या[4] कहें बचन सुजान ॥४०॥
वही हकीम और वही उस्ताद।
हिये में सुनत रहो उन नाद[5] ॥४१॥
छोड़ कुसंगी से तू प्यार।
सच्चा संगी खोजो यार ॥४२॥
जिन कीना सतगुरु का संग।
सत्तपुरुष का पाया रंग ॥४३॥
झूठे गुरु का जो सँग लाय।
नरक पड़े और अति दुख पाय ॥४४॥
गत मत भेद संत का भारी।
वही पावे जिन तन मन वारी[6] ॥४५॥
संत न देखें बोल और चाल।
वे परखें अंतर का हाल ॥४६॥

१—प्रकाश। २—अप्सराएँ। ३—समान। ४—जबान। ५—शब्द।
६—निछावर कर दिया।

गुरु का हाथ पुरुष[1] का हाथ।
हाज़िर ग़ायब[2] सब के साथ ॥४७॥

उनका हाथ बहु लंबा ऊँचा।
सात मुक़ाम के ऊपर पहुँचा ॥४८॥

जो तू सिर को राखा चाह।
दीन होय गुरु सरनी आय ॥४९॥

गुरु तुझको सब भाँति बचावें।
काल बिघन सब दूर करावें ॥५०॥

झूँठे गुरु की ओट[3] न गहना।
सतगुरु चरन सरन सुख लेना ॥५१॥

जिन सतगुरु का संग न कीना।
दुख पाया हुआ काल अधीना ॥५२॥

जो हुआ सतगुरु की छाँह।
सूरज लागा उसके पाँय ॥५३॥

॥ बहर दूसरी ॥

जो तुझे चलना है तो इस ढंग चल।
जो ख़िज़र[4] है तो भी गुरु के संग चल ॥५४॥

बन सके जहाँ तक तू गुरु से मुख न फेर।
सेवा कर अभ्यास कर मत कर तू देर ॥५५॥

१—मालिक। २—हाज़िर ग़ायब—प्रकट गुप्त। ३—शरण। ४—रास्ता बतलाने वाला फ़रिश्ता।

निरभै[1] मत हो खौफ़ रख मन में सदा।
लाज तज बदनाम हो जग से जुदा ॥५६॥
कोई तरह यह मन नहीं हाथ आयेगा।
पूरे गुरू की छाया से मर जायगा ॥५७॥
इसलिये दामन[2] को तू उनके पकड़।
छोड़ मत ऐ यार उसको धर जकड़ ॥५८॥
जो तू मज़बूती से पकड़ेगा चरन।
मिल गई मालिक की तुझको निज सरन ५९॥
देख हरदम मेहर उनकी अपने साथ।
नित निरख सिर पर तू अपने उनका हाथ॥
गुरू के हिरदे में तू कर ले अपना घर।
सुर्त रूप अपना निरख चढ़ मानसर॥६१॥
गुरू की ताड़ और मार सह धर कर पियार।
मूरखों की अस्तुती[3] पर ख़ाक डार ॥६२॥
गुरू से परमारथ की दौलत पायेगा।
सुरत सँग चेतन अँग हो जायगा ॥६३॥
पूरे गुरू को खटमुखी[4] आईना[5] जान।
मालिक उसमें बैठ कर देखे है आन॥६४॥
बे वसीले[6] गुरू के परमारथ न पाय।
चाहे कोई कुछ करे निज घर न जाय॥६५॥

१—निडर। २—खूँट। ३—प्रशंसा। ४—छः पहलू वाला। ५—शीशा। ६—ज़रिये।

जिनको मालिक का हुआ हासिल विसाल[1]।
थोड़ा सा मैंने कहा यह उनका हाल ॥६६॥

पूरे गुरु हैं शेर वे करते शिकार।
और सब बाक़ी हैं उनके टुकड़ेख़्वार[2] ॥६७॥

बस रहो चुप और गुरु सरनी गहो।
हुकम मानो उनके चरनों में रहो ॥६८॥

ओट पूरे की गहो पूरे बनो।
नीच की संगत न कर नहीं सिर धुनो ॥६९॥

जो भजन और बंदगी हर की करै।
या करम और धरम सब बिध[3] से करै ॥७०॥

गुरु की फटकार और निरादर जिन सहा।
वह हुआ इन सबसे बेहतर मैं कहा ॥७१॥

हक़[4] ने पैग़म्बर को समझाया कि मैं।
मिल नहीं सकता ज़मीं आस्मान में ॥७२॥

ऊँचे और नीचे ठिकाने में नहीं।
अर्श कुरसी पर भी मैं रहता नहीं ॥७३॥

दिल में भक्तों के मैं रहता हूँ सदा।
जो मुझे चाहे तो माँग उनसे तू जा ॥७४॥

गुरु की महिमा का समझना है यह।
दीन हो चरनों में तू ज्यों ख़ाक[5] रह ॥७५॥

१—मेल। २—टुकड़े खाने वाले। ३—तरह। ४—ख़ुदा। ५—धूल।

एक कर हर[1] गुरु को क्या है मानना।
अपना आपा[2] उनके सन्मुख घालना[3] ॥७६॥
जिसके दिल से उड़ गये दुनियाँ के रंग।
ग़ैब[4] के नक़्श उसमें झलकें बेदरंग[5] ॥७७॥
जो नज़र अपने क़सूरों पर करे।
जल्द पूरा होवे रस्ता तै करे ॥७८॥
आपको जाने है पूरा जो अजान।
थक रहा रस्ते में हक़ के वह निदान ॥७९॥

महिमा अनहद शब्द और जुगत उसकी प्राप्ति की

भर्म की ठेंठी निकालो कान से।
तब लगाओ ध्यान अनहद तान[6] से ॥८०॥
सुर्त के कानों से फिर तू शब्द सुन।
शब्द कहो चाहे कहो अंतर बचन ॥८१॥
घट में जो उठती है रागों की सदा[7]।
जो कहूँ मैं तुझसे हाल उसका ज़रा ॥८२॥
जान मुरदों की उठें क़बरों से भाग।
ऐसा अन्तर का है बाजा और राग ॥८३॥
कान से चित दे सुनो आवाज़ को।
पर सुनाते हैं नहीं इस राज़[8] को ॥८४॥

१—मालिक। २—अस्तित्व। ३—मिटा देना। ४—गुप्त स्थानों के।
५—कौरन्। ६—राग, शब्द। ७—धुन। ८—भेद।

लाओ पाओं के तले[1] तू आस्माँ।
शब्द ऊँचे देस का सुन सूरमा[2] ॥८५॥
जो निदा[3] खेंचे है ऊँचे को तुझे।
जान वह धुन आई ऊँचे से तुझे ॥८६॥
सुन के जो आवाज़ जागे कामना[4]।
काल की आवाज़ है घर घालना[5] ॥८७॥
देख ले तू यों पैग़म्बर ने कहा।
आती है आवाज़ हक़ मुझको सदा ॥८८॥
मुहर[6] कानों पर तुम्हारे है लगी।
सुन नहीं सकते हो अनहद धुन कभी॥८९॥
सुनता हूँ आवाज़ हक़ घट में सदा।
दिल को मेरे करती है पाक[7] और सफ़ा ९०
काटते और खोदते रस्ता रहो।
मरते दम तक एक दम ग़ाफ़िल न हो।९१॥

॥ वज़न २ ॥

रूह है हुक्म भेद अंस ख़ुदा।
बेज़बाँ[8] करती है आवाज़ सदा ॥९२॥
हाय बंधन धरे तू देही का।
न सुने ज़िक्र पाक[9] मालिक का ॥९३॥

१—नीचे। २—बहादुर। ३—आवाज़। ४—संसार के पदार्थों की इच्छा। ५—बरबाद करने वाली। ६—डाट। ७—निर्मल। ८—बग़ैर ज़बान के। ९—चैतन्य।

यार तुझको पुकारता दिन रात ।
तू न सुनता है हाय उसकी बात ॥९४॥
सब जगह है आवाज़ उसकी पूर ।
खोल कानों को अपने धर के शऊर ।९५॥
कान का खोलना यही है सुनो ।
शब्द बाहर का सुनना बंद करो ॥९६॥
वह है आवाज़ हर वक्त जारी ।
घट में जन्म और मरन से है न्यारी ।९७॥
आदि और अंत उसका है बेहद ।
इस सबब से कहें उसे अनहद ॥९८॥
पहले ज़ाहिर हुआ शब्द भंडार ।
फिर हुआ पैदा उससे सब संसार ॥९९॥
शब्द करता न जो अपना इज़हार ।
कभी परघट न होता यह संसार ॥१००॥
सुनो वह शब्द और लो आनंद ।
भूल आपे को छोड़ दे दुख दंड ॥१०१॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥

बड़ा ज़ुल्म है मेरे यार यह ।
कि तू जाय सैर को बाग़ के ॥
तू कँवल से आप ही कम नहीं ।
हिये मैं उलट के चमन में आ ॥१०२॥

ख़ाली नाफ़ों[1] की तू तलाश में।
क्यों उठाए मेहनत रंज को॥
धर प्रेम सुंदर श्याम का।
ख़ुशबू उलट के ले घट में आ॥१०३॥
तेरे मन में जो नहीं बासना[2]।
तन संग भोग बिलास की॥
तब कौन तुझको खैंचता।
कि तू जग[3] की चोर सरा[4] में आ।१०४।
तेरी चाह दुख सुख रूप है।
तेरा मन ही काल और जाल है॥
तेरी आस जग को पुकारे है।
कि तू फेर[5] में तू और मैं के आ।१०५।
तेरी है किधर को नज़र लगी।
कि तू इस क़दर करे ग़ाफ़िली[6]॥
तेरी मौत सिर पर है आ खड़ी।
ज़रा आँख खोल कफ़न में आ।१०६॥
तेरे घट में गुरु दरबार से।
हर वक्त आती है यह निदा[7]॥
तज बासना जग जार[8] की।
ले प्रेम अंग को घर में आ॥१०७॥

१—ख़ाली नाफ़ों-सारहीन पदार्थों। २—इच्छा। ३—संसार। ४—चोर सरा—चोरों की सराय। ५—चक्कर। ६—लापरवाही। ७—आवाज़। ८—धोखेबाज़।

ग़म इंतज़ार[1] का सह रहा।
तेरे दर्शनों को तड़प रहा॥
ज़रा डग[2] उठा के करो दया।
छिन एक जान मेरे तन में आ॥१०८॥

॥ वज़न २ ॥

रात गुरू भेदी ने मुझसे यों कहा।
तुम से गुरु का भेद नहिं राखूँ छिपा॥१०९॥
काम भक्ती के करो तुम सहज से।
जो करो सख़्ती तो दुनियाँ सख़्त है॥११०॥
बिन प्रेम और भेद नहीं पतियाय[3] धुन।
याते कर अभ्यास भक्ती हे सजन[4]॥१११॥
आस्माँ से आती है हरदम आवाज़।
क्यों पड़ा दुनियाँ में नहिं सुनता उसे॥११२॥
कोई नहीं भेदी है सतगुरु धाम का।
बस यही कि घंटे की आवे सदा[5]॥११३॥

॥ वज़ान ९ ॥

जब देखा तेज मैंने जो मालिक के नाम का।
दिल और जान भेंट हुए गुरु के नाम का॥११४॥
प्यासों की प्यास बुझ गई धारा से नाम के।
ऐसा है आब[6] शीरीं[7] अमी रूप नाम का॥११५॥

१—जुदाई की तकलीफ़। २—क़दम। ३—विश्वास करती यानी प्राप्त होती।
४—प्रेमी। ५—आवाज़। ६—पानी। ७—मीठा।

नामी व नाम में है नहीं फ़रक़ देख ले।
छबि[1] यार की दिखाता है वह तेज नाम का॥
हिरदे में तुझको दीख पड़ेगा जमाल[2] यार[3]।
जो रगड़ा उस पै नित्त दिया जावे नाम का॥
मालिकका संगतुझको मिलायहसहीह[4] जान।
जो दिल में तेरे लाग रहा ध्यान नाम का॥
कर संग नाम का जो तू दीदार को चहे।
मालिक का मेल है जो हुआ मेल नाम का॥
मालिक के लोक में तेरा हो जायगा गुज़र[5]।
जो तू उड़ेगा ऊँचे को बल लेके नाम का॥
सुमिरन से नाम गुरु के तू ग़मग़ीं[6] न हो कभी।
मालिक का प्यार आवे जो हो प्यार नाम का॥

॥ प्रेम की महिमा ॥

सुरत मन में प्रेम गुरु जिसके बसा।
फूल से ज़्यादा है हर दम वह खिला।१२२।
प्रीति सतगुरु की तू हर दम धार यार।
औलियाओं का बना इस ही से कार[7]।१२३।
यह न जानो तुम कि हक़[8] मिलता नहीं।
वह है दाता उसको कुछ मुश्किल नहीं १२४।

१—शोभा। २—सुंदर रूप। ३—मालिक का। ४—ठीक। ५—पहुँच। ६—लापरवाह। ७—काम। ८—मालिक।

प्रेम कारन जिसने कीना ख़र्च माल[1]।
धन है वह जन उसको मिलिया प्रेमहाल[2]१२५
पहिले जिसने अपना घर दीना उजाड़।
पाई फिर गुरु प्रेम की दौलत अपार ॥१२६॥
जग के जीवों के लिए दुनिया का मुल्क।
भक्त जन के वास्ते मालिक का मुल्क ॥१२७॥
प्रेम चाहे छेद[3] देवे आस्माँ।
प्रेम से पिरथी रहे कंपायमाँ[4] ॥१२८॥
प्रेम डाले जोश से समुँदर को फाड़।
प्रेम चाहे रेत सम पीसे पहाड़ ॥१२९॥
प्रेम छिन में मुरदे को ज़िंदा करे।
प्रेम पल में शाह[5] को बंदा[6] करे ॥१३०॥
प्रेम सब कड़वाई को मीठा करे।
प्रेम छिन में लोहे को कंचन[7] करे ॥१३१॥
पाक करता है गा नापाकी को प्रेम।
दूर कर देता है सब दरदों को प्रेम ॥१३२॥
प्रेम से हो जाय काँटा गुल[8] गुलाब।
प्रेम से हो जाय सिरका ज्यों शराब ॥१३३॥

१—दौलत। २—तुरंत। ३—फाड़। ४—काँपती। ५—बादशाह। ६—सेवक। ७—सोना। ८—फूल।

प्रेम अगिनी अपने हिरदे बालिये।
फ़िकर भजन और बंदगी का जालिये[1] ॥१३४॥
प्रेमियों का मत है सब मत से जुदा।
प्रेमियों का इष्ट है मालिक सचा ॥१३५॥
कुफ़्र[2] उसका दीन है और दीन उसका नूरेजाँ[3]।
जो तू निरभय हो गया सारे जहाँ[4] में
हुई अमाँ[5] ॥१३६॥
इश्क़वहशीलाहैजिसघटमेंवहरौशनहो गया
एक प्रीतम रह गया और बाक़ी सब जल
भुन गया ॥१३७॥
प्रेम जब आया सभी को रद किया।
एक प्रीतम रहके बाक़ी बह[6] गया ॥१३८॥
वाह वाह हे प्रेम तू है निरमला।
ग़ैर को प्यारे सिवा दीना जला ॥१३९॥
रीत भक्ती की सुनो हे साधवा।
लोभ की मत कर अमीरों से तू चाह ॥१४०॥
जिसके मन में है भरी भोगों की चाह।
कस खुले मालिक का भेद और हो निबाह[7]।

१—दूर कीजिए। २—ख़ुदा से इन्कार। ३—नूरे जाँ—मालिक का प्रकाश।
४—संसार। ५—शांति। ६—हट। ७—गुज़ारा।

सौ तरंगें मन में तेरे हैं भरी।
नूर मालिक का नहीं झलके ज़री[1] ॥१४२॥
दुनिया को चाहे तू और दीदार[2] को।
यह है मुशकिल अनसमझ है यार तू ॥१४३॥
जो तेरी आँखों से परदा दें उठा।
होगा दुनिया से तू बेज़ार[3] और ख़फ़ा ॥१४४॥
धोखे उसके जब तुझे आवें नज़र।
भाग जावेगा तू उससे दूरतर[4] ॥१४५॥
खाना बे शुबहे[5] का तुझको है ज़रूर।
तो भजन तुझसे बनेगा बे क़सूर ॥१४६॥
जो तू खाना खागया हक़्क़ और हलाल[6]।
जीत लेगा मन को ऐ साहिब कमाल ॥१४७॥
दूर कर मन से जो है गुरु के सिवाय।
तब रहे प्रीतम तेरे मन में समाय ॥१४८॥
जब तलक मन में तेरे है मान यार।
हो नहीं सकता है मालिक तेरा यार ॥१४९॥
जब तेरे मन से हुआ अहंकार दूर।
जा मिले मालिक से और पावे सरूर[7] ॥१५०॥

१—ज़रा भी। २—मालिक का दर्शन। ३—नाराज़। ४—दूरतर—बहुत दूर। ५—यानी ईमानदारी का। ६—अपनी कमाई का। ७—आनंद।

अपने मालिक पै तू दे आपे को वार[1]।
जब नहीं तू तब रहा मालिक दयार ॥१५१॥
जो कि तन मन से हुआ अपने जुदा।
मिल गया बस उसको इसरारे[2] ख़ुदा ॥१५२॥
आँख कान और मुँह को अपने बंद कर।
भेद मालिक का तुझे आवे नज़र ॥१५३॥
चाह दुनिया की करे मन को सियाह[3]।
गुरु से गुरु को माँग मत कर और चाह १५४।
जिस क़दर तुझको है मालिक से पियार।
उससे ज़्यादा तुझसे वह करता है प्यार १५५।
पर तुझे उसकी परख होती नहीं।
मेहर की उसके ख़बर होती नहीं ॥१५६॥
बुल्हवस[4] को दर्दे इश्क़ होता नहीं।
सोज़[5] परवाने[6] का मक्खी को नहीं ॥१५७॥
इक जनम में दीलते दीदार पाय।
हर किसी को वस्ल[7] हक़ मिलता नहीं ।१५८।
जो तू मूरत याकि अगनी पूजता।
आओ आओ जैसे तैसे भाव से ॥१५९॥

१—दे वार—निछावर कर दे। २—राज़, भेद। ३—काला। ४—संसारी इच्छाओं वाले। ५—दर्द। ६—पतंगे। ७—मेल।

सौ दफ़े भूल और चूक होगी मुआफ़।
मत निरास होना तू इस दरबार से ॥१६०॥

॥ ग़ज़ल २ ॥

प्यारे ग़फ़लत छोड़ो सर बसर[1],
गुरू बचन सुनो तुम होश धर।
मन की तरंगें रोक कर,
सतसंग में तुम बैठो जाय ॥ १ ॥

गुरू का चरन पकड़ जकड़,
गुरू का सरूप ध्यान धर।
इस मन की खोवो सब अकड़,
नैनन में तुम बसो आय ॥ २ ॥

यह दुनिया ख़्वाब ख़्याल[2] है,
जो आया यहाँ सो चाल है।
क्या पूछो यहाँ क्या हाल है,
यह काल कराला[3] सब को खाय ॥३॥

क्या भूला तू धन माल देख,
माया का सब जाल पेख[4]।
काल करम की मिटे रेख,
जो सतगुरु की सरन आय ॥ ४ ॥

१—सर बसर—क़तई, पूरी तरह। २—ख़्वाब ख़्याल—स्वप्न की वस्तु।
३—भयंकर। ४—समझ।

सतगुरु से कर आन प्यार,
उनसे ले भेद सार।
सुरत शब्द मारग अपार,
सुरत मन धुन से लगाय॥ ५॥
देख अन्तर जोती[1] जमाल,
लख गगना में सूर लाल।
सुन्न के परे महाकाल,
सतगुरु संग चलो धाय॥ ६॥
मुरली धुन सुन रसाल[2],
ऊँचे पर धरो ख़्याल।
सत्तपुरुष निरखो जलाल[3],
फिर अलख अगम परस जाय॥ ७॥
धाम अनामी धुर अधर,
निरखा जाय अति प्रेम कर।
राधास्वामी चरनन सीस धर,
अस्तुत उनकी रही गाय॥ ८॥

॥ शब्द ७ रेख़्ता ॥

करो सतसंग सतगुरु का,
भेद घर का वहाँ पाओ।
धार परतीत चरनन में,
दीन दिल सरन में धाओ॥ १॥

१—प्रकाश। २—रसीली, मनोहर। ३—शान।

समझ कर जगत में बरतो,
फँसो नहिं जाल में उसके।
रहो हुशियार इंद्रियन से,
भोग सँग धोखा मत खाओ॥ २॥

शब्द का भेद ले गुरु से,
करो अभ्यास तुम निस दिन।
गुनावन जगत की तज कर,
चित्त से ध्यान धुन लाओ॥ ३॥

जुगत[1] से रोक मन घट में,
ध्यान गुरु रूप का धारो।
सुमिर राधास्वामी नाम हरदम,
गुरू गुन नित्त तुम गावो॥ ४॥

सुरत मन तान[2] गगना में,
बजे जहाँ संख और घंटा।
सुनो फिर शब्द ओंकारा,
सुन्न चढ़ मानसर न्हावो॥ ५॥

भँवर गढ़ जा सुनी बानी,
सत्तपुर जाय हुलसानी[3]।
अलख और अगम के पारा,
अनामी धाम चढ़ जावो॥ ६॥

१—तरकीब। २—खैंच कर लगाओ। ३—प्रसन्न हुई।

मिली राधास्वामी से प्यारी,
सरावत[1] भाग निज अपना।
भटक में बहु जनम बीते,
पड़ा मेरा ऐसा अब दावो[2]॥ ७॥

॥ मसनवी ॥

मैं सतगुरु पे डालूँगी तन मन को वार।
मैं चरनों में क़ुरबान हूँ बार बार॥ १॥
करूँ कैसे उनकी दया का बयान।
दिया मुझको प्रेम और परतीत दान॥ २॥
खुली आँख जब मुझको आया नज़र।
कि दुनियाँ है धोखे की जा[3] सर बसर[4]॥ ३॥
ज़मीन और ज़न[5] और ज़र[6] की है चाह।
सभी जीव रहते हैं ख़्वार[7] और तबाह[8]॥४॥
हुए मुबतिला[9] दाम[10] हिरसो हवस[11]।
न पावें कहीं चैन वह एक नफ़स[12]॥ ५॥
न मालिक का ख़ौफ़ और न मरने का डर।
न खोजें कभी अपने घर की ख़बर॥ ६॥
करें फ़िकर मेहनत से दुनियाँ के काम।
रहें इस्त्री और धन के ग़ुलाम॥ ७॥

१—प्रशंसा करती है। २—मौक़ा। ३—जगह। ४—बिलकुल। ५—स्त्री। ६—धन। ७—परेशान। ८—ज़लील। ९—फँसे। १०—जाल। ११—दुनिया की ख़्वाहिशों के। १२—घड़ी।

जो दुनियाँ के नामावरी के हैं काम।
दिलो जाँ से उसमें पचें हैं मुदाम[1] ॥ ८ ॥
भरा होगा भोगों की ख़्वाहिश से मन।
उसी में लगाते हैं धन और तन ॥ ९ ॥
न शरमो हया[2] उनको माँ बाप की।
न कुछ फ़िक्र है पुन्न और पाप की ॥१०॥
जो मन इन्द्री पावें लज़्ज़ात[3] को।
ग़नीमत समझते हैं इस बात को ॥११॥
जो दुनियाँ के सामाँ[4] मुयस्सर[5] हुए।
हुए ख़ुश दिल और मान में सब मुए[6] ॥१२॥
नहीं जीव का अपने उनको ख़याल।
कि मरने पै क्या होयगा उसका हाल ॥१३॥
कहाँ से वह आता है जाता कहाँ।
कहाँ कौन है मालिके जिस्मो जाँ[7] ॥१४॥
कोई जो कहाते हैं परमारथी।
जो देखा तो वह हैं निपट[8] स्वारथी ॥१५॥
करें ज़ाहिरी पाठ पूजा मुदाम।
सुनें भागवत और गीता तमाम ॥१६॥
मगर दिल पै उनके न होवे असर।
न मरने का ख़ौफ़ और न नरकों का डर ॥१७॥

१—हमेशा। २—शर्म। ३—दुनिया के भोगों के मज़े। ४—पदार्थ। ५—प्राप्त।
६—मर गए। ७—जिस्मो जाँ—शरीर व जान का। ८—बिलकुल।

करें तीरथ और यात्रा शौक़ से।
रखें बरत और दान दें जौक़[1] से ॥१८॥
मगर होवे दुनियाँ का मतलब ज़रूर।
रहे है यही आस हिरदे में पूर ॥१९॥
जो दुनियाँ की कुछ आस होवे नहीं।
तो इस काम में पैसा ख़रचें नहीं ॥२०॥
जो मालिक का भेद इनसे कहवे कोई।
उड़ावें हँसी और न मानें कभी ॥२१॥
भरा हैगा मन उनका शुबहात[2] से।
न बाचें जहालत[3] की आफ़ात से ॥२२॥
वह सन्तों के कहने को मानें नहीं।
सफ़ा बुद्धि से बात तोलें नहीं ॥२३॥
कहूँ क्या कि दिल में हैं वे नास्तिक।
मगर धन के लेने को हैं आस्तिक ॥२४॥
होवे ऐसे जीवों का कैसे निबाह[4]।
जहन्नुम[5] की अगिनी में पावेंगे दाह ॥२५॥
वहाँ हाथ मल मल के पछतायेंगे।
किये अपने कामों का फल पायेंगे ॥२६॥
मदद कोई उनकी करेगा नहीं।
कोई इनका रोना सुनेगा नहीं ॥२७॥

१—शौक़। २—संदेहों। ३—मूर्खता। ४—गुज़र। ५—नरक।

पकड़ इनको जमदूत देवेंगे मार ।
सरप इनकी गरदन में देवेंगे डार ॥२८॥
अगिन खंभ से बाँध देंगे इन्हें ।
अगिन कुंड में ग़ोता देंगे इन्हें ॥२९॥
निहायत दुखी होके चिल्लायेंगे ।
यह गफ़लत का फल अपना यों पायेंगे ॥३०॥
निरख करके जीवों का अस हाल जार[1] ।
सन्त आये दुनिया में औतार धार ॥३१॥
दया कर सुनावें उन्हें घर का भेद ।
मेहर से करें दूर करमों का खेद[2] ॥३२॥
राह घर के जाने की देवें लखा ।
सुरत शब्द मारग का देवें पता ॥३३॥
हर एक घट में आवाज़ होती मुदाम[3] ।
वही शब्द की धुन है और वोही नाम ॥३४॥
सुने जो कोई धुन को चित धर के प्यार ।
वही जीव घर जावे तिरलोकी पार ॥३५॥
सुनो भेद मंज़िल का अब राह के ।
वह हैं सात बालाय[4] छः चक्र के ॥३६॥
यह हैं नाम छै चक्करों के सुनो ।
गुदा इन्द्री और नाभी गिनो ॥३७॥

१—बुरा । २—कष्ट । ३—हमेशा । ४—ऊपर ।

चकर चौथा हिरदय गुलू[1] पाँचवाँ ।
छठा दोनों आँखों के है दरमियाँ[2] ॥३८॥
इसी जा पै है सुर्त रूह का क़याम[3] ।
परे इसके सन्तों के सातो मुक़ाम ॥३९॥
सहसदल है पहला गगन दूसरा ।
सुन्न पर महासुन का मैदाँ बड़ा ॥४०॥
गुफा लोक चौथा है सोहंग नाम ।
परे इसके सतलोक आली[4] मुक़ाम ॥४१॥
अलख लोक की क्या कहूँ दस्तगाह ।
अगम लोक सन्तों का है तख़्तगाह ॥४२॥
परे इसके है कुल्ल मालिक का धाम ।
अपार और अनन्त राधास्वामी है नाम ४३।
अकह और अगाध और यही है अनाद ।
यहीं से उठी मौज और आद नाद[5] ।४४॥
नहीं कोई जाने है यह भेद सार ।
रहे थक के सब कोइ गगना के वार ॥४५॥
करम और धरम में रहे सब अटक ।
नहीं जिव के कल्यान की कुछ खटक ॥४६॥
रहे पूजते देवी देवा को झाड़ ।
न मालिक का खोज और न दिलमें पियार ४७

१—कंठ । २—बीच । ३—टिकाव, स्थिति । ४—सब से ऊँचा । ५—शब्द ।

रहे पिछली टेकों में भूले मुदाम ।
नहीं जानें महिमा गुरू और नाम ॥४८॥
अगर चाहो तुम अपना सच्चा उधार ।
तो सतगुरु को जल्दी से लो खोज यार ॥४९॥
बचन संत सतगुरु के चित दे सुनो ।
प्रीति और परतीत हिरदे धरो ॥५०॥
पियो चरन अमृत को तुम प्रीत से ।
भरम काटो परशादी के सीत से ॥५१॥
करो उनका सतसंग तुम बार बार ।
लेवो शब्द मारग का उपदेश सार ॥५२॥
करो मन से मालिक का सुमिरन मुदाम ।
परम पुर्ष राधास्वामी है उनका नाम ॥५३॥
गुरु रूप का ध्यान हिरदे में लाय ।
सुरत और मन शब्द धुन से लगाय ॥५४॥
यह अभ्यास नित घट में करना सही ।
कटें मन के औगुन इसी से सभी ॥५५॥
कोई दिन में दरशन गुरू के मिलें ।
सुनें शब्द की धुन सुरत मन खिलें ॥५६॥
इसी तरह नित घट में आनन्द पाय ।
बढ़त जाय आनन्द मन शान्ति लाय ॥५७॥

कोई दिन में मुक्ती का पावे सरूर[1]।
तू हो जाय तन मन से न्यारा ज़रूर ॥५८॥
प्रीति और परतीत दिन दिन बढ़े।
तेरे मन में गुरू प्रेम का रँग चढ़े ॥५९॥
उमँग कर तू सतगुरू की सेवा करे।
प्रेम अंग ले नित्त आरत[2] करे ॥६०॥
मिले प्रेम की तुझको दौलत अपार।
सरावेगा भागों को तब अपने यार ॥६१॥
किया अब यह उपदेश ख़त्म राग[3]।
जो माने उसी का जगे पूरा भाग ॥६२॥
करोगे जो हित चित से नित तुम यह कार[4]।
करें राधास्वामी तुम्हारा उधार ॥६३॥
जपो प्रीत से नित्त राधास्वामी नाम।
पाओ मेहर से एक दिन आदि धाम ॥६४॥

१—आनन्द। २—देखिए पृष्ठ ३६ नोट नं० २। ३—गीत। ४—कारवाई।

पुस्तकों का सूचीपत्र

ये पुस्तकें मैनेजर पब्लीकेशन्स, दयालबाग़ (आगरा) से मिल सकती हैं

	नाम		मूल्य
	परम गुरु स्वामीजी महाराज रचित		
१	सारबचन (पद्य)	हिन्दी	७.००
२	सारबचन (गद्य)	,,	३.००
	परम गुरु हुज़ूर महाराज रचित		
३	राधास्वामी मत प्रकाश	अंगरेज़ी	१.५०
४	पिलग्रिम्स पाथ (हुज़ूर महाराज के पत्र)	,,	१.५०
५	राधास्वामी मत संदेश	हिन्दी	१.००
६	राधास्वामी मत उपदेश	,,	१.००
७	निज उपदेश	,,	१.००
८	प्रेम उपदेश	,,	१.००
९	सार उपदेश	,,	१.२५
१०	प्रश्नोत्तर	,,	१.००
११	जुगत प्रकाश	,,	२.००
१२	प्रेमबानी भाग १	,,	५.००
१३	,, भाग २	,,	४.२५
१४	,, भाग ३	हिन्दी	४.२५
१५	,, भाग ४	,,	२.५०
१६	प्रेमपत्र भाग १	,,	४.००
१७	,, भाग २	,,	४.००
	परम गुरु सरकार साहब रचित		
१८	प्रेम-समाचार	,,	१.२५
	राधास्वामी सतसंग सभा के स्वत्वाधिकार में अनुवादित पुस्तकें		
१९	राधास्वामी मत प्रकाश	बंगला	१.२५
२०	अमृतबचन	,,	३.००
	(परम गुरु महाराज साहब रचित पुस्तक 'डिस्कोर्सेज़ आन राधास्वामी फ़ेथ' का अनुवाद)		
	परम गुरु स्वामीजी महाराज रचित		
२१	सारबचन	अंगरेज़ी	३.२५

	नाम		मूल्य
	परम गुरु हुज़ूर महाराज रचित		
२२	प्रेम पत्र भाग १	अंगरेज़ी	६.००
२३	,, भाग २	,,	६.००
२४	,, भाग ३	,,	६.००
२५	,, भाग ४	,,	६.००
२६	,, भाग ५	,,	६.००
२७	,, भाग ६	,,	३.००
२८	राधास्वामी मत उपदेश	,,	१.००
२९	राधास्वामी मत संदेश	,,	१.००
	हुज़ूर साहबजी महाराज रचित		
३०	यथार्थ प्रकाश भाग १ (विशेष संस्करण)	,,	६.००
३१	,, (साधारण संस्करण)	,,	३.५०
३२	,, भाग २	,,	५.५०
३३	,, भाग ३ (प्रथम पुस्तक)	,,	५.५०
३४	,, (द्वितीय पुस्तक)	,,	४.००
३५	जिज्ञासा	,,	१.००
३६	राधास्वामी मत दर्शन	,,	१.००
३७	प्रेम संदेश	,,	१.००
३८	डिस्कोर्सेज भाग १ (सतसंग के उपदेश)	,,	४.००
३९	,, भाग २	,,	४.००
४०	,, भाग ३	,,	३.५०
४१	जतन प्रकाश	,,	१.००
४२	सिलैक्शन्स फ्राम प्रेम सन्देश	,,	१.००
	राधास्वामी सतसंग सभा के स्वत्वाधिकार में सम्पादित या लिखित पुस्तकें		
४३	फ़ोर लैटर्स (हुज़ूर सरकार साहब)	,,	१.००
४४	सिलवरी स्पीचेज़	,,	०.२५
४५	शब्द संग्रह भाग १	हिन्दी	३.५०
४६	,, ,, भाग २	,,	३.५०
४७	संत बानी संग्रह भाग १	,,	१.००
४८	संत बानी संग्रह भाग २	हिन्दी	१.२५
४९	रत्नावली	,,	१.००
५०	दयालबाग़ पैम्फ्लेट (छोटा)	अंगरेज़ी	०.५०